

| | | | |
|-------|-------|-------------|-----------|
| 05186 | natah | GEN-12: 8 | pi tched |
| 05186 | natah | GEN-26: 25 | pi tched |
| 05186 | natah | EX0-33: 7 | pi tched |
| 05186 | natah | JUD-4: 11 | pi tched |
| 05186 | natah | 2SA-6: 17 | pi tched |
| 05186 | natah | 1CH-15: 1 | pi tched |
| 05186 | natah | 1CH-16: 1 | pi tched |
| 05186 | natah | 2CH-1: 4 | pi tched |
| 05186 | natah | JOB-15: 29 | prol ong |
| 05186 | natah | PSA-27: 9 | put |
| 05186 | natah | GEN-39: 21 | shewed |
| 05186 | natah | GEN-33: 19 | spread |
| 05186 | natah | GEN-35: 21 | spread |
| 05186 | natah | NUM-24: 6 | spread |
| 05186 | natah | 2SA-16: 22 | spread |
| 05186 | natah | 2SA-21: 10 | spread |
| 05186 | natah | JER-43: 10 | spread |
| 05186 | natah | JOB-9: 8 | spreadeth |
| 05186 | natah | EX0-7: 5 | stretch |
| 05186 | natah | EX0-7: 19 | stretch |
| 05186 | natah | EX0-8: 5 | stretch |
| 05186 | natah | EX0-8: 16 | stretch |
| 05186 | natah | EX0-9: 22 | stretch |
| 05186 | natah | EX0-10: 12 | stretch |
| 05186 | natah | EX0-10: 21 | stretch |
| 05186 | natah | EX0-14: 16 | stretch |
| 05186 | natah | EX0-14: 26 | stretch |
| 05186 | natah | JOS-8: 18 | stretch |
| 05186 | natah | 2KI -21: 13 | stretch |
| 05186 | natah | ISA-31: 3 | stretch |
| 05186 | natah | ISA-34: 11 | stretch |
| 05186 | natah | ISA-54: 2 | stretch |
| 05186 | natah | JER-6: 12 | stretch |

| | | | |
|-------|-------|-------------|-----------|
| 05186 | natah | JER-10: 20 | stretch |
| 05186 | natah | JER-15: 6 | stretch |
| 05186 | natah | JER-51: 25 | stretch |
| 05186 | natah | EZE-6: 14 | stretch |
| 05186 | natah | EZE-14: 9 | stretch |
| 05186 | natah | EZE-14: 13 | stretch |
| 05186 | natah | EZE-25: 7 | stretch |
| 05186 | natah | EZE-25: 13 | stretch |
| 05186 | natah | EZE-25: 16 | stretch |
| 05186 | natah | EZE-30: 25 | stretch |
| 05186 | natah | EZE-35: 3 | stretch |
| 05186 | natah | ZEP-1: 4 | stretch |
| 05186 | natah | ZEP-2: 13 | stretch |
| 05186 | natah | EX0-6: 6 | stretched |
| 05186 | natah | EX0-8: 6 | stretched |
| 05186 | natah | EX0-8: 17 | stretched |
| 05186 | natah | EX0-9: 23 | stretched |
| 05186 | natah | EX0-10: 13 | stretched |
| 05186 | natah | EX0-10: 22 | stretched |
| 05186 | natah | EX0-14: 21 | stretched |
| 05186 | natah | EX0-14: 27 | stretched |
| 05186 | natah | DEU-4: 34 | stretched |
| 05186 | natah | DEU-5: 15 | stretched |
| 05186 | natah | DEU-7: 19 | stretched |
| 05186 | natah | DEU-9: 29 | stretched |
| 05186 | natah | DEU-11: 2 | stretched |
| 05186 | natah | JOS-8: 18 | stretched |
| 05186 | natah | JOS-8: 19 | stretched |
| 05186 | natah | JOS-8: 26 | stretched |
| 05186 | natah | 1KI -8: 42 | stretched |
| 05186 | natah | 2KI -17: 36 | stretched |
| 05186 | natah | 1CH-21: 16 | stretched |
| 05186 | natah | 2CH-6: 32 | stretched |

05186 natah JOB-38: 5 stretched
05186 natah PSA-136: 12 stretched
05186 natah PRO-1: 24 stretched
05186 natah ISA-3: 16 stretched
05186 natah ISA-5: 25 stretched
05186 natah ISA-5: 25 stretched
05186 natah ISA-9: 12 stretched
05186 natah ISA-9: 17 stretched
05186 natah ISA-9: 21 stretched
05186 natah ISA-10: 4 stretched
05186 natah ISA-14: 26 stretched
05186 natah ISA-14: 27 stretched
05186 natah ISA-23: 11 stretched
05186 natah ISA-42: 5 stretched
05186 natah ISA-45: 12 stretched
05186 natah ISA-51: 13 stretched
05186 natah JER-6: 4 stretched
05186 natah JER-10: 12 stretched
05186 natah JER-32: 17 stretched
05186 natah JER-32: 21 stretched
05186 natah JER-51: 15 stretched
05186 natah LAM-2: 8 stretched
05186 natah EZE-1: 22 stretched
05186 natah EZE-16: 27 stretched
05186 natah EZE-20: 33 stretched
05186 natah EZE-20: 34 stretched
05186 natah ZEC-1: 16 stretched
05186 natah EXO-15: 12 stretchedst
05186 natah PSA-104: 2 stretchest
05186 natah JOB-15: 25 stretcheth
05186 natah JOB-26: 7 stretcheth
05186 natah ISA-40: 22 stretcheth
05186 natah ISA-44: 13 stretcheth

05186 natah ISA-44: 24 stretcheth
05186 natah ZEC-12: 1 stretcheth
05186 natah NUM-20: 17 turn
05186 natah NUM-21: 22 turn
05186 natah NUM-22: 23 turn
05186 natah NUM-22: 26 turn
05186 natah 1SA-14: 7 turn
05186 natah 2SA-2: 21 turn
05186 natah 1KI -11: 2 turn
05186 natah JOB-24: 4 turn
05186 natah PRO-4: 27 turn
05186 natah GEN-38: 1 turned
05186 natah GEN-38: 16 turned
05186 natah NUM-20: 21 turned
05186 natah NUM-22: 33 turned
05186 natah NUM-22: 33 turned
05186 natah 2SA-2: 19 turned
05186 natah 1KI -2: 28 turned
05186 natah 1KI -2: 28 turned
05186 natah 1KI -11: 3 turned
05186 natah 1KI -11: 4 turned
05186 natah 1KI -11: 9 turned
05186 natah JOB-31: 7 turned
05186 natah ISA-44: 20 turned
05186 natah JER-5: 25 turned
05186 natah PRO-21: 1 turneth
05186 natah EXO-23: 2 wrest
05186 natah EXO-23: 6 wrest
05186 natah DEU-16: 19 wrest
05186 natah PRO-7: 21 yi el d
05186 natah PSA-73: 2 gone
05186 natah JOS-24: 23 i ncl i ne
05186 natah 1KI -8: 58 i ncl i ne

| | | | |
|-------|-------|-------------|--------------|
| 05186 | natah | PSA-17: 6 | i ncl i ne |
| 05186 | natah | PSA-45: 10 | i ncl i ne |
| 05186 | natah | PSA-49: 4 | i ncl i ne |
| 05186 | natah | PSA-71: 2 | i ncl i ne |
| 05186 | natah | PSA-78: 1 | i ncl i ne |
| 05186 | natah | PSA-88: 2 | i ncl i ne |
| 05186 | natah | PSA-102: 2 | i ncl i ne |
| 05186 | natah | PSA-119: 36 | i ncl i ne |
| 05186 | natah | PSA-141: 4 | i ncl i ne |
| 05186 | natah | PRO-4: 20 | i ncl i ne |
| 05186 | natah | ISA-37: 17 | i ncl i ne |
| 05186 | natah | ISA-55: 3 | i ncl i ne |
| 05186 | natah | DAN-9: 18 | i ncl i ne |
| 05186 | natah | JUD-9: 3 | i ncl i ned |
| 05186 | natah | PSA-40: 1 | i ncl i ned |
| 05186 | natah | PSA-116: 2 | i ncl i ned |
| 05186 | natah | PSA-119: 11 | i ncl i ned |
| 05186 | natah | PRO-5: 13 | i ncl i ned |
| 05186 | natah | JER-7: 24 | i ncl i ned |
| 05186 | natah | JER-7: 26 | i ncl i ned |
| 05186 | natah | JER-11: 8 | i ncl i ned |
| 05186 | natah | JER-17: 23 | i ncl i ned |
| 05186 | natah | JER-25: 4 | i ncl i ned |
| 05186 | natah | JER-34: 14 | i ncl i ned |
| 05186 | natah | JER-35: 15 | i ncl i ned |
| 05186 | natah | JER-44: 5 | i ncl i ned |
| 05186 | natah | PSA-21: 11 | i ntended |
| 05186 | natah | HOS-11: 4 | l ai d |
| 05186 | natah | AMO-2: 8 | l ay |
| 05186 | natah | 1CH-21: 10 | offer |
| 05186 | natah | DEU-26: 8 | outstretched |
| 05186 | natah | JER-21: 5 | outstretched |
| 05186 | natah | JER-27: 5 | outstretched |

| | | | |
|-------|-------|-------------|------------|
| 05186 | natah | PRO-18: 5 | overthrow |
| 05186 | natah | DEU-24: 17 | pervert |
| 05186 | natah | PRO-17: 23 | pervert |
| 05186 | natah | 1SA-8: 3 | perverted |
| 05186 | natah | DEU-27: 19 | perverteth |
| 05186 | natah | PRO-2: 2 | appl y |
| 05186 | natah | NUM-22: 23 | asi de |
| 05186 | natah | 1SA-8: 3 | asi de |
| 05186 | natah | 2SA-2: 21 | asi de |
| 05186 | natah | 2SA-3: 27 | asi de |
| 05186 | natah | 2SA-6: 10 | asi de |
| 05186 | natah | 1CH-13: 13 | asi de |
| 05186 | natah | PSA-125: 5 | asi de |
| 05186 | natah | I SA-10: 2 | asi de |
| 05186 | natah | I SA-29: 21 | asi de |
| 05186 | natah | I SA-30: 11 | asi de |
| 05186 | natah | I SA-44: 20 | asi de |
| 05186 | natah | JER-14: 8 | asi de |
| 05186 | natah | LAM-3: 35 | asi de |
| 05186 | natah | AMO-2: 7 | asi de |
| 05186 | natah | AMO-5: 12 | asi de |
| 05186 | natah | MAL-3: 5 | asi de |
| 05186 | natah | PSA-27: 9 | away |
| 05186 | natah | PSA-144: 5 | bow |
| 05186 | natah | PRO-5: 1 | bow |
| 05186 | natah | GEN-49: 15 | bowed |
| 05186 | natah | JUD-16: 30 | bowed |
| 05186 | natah | 2SA-19: 14 | bowed |
| 05186 | natah | 2SA-22: 10 | bowed |
| 05186 | natah | PSA-18: 9 | bowed |
| 05186 | natah | PSA-62: 3 | bowi ng |
| 05186 | natah | 2SA-6: 10 | carri ed |
| 05186 | natah | 1CH-13: 13 | carri ed |

05186 natah EX0-23: 2 decl i ne
05186 natah PSA-119: 15 decl i ne
05186 natah PRO-4: 5 decl i ne
05186 natah JOB-23: 11 decl i ned
05186 natah PSA-44: 18 decl i ned
05186 natah PSA-119: 51 decl i ned
05186 natah PSA-102: 11 decl i neth
05186 natah PSA-109: 23 decl i neth
05186 natah JOB-36: 18 del i ver
05186 natah GEN-24: 14 down
05186 natah NUM-21: 15 down
05186 natah 2KI -19: 16 down
05186 natah 2KI -20: 10 down
05186 natah PSA-17: 11 down
05186 natah PSA-31: 2 down
05186 natah PSA-86: 1 down
05186 natah PRO-22: 17 down
05186 natah ISA-66: 12 extend
05186 natah EZR-7: 28 extended
05186 natah EZR-9: 9 extended

~~~~~

~~~~~

05186 ISA 009 012 The Syrians <00758 +>Aram > before <06924 +qedem > , and the Philistines <06430 +P@lishtiy > behind <00268 +>achowr > ; and they shall devour <00398 +>akal > Israel <03478 +Yisra>el > with open <06605 +pathach > mouth <06310 +peh > . For all <03605 +kol > this <02063 +z>th > his anger <00639 +>aph > is not turned <07725 +shuwb > away , but his hand <03027 +yad > [is] stretched <{05186} +natah > out still <05750 +<owd > .

05186 NUM 022 023 And the ass <00860 +>athown > saw <07200 +ra>ah > the angel <04397 +mal>ak > of the LORD <03068 +Y@hovah > standing <05324 +natsab > in the way <01870 +derek > , and his sword <02719 +chereb > drawn <08025 +shalaph > in his hand <03027 +yad > : and the ass <00860 +>athown > turned <05186 +natah > aside <05186 +natah > out of the way <01870 +derek > , and went <03212 +yalak > into the field <07704 +sadeh > : and Balaam <01109 +Bil<am > smote <05221 +nakah > the ass <00860 +>athown > , to turn <{05186} +natah > her into the way <01870 +derek > .

05186 NUM 022 023 And the ass <00860 +>athown > saw <07200 +ra>ah > the angel <04397 +mal>ak > of the LORD <03068 +Y@hovah > standing <05324 +natsab > in the way <01870 +derek > , and his sword <02719 +chereb > drawn <08025 +shalaph > in his hand <03027 +yad > : and the ass <00860 +>athown > turned <05186 +natah > aside <{05186} +natah > out of the way <01870 +derek > , and went <03212 +yalak > into the field <07704 +sadeh > : and Balaam <01109 +Bil<am > smote <05221 +nakah > the ass <00860 +>athown > , to turn <05186 +natah > her into the way <01870 +derek > .

05186 NUM 022 023 And the ass <00860 +>athown > saw <07200 +ra>ah > the angel <04397 +mal>ak > of the LORD <03068 +Y@hovah > standing <05324 +natsab > in the way <01870 +derek > , and his sword <02719 +chereb > drawn <08025 +shalaph > in his hand <03027 +yad > : and the ass <00860 +>athown > turned <{05186} +natah > aside <05186 +natah > out of the way <01870 +derek > , and went <03212 +yalak > into the field <07704 +sadeh > : and Balaam <01109 +Bil<am > smote <05221 +nakah > the ass <00860 +>athown > , to turn <05186 +natah > her into the way <01870 +derek > .

05186 NUM 022 026 And the angel <04397 +mal>ak > of the LORD <03068 +Y@hovah > went <05674 +<abar > further <03254 +yacaph > , and stood <05975 +<amad > in a narrow <06862 +tsar > place <04725 +maqowm > , where <00834 +>aher > [was] no <00369 +>ayin > way <01870 +derek > to turn <{05186} +natah > either to the right <03225 +yami yn > hand <03325 +Yitshariy > or to the left <08040 +s@mo>wl > .

05186 NUM 022 033 And the ass <00860 +>athown > saw <07200 +ra>ah > me , and turned <05186 +natah > from me these <02088 +zeh > three <07969 +shalowsh > times : unless <00194 +>uwl ay > she had turned <{05186} +natah > from me , surely <03588 +kiy > now <06258 +<attah > also <01571 +gam > I had slain <02026 +harag > thee , and saved <02421 +chayah > her alive <02421 +chayah > .

05186 NUM 022 033 And the ass <00860 +>athown > saw <07200 +ra>ah > me , and turned <{05186} +natah > from me these <02088 +zeh > three <07969 +shalowsh > times : unless <00194 +>uwl ay > she had turned <05186 +natah > from me , surely <03588 +kiy > now <06258 +<attah > also <01571 +gam > I had slain <02026 +harag > thee , and saved <02421 +chayah > her alive <02421 +chayah > .

05186 NUM 024 006 As the valleys <05158 +nachal > are they spread <{05186} +natah > forth , as gardens <01593 +gannah > by the river s <05104 +nahar > side , as the trees of lign aloes <00174 +>ahaliym > which the LORD <03068 +Y@hovah > hath planted <05193 +nata< > , [and] as cedar <00730 +>erez > trees beside <05921 +<al > the waters <04325 +mayim > .

05186 DEU 004 034 Or <00176 +>ow > hath God <00430 +>elohiym > assayed <05254 +nacah > to go <00935 +bow> > [and] take <03947 +laqach > him a nation <01471 +gowy > from the midst <07130 +qereb > of [another] nation <01471 +gowy > , by temptations <04531 +maccah > , by signs <00226 +>owth > , and by wonders <04159 +mowpheth > , and by war <04421 +milchamah > , and by a mighty <02389 +chazaq > hand <03027 +yad > , and by a stretched <{05186} +natah > out arm <02220 +z@rowa< > , and by great <01419 +gadowl > terrors <04172 +mowra> > , according to all <03605 +kol > that the LORD <03068 +Y@hovah > your God <00430 +>elohiym > did <06213 +<asah > for you in Egypt <04714 +Mitsrayim > before your eyes <05869 +<ayin > ?

05186 DEU 005 015 And remember <02142 +zakar > that thou wast <01961 +hayah > a servant <05650 +<ebed > in the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mitsrayim > , and [that] the LORD <03068 +Y@hovah > thy God <00430 +>elohiym > brought <03318 +yatsa> > thee out thence <08033 +sham > through a mighty <02389 +chazaq > hand <03027 +yad > and by a stretched <{05186} +natah > out arm <02220 +z@rowa< > : therefore the LORD <03068 +Y@hovah > thy God <00430 +>elohiym > commanded <06680 +tsavah > thee to keep <06213 +<asah > the sabbath <07676 +shabbath > day <03117 +yowm > .

05186 DEU 007 019 The great <01419 +gadowl > temptations <04531 +maccah > which <00834 +>aher > thine eyes <05869 +<ayin > saw <07200 +ra>ah > , and the signs <00226 +>owth > , and the wonders <04159 +mowpheth > , and the mighty <02389 +chazaq > hand <03027 +yad > , and the stretched <{05186} +natah > out arm <02220 +z@rowa< > , whereby <00834 +>aher > the LORD <03068 +Y@hovah > thy God <00430 +>elohiym > brought <03318 +yatsa> > thee out : so <03651 +ken > shall the LORD <03068 +Y@hovah > thy God <00430 +>elohiym > do <06213 +<asah > unto all <03605 +kol > the people <05971 +<am > of whom thou art afraid <03372 +yare> > .

05186 DEU 009 029 Yet they [are] thy people <05971 +<am > and thine inheritance <05159 +nachalah > , which <00834 +>aher > thou broughtest <03318 +yatsa> > out by thy mighty <01419 +gadowl > power <03581 +koach > and by thy stretched <{05186} +natah > out arm <02220 +z@rowa< > .

05186 DEU 011 002 And know <03045 +yada< > ye this day <03117 +yowm > : for [I speak] not with your children <01121 +ben > which <00834 +>aher > have not known <03045 +yada< > , and which <00834 +>aher > have not seen <07200 +ra>ah > the chastisement <04148 +muwcar > of the LORD <03068 +Y@hovah > your God <00430 +>elohiym > , his greatness <01433 +godel > , his mighty <02389 +chazaq > hand <03027 +yad > , and his stretched <{05186} +natah > out arm <02220 +z@rowa< > ,

05186 DEU 016 019 Thou shalt not wrest <{05186} +natah > judgment <04941 +mishpat > ; thou shalt not respect <06437 +panah > persons <06440 +paniym > , neither <03808 +lo> > take <03947 +laqach > a gift <07810 +shachad > : for a gift <07810 +shachad > doth blind <05786 +<avar > the eyes <05869 +<ayin > of the wise <02450 +chakam > , and pervert <05557 +calaph > the words <01697 +dabar > of the righteous <06662 +tsaddiyq > .

05186 DEU 024 017 Thou shalt not pervert <{05186} +natah > the judgment <04941 +mishpat > of the stranger <01616 +ger > , [nor] of the fatherless <03490 +yathowm > ; nor <03808 +lo > take <02254 +chabal > a widow s <00490 +>almanah > raiment <00899 +beged > to pledge <02254 +chabal > :

05186 DEU 026 008 And the LORD <03068 +Y@hovah > brought <03318 +yatsa > > us forth <03318 +yatsa > > out of Egypt <04714 +Mitsrayim > with a mighty <02389 +chazaq > hand <03027 +yad > , and with an outstretched <{05186} +natah > arm <02220 +z@rowa > , and with great <01419 +gadawl > terribleness <04172 +mowra > , and with signs <00226 +>owth > , and with wonders <04159 +mowpheth > :

05186 DEU 027 019 Cursed <00779 +>arar > [be] he that perverteth <{05186} +natah > the judgment <04941 +mishpat > of the stranger <01616 +ger > , fatherless <03490 +yathowm > , and widow <00490 +>almanah > . And all <03605 +kol > the people <05971 +<am > shall say <00559 +>amar > , Amen <00543 +>amen > .

05186 JOS 008 018 And the LORD <03068 +Y@hovah > said <00559 +>amar > unto Joshua <03091 +Y@howshuwa > , Stretch <05186 +natah > out the spear <03591 +kiydown > that [is] in thy hand <03027 +yad > toward <00413 +>el > Ai <05857 +<Ay > ; for I will give <05414 +nathan > it into thine hand <03027 +yad > . And Joshua <03091 +Y@howshuwa > stretched <{05186} +natah > out the spear <03591 +kiydown > that [he had] in his hand <03027 +yad > toward <00413 +>el > the city <05892 +<iyr > .

05186 JOS 008 018 And the LORD <03068 +Y@hovah > said <00559 +>amar > unto Joshua <03091 +Y@howshuwa > , Stretch <{05186} +natah > out the spear <03591 +kiydown > that [is] in thy hand <03027 +yad > toward <00413 +>el > Ai <05857 +<Ay > ; for I will give <05414 +nathan > it into thine hand <03027 +yad > . And Joshua <03091 +Y@howshuwa > stretched <05186 +natah > out the spear <03591 +kiydown > that [he had] in his hand <03027 +yad > toward <00413 +>el > the city <05892 +<iyr > .

05186 JOS 008 019 And the ambush <00693 +>arab > arose <06965 +quwm > quickly <04120 +m@herah > out of their place <04725 +maqowm > , and they ran <07323 +ruwts > as soon as he had stretched <{05186} +natah > out his hand <03027 +yad > : and they entered <00935 +bow > > into the city <05892 +<iyr > , and took <03920 +lakad > it , and hasted <04116 +mahar > and set the city <05892 +<iyr > on fire <00784 +>esh > .

05186 JOS 008 026 For Joshua <03091 +Y@howshuwa > drew <07725 +shuwb > not his hand <03027 +yad > back <07725 +shuwb > , wherewith <00834 +>aher > he stretched <{05186} +natah > out the spear <03591 +kiydown > , until <05704 +<ad > he had utterly destroyed <02763 +charam > all <03605 +kol > the inhabitants <03427 +yashab > of Ai <05857 +<Ay > .

05186 JOS 024 023 Now <06258 +<attah > therefore put <05493 +cuwr > away <05493 +cuwr > , [said he] , the strange <05236 +nekar > gods <00430 +>elohiym > which <00834 +>aher > [are] among <07130 +qereb > you , and incline <{05186} +natah > your heart <03824 +lebab > unto the LORD <03068 +Y@hovah > God <00430 +>elohiym > of Israel <03478 +Yi sra >el > .

05186 JUDG 004 011 Now Heber <02268 +Cheber > the Kenite <07014 +Qayin > , [which was] of the children <01121 +ben > of Hobab <02246 +Chobab > the father <02859 +chathan > in law <02859 +chathan > of Moses <04872 +Mosheh > , had severed <06504 +parad > himself from the Kenites <07017 +Qeyniy > , and pitched <{05186} +natah > his tent <00168 +>ohel > unto the plain <00436

+>elown > of Zaanaim , which <00834 +>aher > [is] by Kedesh
<06943 +Qedesh > .

05186 JUDG 009 003 And his mother s <00517 +>em > brethren
<00251 +>ach > spake <01696 +dabar > of him in the ears <00241
>ozen > of all <03605 +kol > the men <01167 +ba<al > of Shechem
<07927 +Sh@kem > all <03605 +kol > these <00428 +>el - leh >
words <01697 +dabar > : and their hearts <03820 +leb > inclined
<{05186} +natah > to follow Abimelech <40> ; for they said
<00559 +>amar > , He [is] our brother <00251 +>ach > .

05186 JUDG 016 030 And Samson <08123 +Shimshown > said <00559
>amar > , Let me die <04191 +muwth >with the Philistines <06430
>P@lishtiy > . And he bowed <{05186} +natah > himself with [all
his] might <03581 +koach > ; and the house <01004 +bayith >
fell <05307 +naphal > upon the lords <05633 +ceren > , and upon
all <03605 +kol > the people <05971 +<am > that [were] therein
. So the dead <04191 +muwth > which <00834 +>aher > he slew
<04191 +muwth > at his death <04194 +maveth > were more <07227
>rab > than [they] which <00834 +>aher > he slew <04191 +muwth
> in his life <02416 +chay > .

05186 1SA 008 003 And his sons <01121 +ben > walked <01980
>halak > not in his ways <01870 +derek > , but turned <05186
>natah > aside <05186 +natah > after <00310 +>achar > lucre
<01215 +betsa< > , and took <03947 +laqach > bribes <07810
>shachad > , and perverted <{05186} +natah > judgment <04941
>mi shpat > .

05186 1SA 008 003 And his sons <01121 +ben > walked <01980
>halak > not in his ways <01870 +derek > , but turned <05186
>natah > aside <{05186} +natah > after <00310 +>achar > lucre
<01215 +betsa< > , and took <03947 +laqach > bribes <07810
>shachad > , and perverted <05186 +natah > judgment <04941
>mi shpat > .

05186 1SA 008 003 And his sons <01121 +ben > walked <01980
>halak > not in his ways <01870 +derek > , but turned <{05186}
>natah > aside <05186 +natah > after <00310 +>achar > lucre
<01215 +betsa< > , and took <03947 +laqach > bribes <07810
>shachad > , and perverted <05186 +natah > judgment <04941
>mi shpat > .

05186 1SA 014 007 And his armourbearer <03627 +k@liy > said
<00559 +>amar > unto him , Do <06213 +<asah > all <03605 +kol >
that [is] in thine heart <03824 +lebab > : turn <{05186}
>natah > thee ; behold <02005 +hen > , I [am] with thee
according to thy heart <03824 +lebab > .

05186 2SA 002 019 And Asahel <06214 +<Asah>el > pursued <07291
>radaph > after <00310 +>achar > Abner <74> ; and in going
<03212 +yalak > he turned <{05186} +natah > not to the right
<03225 +yamiyn > hand nor to the left <08040 +s@mo>wl > from
following <00310 +>achar > Abner <74> .

05186 2SA 002 021 And Abner <74> said <00559 +>amar > to him ,
Turn <05186 +natah > thee aside <{05186} +natah > to thy right
<03225 +yamiyn > hand or <00176 +>ow > to thy left <08040
>s@mo>wl > , and lay thee hold <00270 +>achaz > on one <00259
>echad > of the young <05288 +na<ar > men , and take <03947
>laqach > thee his armour <02488 +chaliytsah > . But Asahel
<06214 +<Asah>el > would <14> not turn <05493 +cuwr > aside from
following <00310 +>achar > of him .

05186 2SA 002 021 And Abner <74> said <00559 +>amar > to him ,
Turn <{05186} +natah > thee aside <05186 +natah > to thy right
12/8/2021

<03225 +yamiyn > hand or <00176 +>ow > to thy left <08040 +s@mo>wl > , and lay thee hold <00270 +>achaz > on one <00259 +>echad > of the young <05288 +na<ar > men , and take <03947 +laqach > thee his armour <02488 +chaliytsah > . But Asahel <06214 +<Asah>el > would <14> not turn <05493 +cuwr > aside from following <00310 +>achar > of him .

05186 2SA 003 027 And when Abner <74> was returned <07725 +shuwb > to Hebron <02275 +Chebrown > , Joab <03097 +Yow>ab > took him aside <{05186} +natah > in the gate <08179 +sha<ar > to speak <01696 +dabar > with him quietly <07987 +sh@liy > , and smote <05221 +nakah > him there <08033 +sham > under the fifth <02570 +chomesh > [rib] , that he died <04191 +muwth > , for the blood <01818 +dam > of Asahel <06214 +<Asah>el > his brother <00251 +>ach > .

05186 2SA 006 010 So David <01732 +David > would <14> not remove <05493 +cuwr > the ark <00727 +>arown > of the LORD <03068 +Y@hovah > unto him into <05921 +<al > the city <05892 +<iyr > of David <01732 +David > : but David <01732 +David > carried <05186 +natah > it aside <{05186} +natah > into the house <01004 +bayith > of Obededom <05654 +<Obed >Edowm > the Gittite <01663 +Gittiy > .

05186 2SA 006 010 So David <01732 +David > would <14> not remove <05493 +cuwr > the ark <00727 +>arown > of the LORD <03068 +Y@hovah > unto him into <05921 +<al > the city <05892 +<iyr > of David <01732 +David > : but David <01732 +David > carried <{05186} +natah > it aside <05186 +natah > into the house <01004 +bayith > of Obededom <05654 +<Obed >Edowm > the Gittite <01663 +Gittiy > .

05186 2SA 006 017 And they brought <00935 +bow> > in the ark <00727 +>arown > of the LORD <03068 +Y@hovah > , and set <03322 +yatsag > it in his place <04725 +maqowm > , in the midst <08432 +tavek > of the tabernacle <00168 +>ohel > that David had pitched <{05186} +natah > for it : and David <01732 +David > offered <05927 +<alah > burnt <05930 +<olah > offerings and peace <08002 +shelem > offerings before <06440 +paniym > the LORD <03068 +Y@hovah > .

05186 2SA 016 022 So they spread <{05186} +natah > Absalom <53> a tent <00168 +>ohel > upon the top <01406 +gag > of the house <01004 +bayith > ; and Absalom <53> went <00935 +bow> > in unto his father s <1> concubines <06370 +piylegesh > in the sight <05869 +<ayin > of all <03605 +kol > Israel <03478 +Yisra>el > .

05186 2SA 019 014 And he bowed <{05186} +natah > the heart <03824 +lebab > of all <03605 +kol > the men <00376 +>iysh > of Judah <03063 +Y@huwdah > , even as [the heart of] one <00259 +>echad > man <00376 +>iysh > ; so that they sent <07971 +shalach > [this word] unto the king <04428 +melek > , Return <07725 +shuwb > thou , and all <03605 +kol > thy servants <05650 +>ebed > .

05186 2SA 021 010 . And Rizpah <07532 +Ritspah > the daughter <01323 +bath > of Aiah <00345 +>Ayah > took <03947 +laqach > sackcloth <08242 +saq > , and spread <{05186} +natah > it for her upon the rock <06697 +tsuwr > , from the beginning <08462 +t@chillah > of harvest <07105 +qatsiyr > until <05704 +<ad > water <04325 +mayim > dropped <05413 +nathak > upon them out of heaven <08064 +shamayim > , and suffered <05414 +nathan > neither <03808 +lo> > the birds <05775 +<owph > of the air <08064 +shamayim > to rest <05117 +nuwach > on <05921 +<al > them by day <03119 +yowmam > , nor the beasts <02416 +chay > of the field <07704 +sadeh > by night <03915 +layil > .

05186 2SA 022 010 He bowed <{05186} +natah > the heavens <08064 +shamayim > also , and came <03381 +yarad > down <03381 +yarad > ; and darkness <06205 +araphel > [was] under <08478 +tachath > his feet <07272 +regel > .

05186 1KI 002 028 Then tidings <08052 +sh@muw<ah > came <00935 +bow> > to Joab <03097 +Yow>ab > : for Joab <03097 +Yow>ab > had turned <05186 +natah > after <00310 +>achar > Adonijah <00138 +>Adoniyah > , though he turned <{05186} +natah > not after <00310 +>achar > Absalom <53> . And Joab <03097 +Yow>ab > fled <05127 +nuwc > unto the tabernacle <00168 +>ohel > of the LORD <03068 +Y@hovah > , and caught <02388 +chazaq > hold <02388 +chazaq > on the horns <07161 +qeren > of the altar <04196 +mi zbeach > .

05186 1KI 002 028 Then tidings <08052 +sh@muw<ah > came <00935 +bow> > to Joab <03097 +Yow>ab > : for Joab <03097 +Yow>ab > had turned <{05186} +natah > after <00310 +>achar > Adonijah <00138 +>Adoniyah > , though he turned <05186 +natah > not after <00310 +>achar > Absalom <53> . And Joab <03097 +Yow>ab > fled <05127 +nuwc > unto the tabernacle <00168 +>ohel > of the LORD <03068 +Y@hovah > , and caught <02388 +chazaq > hold <02388 +chazaq > on the horns <07161 +qeren > of the altar <04196 +mi zbeach > .

05186 1KI 008 042 (For they shall hear <08085 +shama< > of thy great <01419 +gadowl > name <08034 +shem > , and of thy strong <02389 +chazaq > hand <03027 +yad > , and of thy stretched <{05186} +natah > out arm <02220 +z@rowa< > ;) when he shall come <00935 +bow> > and pray <06419 +palal > toward <00413 +>el > this <02088 +zeh > house <01004 +bayi th > ;

05186 1KI 008 058 That he may incline <{05186} +natah > our hearts <03824 +lebab > unto him , to walk <03212 +yalak > in all <03605 +kol > his ways <01870 +derek > , and to keep <08104 +shamar > his commandments <04687 +mitsvah > , and his statutes <02706 +choq > , and his judgments <04941 +mi shpat > , which <00834 +>aher > he commanded <06680 +tsavah > our fathers <1> .

05186 1KI 011 002 Of the nations <01471 +gowy > [concerning] which <00834 +>aher > the LORD <03068 +Y@hovah > said <00559 +>amar > unto the children <01121 +ben > of Israel <03478 +Yisra>el > , Ye shall not go <00935 +bow> > in to them , neither <03808 +lo> > shall they come <00935 +bow> > in unto you : [for] surely <00403 +>aken > they will turn <{05186} +natah > away your heart <03824 +lebab > after <00310 +>achar > their gods <00430 +>elohiym > : Solomon <08010 +Sh@lomoh > clave <01692 +dabaq > unto these <01992 +hem > in love <00160 +>ahabah > .

05186 1KI 011 003 And he had <01961 +hayah > seven <07651 +sheba< > hundred <03967 +me>ah > wives <00802 +>ishshah > , princesses <08282 +sarah > , and three <07969 +shalowsh > hundred <03967 +me>ah > concubines <06370 +piylegesh > : and his wives <00802 +>ishshah > turned <{05186} +natah > away his heart <03820 +leb > .

05186 1KI 011 004 For it came <01961 +hayah > to pass , when <06256 +<eth > Solomon <08010 +Sh@lomoh > was old <02209 +ziqnah > , [that] his wives <00802 +>ishshah > turned <{05186} +natah > away his heart <03824 +lebab > after <00310 +>achar > other <00312 +>acher > gods <00430 +>elohiym > : and his heart <03824 +lebab > was not perfect <08003 +shalem > with the LORD <03068 +Y@hovah > his God <00430 +>elohiym > , as [was] the heart <03824 +lebab > of David <01732 +David > his father <1> .

05186 1KI 011 009 . And the LORD <03068 +Y@hovah > was angry <00599 +>anaph > with Solomon <08010 +Sh@lomoh > , because <03588 +kiy > his heart <03824 +lebab > was turned <{05186} +natah > from the LORD <03068 +Y@hovah > God <00430 +>el ohi ym > of Israel <03478 +Yisra>el > , which had appeared <07200 +ra>ah > unto him twice <06471 +pa<am > ,

05186 2KI 017 036 But the LORD <03068 +Y@hovah > , who <00834 +>aher > brought <05927 +<alah > you up out of the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mitsrayim > with great <01419 +gadowl > power <03581 +koach > and a stretched <{05186} +natah > out arm <02220 +z@rowa< > , him shall ye fear <03372 +yare> > , and him shall ye worship <07812 +shachah > , and to him shall ye do sacrifice <02076 +zabach > .

05186 2KI 019 016 LORD <03068 +Y@hovah > , bow <05186 +natah > down <{05186} +natah > thine ear <00241 +>ozen > , and hear <08085 +shama< > : open <06491 +paqach > , LORD <03068 +Y@hovah > , thine eyes <05869 +<ayin > , and see <07200 +ra>ah > : and hear <08085 +shama< > the words <01697 +dabar > of Sennacherib <05576 +Cancheriyb > , which <00834 +>aher > hath sent <07971 +shalach > him to reproach <02778 +charaph . > the living <02416 +chay > God <00430 +>el ohi ym > .

05186 2KI 019 016 LORD <03068 +Y@hovah > , bow <{05186} +natah > down <05186 +natah > thine ear <00241 +>ozen > , and hear <08085 +shama< > : open <06491 +paqach > , LORD <03068 +Y@hovah > , thine eyes <05869 +<ayin > , and see <07200 +ra>ah > : and hear <08085 +shama< > the words <01697 +dabar > of Sennacherib <05576 +Cancheriyb > , which <00834 +>aher > hath sent <07971 +shalach > him to reproach <02778 +charaph . > the living <02416 +chay > God <00430 +>el ohi ym > .

05186 2KI 020 010 And Hezekiah <02396 +Chi zqi yah > answered <00559 +>amar > , It is a light <07043 +qalal > thing for the shadow <06738 +tsel > to go <05186 +natah > down <{05186} +natah > ten <06235 +<eser > degrees <04609 +ma<alah > : nay <03808 +lo> > , but let the shadow <06738 +tsel > return <07725 +shuwb > backward <00322 +>achoranniyth > ten <06235 +<eser > degrees <04609 +ma<alah > .

05186 2KI 020 010 And Hezekiah <02396 +Chi zqi yah > answered <00559 +>amar > , It is a light <07043 +qalal > thing for the shadow <06738 +tsel > to go <{05186} +natah > down <05186 +natah > ten <06235 +<eser > degrees <04609 +ma<alah > : nay <03808 +lo> > , but let the shadow <06738 +tsel > return <07725 +shuwb > backward <00322 +>achoranniyth > ten <06235 +<eser > degrees <04609 +ma<alah > .

05186 1CH 013 013 So David <01732 +David > brought <05493 +cuwr > not the ark <00727 +>arown > [home] to himself to the city <05892 +<iyr > of David <01732 +David > , but carried <05186 +natah > it aside <{05186} +natah > into <00413 +>el > the house <01004 +bayith > of Obededom <05654 +<Obed >Edowm > the Gittite <01663 +Gittiy > .

05186 1CH 013 013 So David <01732 +David > brought <05493 +cuwr > not the ark <00727 +>arown > [home] to himself to the city <05892 +<iyr > of David <01732 +David > , but carried <{05186} +natah > it aside <05186 +natah > into <00413 +>el > the house <01004 +bayith > of Obededom <05654 +<Obed >Edowm > the Gittite <01663 +Gittiy > .

05186 1CH 015 001 . And [David] made <06213 +<asah > him houses in the city <05892 +<iyr > of David <01732 +David > , and prepared <03559 +kuwn > a place <04725 +maqowm > for the ark

<00727 +>arown > of God <00430 +>elohiym > , and pitched
<{05186} +natah > for it a tent <00168 +>ohel > .

05186 1CH 016 001 . So they brought <00935 +bow> > the ark
<00727 +>arown > of God <00430 +>elohiym > , and set <03322
+yatsag > it in the midst <08432 +tavek > of the tent <00168
+>ohel > that David <01732 +David > had pitched <{05186} +natah
> for it : and they offered <07126 +qarab > burnt <05930 +<olah
> sacrifices and peace <08002 +shel em > offerings before <06440
+paniym > God <00430 +>elohiym > .

05186 1CH 021 010 Go <03212 +yalak > and tell <01696 +dabar >
David <01732 +David > , saying <00559 +>amar > , Thus <03541
+koh > saith <00559 +>amar > the LORD <03068 +Y@hovah > , I
offer <{05186} +natah > thee three <07969 +shalowsh > [things]
: choose <00977 +bachar > thee one <00259 +>echad > of them ,
that I may do <06213 +<asah > [it] unto thee .

05186 1CH 021 016 And David <01732 +David > lifted <05375 +nasa>
> up his eyes <05869 +<ayin > , and saw <07200 +ra>ah > the
angel <04397 +mal>ak > of the LORD <03068 +Y@hovah > stand
<05975 +<amad > between <00996 +beyn > the earth <00776 +>erets
> and the heaven <08064 +shamayim > , having a drawn <08025
+shalaph > sword <02719 +chereb > in his hand <03027 +yad >
stretched <{05186} +natah > out over <05921 +<al > Jerusalem
<03389 +Y@ruwshalaim > . Then David <01732 +David > and the
elders <02205 +zaqen > [of Israel , who were] clothed <03680
+kacah > in sackcloth <08242 +saq > , fell <05307 +naphal > upon
their faces <06440 +paniym > .

05186 2CH 001 004 But the ark <00727 +>arown > of God <00430
+>elohiym > had David <01732 +David > brought <05927 +<alah > up
from Kirjathjearim <07157 +Qiryath Y@<ariym > to [the place
which] David <01732 +David > had prepared <03559 +kuwn > for it
: for he had pitched <{05186} +natah > a tent <00168 +>ohel >
for it at Jerusalem <03389 +Y@ruwshalaim > .

05186 2CH 006 032 Moreover <01571 +gam > concerning <00413 +>el
> the stranger <05237 +nokriy > , which <00834 +>aher > is not
of thy people <05971 +<am > Israel <03478 +Yisra>el > , but is
come <00935 +bow> > from a far <07350 +rachowq > country <00776
+>erets > for thy great <01419 +gadawl > name s <08034 +shem >
sake <04616 +ma<an > , and thy mighty <02389 +chazaq > hand
<03027 +yad > , and thy stretched <{05186} +natah > out arm
<02220 +z@rowa< > ; if they come <00935 +bow> > and pray <06419
+palal > in this <02088 +zeh > house <01004 +bayith > ;

05186 EZR 007 028 And hath extended <{05186} +natah > mercy
<02617 +checed > unto me before <06440 +paniym > the king <04428
+melek > , and his counsellors <03289 +ya<ats > , and before
<06440 +paniym > all <03605 +kol > the king s <04428 +melek >
mighty <01368 +gibbowr > princes <08269 +sar > . And I was
strengthened <02388 +chazaq > as the hand <03027 +yad > of the
LORD <03068 +Y@hovah > my God <00430 +>elohiym > [was] upon me
, and I gathered <06908 +qabats > together out of Israel <03478
+Yisra>el > chief <07218 +ro>sh > men <00582 +>enowsh > to go
<05927 +<alah > up with me .

05186 EZR 009 009 For we [were] bondmen <05650 +<ebed > ; yet
our God <00430 +>elohiym > hath not forsaken <05800 +<azab > us
in our bondage <05659 +<abduwth > , but hath extended <{05186}
+natah > mercy <02617 +checed > unto us in the sight <06440
+paniym > of the kings <04428 +melek > of Persia <06539 +Parac >
, to give <05414 +nathan > us a reviving <04241 +mi chyah > , to
set <07311 +ruwm > up the house <01004 +bayith > of our God
<00430 +>elohiym > , and to repair <05975 +<amad > the
12/8/2021

desolations <02723 +chorbah > thereof , and to give <05414 +nathan > us a wall <01447 +gader > in Judah <03063 +Y@huwdah > and in Jerusalem <03389 +Y@ruwshalaim > .

05186 JOB 009 008 Which alone <00905 +bad > spreadeth <{05186} +natah > out the heavens <08064 +shamayim > , and treadeth <01869 +darak > upon the waves <01116 +bamah > of the sea <03220 +yam > .

05186 JOB 015 025 For he stretcheth <{05186} +natah > out his hand <03027 +yad > against <00413 +>el > God <00410 +>el > , and strengtheneth <01396 +gabar > himself against <00413 +>el > the Almighty <07706 +Shadday > .

05186 JOB 015 029 He shall not be rich <06238 +<ashar > , neither <03808 +lo> > shall his substance <02428 +chayil > continue <06965 +quwm > , neither <03808 +lo> > shall he prolong <{05186} +natah > the perfection <04512 +minleh > thereof upon the earth <00776 +>erets > .

05186 JOB 023 011 My foot <07272 +regel > hath held <00270 +>achaz > his steps <00838 +>ashur > , his way <01870 +derek > have I kept <08104 +shamar > , and not declined <{05186} +natah > .

05186 JOB 024 004 They turn <{05186} +natah > the needy <34> out of the way <01870 +derek > : the poor <06035 +<anav > of the earth <00776 +>erets > hide <2244> themselves together <03162 +yachad > .

05186 JOB 026 007 He stretcheth <{05186} +natah > out the north <06828 +tsaphown > over <05921 +<al > the empty <08414 +tohuw > place <08414 +tohuw > , [and] hangeth <08518 +talah > the earth <00776 +>erets > upon nothing <01099 +b@liyrah > .

05186 JOB 031 007 If <00518 +>im > my step <00838 +>ashur > hath turned <{05186} +natah > out of the way <01870 +derek > , and mine heart <03820 +leb > walked <01980 +halak > after <00310 +>achar > mine eyes <05869 +<ayin > , and if any blot <03971 +m>uwm > hath cleaved <01692 +dabaq > to mine hands <03709 +kaph > ;

05186 JOB 036 018 Because <03588 +kiy > [there is] wrath <02534 +chemah > , [beware] lest <06435 +pen > he take <05496 +cuwth > thee away <05496 +cuwth > with [his] stroke <05607 +cepheq > : then a great <07227 +rab > ransom <03724 +kopher > cannot <03808 +lo> > deliver <{05186} +natah > thee .

05186 JOB 038 005 Who <04310 +miy > hath laid <07760 +suwm > the measures <04461 +memad > thereof , if <03588 +kiy > thou knowest <03045 +yada< > ? or <00176 +>ow > who <04310 +miy > hath stretched <{05186} +natah > the line <06957 +qav > upon it ?

05186 PSA 017 006 I have called <07121 +qara> > upon thee , for thou wilt hear <06030 +<anah > me , O God <00410 +>el > : incline <{05186} +natah > thine ear <00241 +>ozen > unto me , [and hear <08085 +shama< >] my speech <00565 +>imrah > .

05186 PSA 017 011 They have now <06258 +<attah > compassed <05437 +cabab > us in our steps <00838 +>ashur > : they have set <07896 +shiyth > their eyes <05869 +<ayin > bowing <05186 +natah > down <{05186} +natah > to the earth <00776 +>erets > ;

05186 PSA 017 011 They have now <06258 +<attah > compassed <05437 +cabab > us in our steps <00838 +>ashur > : they have set <07896 +shiyth > their eyes <05869 +<ayin > bowing <{05186} +natah > down <{05186} +natah > to the earth <00776 +>erets > ;

+natah > down <05186 +natah > to the earth <00776 +>erets > ;

05186 PSA 018 009 He bowed <{05186} +natah > the heavens <08064 +shamayim > also , and came <03381 +yarad > down <03381 +yarad > : and darkness <06205 +<araphel > [was] under <08478 +tachath > his feet <07272 +regel > .

05186 PSA 021 011 For they intended <{05186} +natah > evil <07451 +ra< > against <05921 +<al > thee : they imagined <02803 +chashab > a mischievous <04209 +m@zimmah > device , [which] they are not able <03201 +yakol > [to perform] .

05186 PSA 027 009 Hide <05641 +cathar > not thy face <06440 +paniyim > [far] from me ; put <05186 +natah > not thy servant <05650 +<ebed > away <{05186} +natah > in anger <00639 +>aph > : thou hast been <01961 +hayah > my help <05833 +<ezrah > ; leave <05203 +natash > me not , neither <00408 +>al > forsake <05800 +<azab > me , O God <00430 +>elohiyim > of my salvation <03468 +yesha< > .

05186 PSA 027 009 Hide <05641 +cathar > not thy face <06440 +paniyim > [far] from me ; put <{05186} +natah > not thy servant <05650 +<ebed > away <05186 +natah > in anger <00639 +>aph > : thou hast been <01961 +hayah > my help <05833 +<ezrah > ; leave <05203 +natash > me not , neither <00408 +>al > forsake <05800 +<azab > me , O God <00430 +>elohiyim > of my salvation <03468 +yesha< > .

05186 PSA 031 002 Bow <05186 +natah > down <{05186} +natah > thine ear <00241 +>ozen > to me ; deliver <05337 +natsal > me speedily <04120 +m@herah > : be thou my strong <04581 +ma<owz > rock <06697 +tsuwr > , for an house <01004 +bayith > of defence <04686 +matsuwd > to save <03467 +yasha< > me .

05186 PSA 031 002 Bow <{05186} +natah > down <05186 +natah > thine ear <00241 +>ozen > to me ; deliver <05337 +natsal > me speedily <04120 +m@herah > : be thou my strong <04581 +ma<owz > rock <06697 +tsuwr > , for an house <01004 +bayith > of defence <04686 +matsuwd > to save <03467 +yasha< > me .

05186 PSA 040 001 . To the chief Musician <05329 +natsach > , A Psalm <04210 +mizmowr > of David <01732 +David > . I waited <06960 +qavah > patiently <06960 +qavah > for the LORD <03068 +Y@hovah > ; and he inclined <{05186} +natah > unto me , and heard <08085 +shama< > my cry <07775 +shav<ah > .

05186 PSA 044 018 Our heart <03820 +leb > is not turned <05472 +cuwg > back <00268 +>achowr > , neither have our steps <00838 +>ashur > declined <{05186} +natah > from thy way <00734 +>orach > ;

05186 PSA 045 010 . Hearken <08085 +shama< > , O daughter <01323 +bath > , and consider <07200 +ra>ah > , and incline <{05186} +natah > thine ear <00241 +>ozen > ; forget <07911 +shakach > also thine own people <05971 +<am > , and thy father s <1> house <01004 +bayith > ;

05186 PSA 049 004 I will incline <{05186} +natah > mine ear <00241 +>ozen > to a parable <04912 +mashal > : I will open <06605 +pathach > my dark <02420 +chiydah > saying <02420 +chiydah > upon the harp <03658 +kinnowr > .

05186 PSA 062 003 How <05704 +<ad > long <05704 +<ad > will ye imagine <02050 +hathath> > mischievous <00205 +>aven > against <05921 +<al > a man <00376 +>iysh > ? ye shall be slain <07523 +ratsach > all <03605 +kol > of you : as a bowing <{05186}

+natah > wall <07023 +qiy > [shall ye be , and as] a tottering <01760 +dachah > fence <01447 +gader > .

05186 PSA 071 002 Deliver <05337 +natsal > me in thy righteousness <06666 +ts@daqah > , and cause me to escape <06403 +palat > : incline <{05186} +natah > thine ear <00241 +>ozen > unto me , and save <03467 +yasha< > me .

05186 PSA 073 002 But as for me , my feet <07373 +ratob > were almost <04592 +m@<at > gone <{05186} +natah > ; my steps <00838 +>ashur > had well <00369 +>ayin > nigh <04952 +mishrah > slipped <08210 +shaphak > .

05186 PSA 078 001 . Maschil <04905 +maskiy > of Asaph <00623 +>Acaph > . Give ear <00238 +>azan > , O my people <05971 +<am > , [to] my law <08451 +towrah > : incline <{05186} +natah > your ears <00241 +>ozen > to the words <00561 +>emer > of my mouth <06310 +peh > .

05186 PSA 086 001 . A Prayer <08605 +t@phillah > of David <01732 +David > . Bow <05186 +natah > down <{05186} +natah > thine ear <00241 +>ozen > , O LORD <03068 +Y@hovah > , hear <06030 +<anah > me : for I [am] poor <06041 +<aniy > and needy <34> .

05186 PSA 086 001 . A Prayer <08605 +t@phillah > of David <01732 +David > . Bow <{05186} +natah > down <05186 +natah > thine ear <00241 +>ozen > , O LORD <03068 +Y@hovah > , hear <06030 +<anah > me : for I [am] poor <06041 +<aniy > and needy <34> .

05186 PSA 088 002 Let my prayer <08605 +t@phillah > come <00935 +bow> > before <06440 +paniy > thee : incline <{05186} +natah > thine ear <00241 +>ozen > unto my cry <07440 +rinnah > ;

05186 PSA 102 002 Hide <05641 +cathar > not thy face <06440 +paniy > from me in the day <03117 +yowm > [when] I am in trouble <06862 +tsar > ; incline <{05186} +natah > thine ear <00241 +>ozen > unto me : in the day <03117 +yowm > [when] I call <07121 +qara> > answer <06030 +<anah > me speedily <04118 +maher > .

05186 PSA 102 011 My days <03117 +yowm > [are] like a shadow <06738 +tsel > that declineth <{05186} +natah > ; and I am withered <03001 +yabesh > like grass <06212 +<eseb > .

05186 PSA 104 002 Who coverest <05844 +<atah > [thyself] with light <00216 +>owr > as [with] a garment <08008 +salmah > : who stretchest <{05186} +natah > out the heavens <08064 +shamayim > like a curtain <03407 +y@riy<ah > :

05186 PSA 109 023 I am gone <01980 +halak > like the shadow <06738 +tsel > when it declineth <{05186} +natah > : I am tossed <05287 +na<ar > up and down as the locust <00697 +>arbeh > .

05186 PSA 116 002 Because <03588 +kiy > he hath inclined <{05186} +natah > his ear <00241 +>ozen > unto me , therefore will I call <07121 +qara> > upon [him] as long <03117 +yowm > as I live <03117 +yowm > .

05186 PSA 119 036 Incline <{05186} +natah > my heart <03820 +leb > unto thy testimonies <5715> , and not to covetousness <01215 +betsa< > .

05186 PSA 119 051 . The proud <02086 +zed > have had me greatly <03966 +m@<od > in derision <03887 +luwts > : [yet] have I not declined <{05186} +natah > from thy law <08451 +towrah > .

05186 PSA 119 112 +I have inclined <{05186} +natah > mine heart
<03820 +leb > to perform <06213 +<asah > thy statutes <02706
+choq > alway <05769 +<owl am > , [even unto] the end <06118
+<eqeb > .

05186 PSA 119 157 +. Many <07227 +rab > [are] my persecutors
<07291 +radaph > and mine enemies <06862 +tsar > ; [yet] do I
not decline <{05186} +natah > from thy testimonies <5715> .

05186 PSA 125 005 As for such as turn <05186 +natah > aside
<{05186} +natah > unto their crooked <06128 +<aqal qal > ways ,
the LORD <03068 +Y@hovah > shall lead <03212 +yalak > them forth
with the workers <06466 +pa<al > of iniquity <00205 +>aven > : [
but] peace <07965 +shalowm > [shall be] upon Israel <03478
+Yisra>el > .

05186 PSA 125 005 As for such as turn <{05186} +natah > aside
<05186 +natah > unto their crooked <06128 +<aqal qal > ways , the
LORD <03068 +Y@hovah > shall lead <03212 +yalak > them forth
with the workers <06466 +pa<al > of iniquity <00205 +>aven > : [
but] peace <07965 +shalowm > [shall be] upon Israel <03478
+Yisra>el > .

05186 PSA 136 012 With a strong <02389 +chazaq > hand <03027
+yad > , and with a stretched <{05186} +natah > out arm <02220
+z@rowa< > : for his mercy <02617 +cheded > [endureth] for
ever <05769 +<owl am > .

05186 PSA 141 004 Incline <{05186} +natah > not my heart <03820
+leb > to [any] evil <07451 +ra< > thing <01697 +dabar > , to
practise <05953 +<alal > wicked <07562 +resha< > works <05949
+<aliylah > with men <00376 +>iysh > that work <05950
+<aliyliyah > iniquity <00205 +>aven > : and let me not eat
<03898 +lacham > of their dainties <04516 +man<am > .

05186 PSA 144 005 Bow <{05186} +natah > thy heavens <08064
+shamayim > , O LORD <03068 +Y@hovah > , and come <03381 +yarad
> down <03381 +yarad > : touch <05060 +naga< > the mountains
<02022 +har > , and they shall smoke <06225 +<ashan > .

05186 PRO 001 024 Because <03282 +ya<an > I have called <07121
+qara> > , and ye refused <03985 +ma>en > ; I have stretched
<{05186} +natah > out my hand <03027 +yad > , and no <00369
+>ayin > man regarded <07181 +qashab > ;

05186 PRO 002 002 So that thou incline <07181 +qashab > thine
ear <00241 +>ozen > unto wisdom <02451 +chokmah > , [and]
apply <{05186} +natah > thine heart <03820 +leb > to
understanding <08394 +tabuwn > ;

05186 PRO 004 005 Get <07069 +qanah > wisdom <02451 +chokmah > ,
get <07069 +qanah > understanding <00998 +bi ynah > : forget
<07911 +shakach > [it] not ; neither <00408 +>al > decline
<{05186} +natah > from the words <00561 +>emer > of my mouth
<06310 +peh > .

05186 ISA 037 017 Incline <{05186} +natah > thine ear <00241
+>ozen > , O LORD <03068 +Y@hovah > , and hear <08085 +shama< > ;
open <06491 +paqach > thine eyes <05869 +<ayin > , O LORD
<03068 +Y@hovah > , and see <07200 +ra>ah > : and hear <08085
+shama< > all <03605 +kol > the words <01697 +dabar > of
Sennacherib <05576 +Cancheriyb > , which <00834 +>aher > hath
sent <07971 +shalach > to reproach <02778 +charaph . > the
living <02416 +chay > God <00430 +>elohiyim > .

05186 PRO 004 027 Turn <{05186} +natah > not to the right <03225
12/8/2021

+yami yn > hand <03227 +y@miyniy > nor to the left <08040 +s@mo>wl > : remove <05493 +cuwr > thy foot <07272 +regel > from evil <07451 +ra< > .

05186 PRO 005 001 . My son <01121 +ben > , attend <07181 +qashab > unto my wisdom <02451 +chokmah > , [and] bow <{05186} +natah > thine ear <00241 +>ozen > to my understanding <08394 +tabuwn > :

05186 PRO 005 013 And have not obeyed <08085 +shama< > the voice <06963 +qowl > of my teachers <03384 +yarah > , nor <03808 +lo> > inclined <{05186} +natah > mine ear <00241 +>ozen > to them that instructed <03925 +lamad > me !

05186 PRO 007 021 With her much <07230 +rob > fair <03948 +leqach > speech <03948 +leqach > she caused him to yield <{05186} +natah > , with the flattering <02506 +cheleq > of her lips <08193 +saphah > she forced <05080 +nadach > him .

05186 PRO 017 023 . A wicked <07563 +rasha< > [man] taketh <03947 +laqach > a gift <07810 +shachad > out of the bosom <02436 +cheyq > to pervert <{05186} +natah > the ways <00734 +>orach > of judgment <04941 +mi shpat > .

05186 PRO 018 005 . [It is] not good <02896 +towb > to accept <05375 +nasa> > the person <06440 +paniym > of the wicked <07563 +rasha< > , to overthrow <{05186} +natah > the righteous <06662 +tsaddiyq > in judgment <04941 +mi shpat > .

05186 PRO 021 001 . The king s <04428 +melek > heart <03820 +leb > [is] in the hand <03027 +yad > of the LORD <03068 +Y@hovah > , [as] the rivers <06388 +peleg > of water <04325 +mayim > : he turneth <{05186} +natah > it whithersoever he will <02654 +chaphets > .

05186 PRO 022 017 . Bow <05186 +natah > down <{05186} +natah > thine ear <00241 +>ozen > , and hear <08085 +shama< > the words <01697 +dabar > of the wise <02450 +chakam > , and apply <07896 +shiyth > thine heart <03820 +leb > unto my knowledge <01847 +da<ath > .

05186 PRO 022 017 . Bow <{05186} +natah > down <05186 +natah > thine ear <00241 +>ozen > , and hear <08085 +shama< > the words <01697 +dabar > of the wise <02450 +chakam > , and apply <07896 +shiyth > thine heart <03820 +leb > unto my knowledge <01847 +da<ath > .

05186 ISA 003 016 . Moreover the LORD <03068 +Y@hovah > saith <00559 +>amar > , Because the daughters <01121 +ben > of Zion <06726 +Tsiyown > are haughty <01361 +gabahh > , and walk <03212 +yalak > with stretched <{05186} +natah > forth necks <01627 +garown > and wanton <08265 +saqar > eyes <05869 +<ayin > , walking <01980 +halak > and mincing <02952 +taphaph > [as] they go <03212 +yalak > , and making a tinkling <05913 +<akac > with their feet <07272 +regel > :

05186 ISA 005 025 Therefore is the anger <00639 +>aph > of the LORD <03068 +Y@hovah > kindled <02734 +charah > against his people <05971 +<am > , and he hath stretched <05186 +natah > forth his hand <03027 +yad > against <05921 +<al > them , and hath smitten <05221 +nakah > them : and the hills <02022 +har > did tremble <07264 +ragaz > , and their carcasses <05038 +n@belah > [were] torn <05478 +cuwchah > in the midst <07130 +qereb > of the streets <02351 +chuwts > . For all <03605 +kol > this <02063 +zo>th > his anger <00639 +>aph > is not turned <07725 +shuwb > away , but his hand <03027 +yad > [is] stretched
12/8/2021

<{05186} +natah > out still <05750 +<owd > .

05186 ISA 005 025 Therefore is the anger <00639 +>aph > of the LORD <03068 +Y@hovah > kindled <02734 +charah > against his people <05971 +<am > , and he hath stretched <{05186} +natah > forth his hand <03027 +yad > against <05921 +<al > them , and hath smitten <05221 +nakah > them : and the hills <02022 +har > did tremble <07264 +ragaz > , and their carcasses <05038 +n@belah > [were] torn <05478 +cuwchah > in the midst <07130 +qereb > of the streets <02351 +chuwts > . For all <03605 +kol > this <02063 +zo>th > his anger <00639 +>aph > is not turned <07725 +shuwb > away , but his hand <03027 +yad > [is] stretched <05186 +natah > out still <05750 +<owd > .

05186 NUM 021 022 Let me pass <05674 +<abar > through thy land <00776 +>erets > : we will not turn <{05186} +natah > into the fields <07704 +sadeh > , or into the vineyards <03754 +kerem > ; we will not drink <08354 +shathah > [of] the waters <04325 +mayim > of the well <00875 +@>er > : [but] we will go <03212 +yalak > along by the king s <04428 +melek > [high] way <01870 +derek > , until <05704 +<ad > we be past <05674 +<abar > thy borders <01366 +g@buwl > .

05186 ISA 009 017 Therefore the Lord <00136 +>Adonay > shall have no <03808 +lo> > joy <08055 +samach > in their young <00970 +bachuwr > men , neither <03808 +lo> > shall have mercy <07355 +racham > on their fatherless <03490 +yathowm > and widows <00490 +>almanah > : for every <03605 +kol > one [is] an hypocrite <02611 +chaneph > and an evildoer <07489 +ra<a< > , and every <03605 +kol > mouth <06310 +peh > speaketh <01696 +dabar > folly <05039 +n@balah > . For all <03605 +kol > this <02063 +zo>th > his anger <00639 +>aph > is not turned <07725 +shuwb > away , but his hand <03027 +yad > [is] stretched <{05186} +natah > out still <05750 +<owd > .

05186 ISA 009 021 Manasseh <04519 +M@nashsheh > , Ephraim <00669 +>Ephrayim > ; and Ephraim <00669 +>Ephrayim > , Manasseh <04519 +M@nashsheh > : [and] they together <03162 +yachad > [shall be] against <05921 +<al > Judah <03063 +Y@huwdah > . For all <03605 +kol > this <02063 +zo>th > his anger <00639 +>aph > is not turned <07725 +shuwb > away , but his hand <03027 +yad > [is] stretched <{05186} +natah > out still <05750 +<owd > .

05186 ISA 010 002 To turn <05186 +natah > aside <{05186} +natah > the needy <01800 +dal > from judgment <01779 +diyn > , and to take <01497 +gazal > away <01497 +gazal > the right <04941 +mishpat > from the poor <06041 +<aniy > of my people <05971 +<am > , that widows <00490 +>almanah > may be their prey <07998 +shalal > , and [that] they may rob <00962 +bazaz > the fatherless <03490 +yathowm > !

05186 ISA 010 002 To turn <{05186} +natah > aside <05186 +natah > the needy <01800 +dal > from judgment <01779 +diyn > , and to take <01497 +gazal > away <01497 +gazal > the right <04941 +mishpat > from the poor <06041 +<aniy > of my people <05971 +<am > , that widows <00490 +>almanah > may be their prey <07998 +shalal > , and [that] they may rob <00962 +bazaz > the fatherless <03490 +yathowm > !

05186 ISA 010 004 Without <01115 +biltiy > me they shall bow <03766 +kara< > down <03766 +kara< > under <08478 +tachath > the prisoners <00616 +>acciyr > , and they shall fall <05307 +naphal > under <08478 +tachath > the slain <02026 +harag > . For all <03605 +kol > this <02063 +zo>th > his anger <00639 +>aph > is not turned <07725 +shuwb > away , but his hand <03027 +yad > [is] stretched <{05186} +natah > out still <05750 +<owd > .

05186 ISA 014 026 This <02063 +zo>th > [is] the purpose <06098 +<etsah > that is purposed <03289 +ya<ats > upon the whole <03605 +kol > earth <00776 +>erets > : and this <02063 +zo>th > [is] the hand <03027 +yad > that is stretched <{05186} +natah > out upon all <03605 +kol > the nations <01471 +gowy > .

05186 ISA 014 027 For the LORD <03068 +Y@hovah > of hosts <06635 +tsaba> > hath purposed <03289 +ya<ats > , and who <04310 +miy > shall disannul <06565 +parar > [it] ? and his hand <03027 +yad > [is] stretched <{05186} +natah > out , and who <04310 +miy > shall turn <07725 +shuwb > it back <07725 +shuwb > ?

05186 ISA 023 011 He stretched <{05186} +natah > out his hand <03027 +yad > over <05921 +<al > the sea <03220 +yam > , he shook <07264 +ragaz > the kingdoms <04467 +mamlakah > : the LORD <03068 +Y@hovah > hath given a commandment <06680 +tsavah > against <00413 +>el > the merchant <03667 +K@na<an > [city] , to destroy <08045 +shamad > the strong <04581 +ma<owz > holds <04581 +ma<owz > thereof .

05186 ISA 029 021 That make a man <00120 +>adam > an offender <02398 +chata> > for a word <01697 +dabar > , and lay a snare <06983 +qowsh > for him that reproveth <03198 +yakach > in the gate <08179 +sha<ar > , and turn <05186 +natah > aside <{05186} +natah > the just <06662 +tsaddiyq > for a thing of nought <08414 +tohuw > .

05186 ISA 029 021 That make a man <00120 +>adam > an offender <02398 +chata> > for a word <01697 +dabar > , and lay a snare <06983 +qowsh > for him that reproveth <03198 +yakach > in the gate <08179 +sha<ar > , and turn <{05186} +natah > aside <05186 +natah > the just <06662 +tsaddiyq > for a thing of nought <08414 +tohuw > .

05186 ISA 030 011 Get you out of the way <01870 +derek > , turn <05186 +natah > aside <{05186} +natah > out of the path <00734 +>orach > , cause the Holy <06918 +qadowsh > One of Israel <03478 +Yisra>el > to cease <07673 +shabath > from before <06440 +paniym > us .

05186 ISA 030 011 Get you out of the way <01870 +derek > , turn <{05186} +natah > aside <05186 +natah > out of the path <00734 +>orach > , cause the Holy <06918 +qadowsh > One of Israel <03478 +Yisra>el > to cease <07673 +shabath > from before <06440 +paniym > us .

05186 ISA 031 003 Now the Egyptians <04714 +Mitsrayim > [are] men <00120 +>adam > , and not God <00410 +>el > ; and their horses <05483 +cuwc > flesh <01320 +basar > , and not spirit <07307 +ruwach > . When the LORD <03068 +Y@hovah > shall stretch <{05186} +natah > out his hand <03027 +yad > , both <08147 +sh@nayim > he that helpeth <05826 +<azar > shall fall <03782 +kashal > , and he that is holpen <05826 +<azar > shall fall <05307 +naphal > down , and they all <03605 +kol > shall fail <03615 +kalah > together <03162 +yachad > .

05186 ISA 034 011 But the cormorant <06893 +qa>ath > and the bittern <07090 +qippowd > shall possess <03423 +yarash > it ; the owl <03244 +yanshuwph > also and the raven <06158 +<oreb > shall dwell <07931 +shakan > in it : and he shall stretch <{05186} +natah > out upon it the line <06957 +qav > of confusion <05414 +nathan > , and the stones <68> of emptiness <00922 +bohuv > .

05186 ISA 040 022 [It is] he that sitteth <03427 +yashab >

upon the circle <02329 +chuwg > of the earth <00776 +>erets > ,
and the inhabitants <03427 +yashab > thereof [are] as
grasshoppers <02284 +chagab > ; that stretcheth <{05186} +natah
> out the heavens <08064 +shamayim > as a curtain <01852 +doq > ,
and spreadeth <04969 +mathach > them out as a tent <00168
+>ohel > to dwell <03427 +yashab > in :

05186 ISA 042 005 . Thus <03541 +koh > saith <00559 +>amar > God
<00410 +>el > the LORD <03068 +Y@hovah > , he that created
<01254 +bara> > the heavens <08064 +shamayim > , and stretched
<{05186} +natah > them out ; he that spread <07554 +raqa< >
forth the earth <00776 +>erets > , and that which cometh <06631
+tse>etsa> > out of it ; he that giveth <05414 +nathan > breath
<05397 +n@shamah > unto the people <05971 +<am > upon it , and
spirit <07307 +ruwach > to them that walk <01980 +halak >
therein :

05186 ISA 044 020 He feedeth <07462 +ra<ah > on ashes <00665
+>epher > : a deceived <02048 +hathal> heart <03820 +leb > hath
turned <05186 +natah > him aside <{05186} +natah > , that he
cannot <03808 +lo> > deliver <05337 +natsal > his soul <05315
+nephesh > , nor <03808 +lo> > say <00559 +>amar > , [Is there
] not a lie <03576 +kazab > in my right <03225 +yamiyn > hand
<03225 +yamiyn > ?

05186 ISA 044 020 He feedeth <07462 +ra<ah > on ashes <00665
+>epher > : a deceived <02048 +hathal> heart <03820 +leb > hath
turned <{05186} +natah > him aside <05186 +natah > , that he
cannot <03808 +lo> > deliver <05337 +natsal > his soul <05315
+nephesh > , nor <03808 +lo> > say <00559 +>amar > , [Is there
] not a lie <03576 +kazab > in my right <03225 +yamiyn > hand
<03225 +yamiyn > ?

05186 ISA 044 024 Thus <03541 +koh > saith <00559 +>amar > the
LORD <03068 +Y@hovah > , thy redeemer <01350 +ga>al > , and he
that formed <03335 +yatsar > thee from the womb <00990 +beten > ,
I [am] the LORD <03068 +Y@hovah > that maketh <06213 +<asah >
all <03605 +kol > [things] ; that stretcheth <{05186} +natah >
forth the heavens <08064 +shamayim > alone <00905 +bad > ; that
spreadeth <07554 +raqa< > abroad <07554 +raqa< > the earth
<00776 +>erets > by myself ;

05186 ISA 045 012 I have made <06213 +<asah > the earth <00776
+>erets > , and created <01254 +bara> > man <00120 +>adam > upon
it : I , [even] my hands <03027 +yad > , have stretched
<{05186} +natah > out the heavens <08064 +shamayim > , and all
<03605 +kol > their host <06635 +tsaba> > have I commanded
<06680 +tsavah > .

05186 ISA 051 013 And forgettest <07911 +shakach > the LORD
<03068 +Y@hovah > thy maker <06213 +<asah > , that hath
stretched <{05186} +natah > forth the heavens <08064 +shamayim >
, and laid the foundations <03245 +yacad > of the earth <00776
+>erets > ; and hast feared <06342 +pachad > continually <08548
+tamiyd > every <03605 +kol > day <03117 +yowm > because <06440
+paniym > of the fury <02534 +chemah > of the oppressor <06693
+tsuwq > , as if he were ready <03559 +kuwn > to destroy <07843
+shachath > ? and where <00346 +>ayeh > [is] the fury <02534
+chemah > of the oppressor <06693 +tsuwq > ?

05186 ISA 054 002 Enlarge <07337 +rachab > the place <04725
+maqowm > of thy tent <00168 +>ohel > , and let them stretch
<{05186} +natah > forth the curtains <03407 +y@riy<ah > of thine
habitations <04908 +mishkan > : spare <02820 +chasak > not ,
lengthen <00748 +>arak > thy cords <04340 +meythar > , and
strengthen <02388 +chazaq > thy stakes <03489 +yathed > ;

05186 ISA 055 003 Incline <{05186} +natah > your ear <00241 +>ozen > , and come <03212 +yalak > unto me : hear <08085 +shama< > , and your soul <05315 +nephesh > shall live <02421 +chayah > ; and I will make <03772 +karath > an everlasting <05769 +<owlam > covenant <01285 +b@riyth > with you , [even] the sure <00539 +>aman > mercies <02617 +cheched > of David <01732 +David > .

05186 ISA 066 012 For thus <03541 +koh > saith <00559 +>amar > the LORD <03068 +Y@hovah > , Behold <02005 +hen > , I will extend <{05186} +natah > peace <07965 +shalowm > to her like a river <05104 +nahar > , and the glory <03519 +kabowd > of the Gentiles <01471 +gowy > like a flowing <07857 +shataph > stream <05158 +nachal > : then shall ye suck <03243 +yanaq > , ye shall be borne <05375 +nasa> > upon [her] sides <06654 +tsad > , and be dandled <08173 +sha<a< > upon [her] knees <01290 +berek > .

05186 JER 005 025 . Your iniquities <05771 +<avon > have turned <{05186} +natah > away these <00428 +>el - leh > [things] , and your sins <02403 +chatta>ah > have withholden <04513 +mana< > good <02896 +towb > [things] from you .

05186 JER 006 004 Prepare <06942 +qadash > ye war <04421 +milchamah > against <05921 +<al > her ; arise <06965 +quwm > , and let us go <05927 +<alah > up at noon <06672 +tsohar > . Woe <00188 +>owy > unto us ! for the day <03117 +yowm > goeth <06437 +panah > away , for the shadows <06752 +tselel > of the evening <06153 +<ereb > are stretched <{05186} +natah > out .

05186 JER 006 012 And their houses <01004 +bayith > shall be turned <05437 +cabab > unto others <00312 +>acher > , [with their] fields <07704 +sadeh > and wives <00802 +>ishshah > together <03162 +yachad > : for I will stretch <{05186} +natah > out my hand <03027 +yad > upon the inhabitants <03427 +yashab > of the land <00776 +>erets > , saith <05002 +n@>um > the LORD <03068 +Y@hovah > .

05186 JER 007 024 But they hearkened <08085 +shama< > not , nor <03808 +lo> > inclined <{05186} +natah > their ear <00241 +>ozen > , but walked <03212 +yalak > in the counsels <04156 +mow<etsah > [and] in the imagination <08307 +sh@riyruwth > of their evil <07451 +ra< > heart <03820 +leb > , and went <01961 +hayah > backward <00268 +>achowr > , and not forward <06440 +paniym > .

05186 JER 007 026 Yet they hearkened <08085 +shama< > not unto me , nor <03808 +lo> > inclined <{05186} +natah > their ear <00241 +>ozen > , but hardened <07185 +qashah > their neck <06202 +<araph > : they did worse <07489 +ra<a< > than their fathers <1> .

05186 JER 010 012 He hath made <06213 +<asah > the earth <00776 +>erets > by his power <03581 +koach > , he hath established <03559 +kuwn > the world <08398 +tebel > by his wisdom <02451 +chokmah > , and hath stretched <{05186} +natah > out the heavens <08064 +shamayim > by his discretion <08394 +tabuwn > .

05186 JER 010 020 My tabernacle <00168 +>ohel > is spoiled <07703 +shadad > , and all <03605 +kol > my cords <04340 +meythar > are broken <05423 +nathaq > : my children <01121 +ben > are gone <03318 +yatsa> > forth <03318 +yatsa> > of me , and they [are] not : [there is] none <00369 +>ayin > to stretch <{05186} +natah > forth my tent <00168 +>ohel > any more <05750 +<owd > , and to set <06965 +quwm > up my curtains <03407 +y@riy<ah > .

05186 JER 011 008 Yet they obeyed <08085 +shama< > not , nor <03808 +lo> > inclined <{05186} +natah > their ear <00241 +>ozen > , but walked <03212 +yalak > every <00376 +>iysh > one <00376 +>iysh > in the imagination <08307 +sh@riyruwth > of their evil <07451 +ra< > heart <03820 +leb > : therefore I will bring <00935 +bow> > upon them all <03605 +kol > the words <01697 +dabar > of this <02088 +zeh > covenant <01285 +b@riyuth > , which <00834 +>aher > I commanded <06680 +tsavah > [them] to do <06213 +<asah > ; but they did <06213 +<asah > [them] not .

05186 JER 014 008 0 the hope <04723 +miqveh > of Israel <03478 +Yisra>el > , the saviour <03467 +yasha< > thereof in time <06256 +<eth > of trouble <06869 +tsarah > , why <04100 +mah > shouldst thou be as a stranger <01616 +ger > in the land <00776 +>erets > , and as a wayfaring <00732 +>arach > man [that] turneth <05186 +natah > aside <{05186} +natah > to tarry <03885 +luwn > for a night ?

05186 JER 014 008 0 the hope <04723 +miqveh > of Israel <03478 +Yisra>el > , the saviour <03467 +yasha< > thereof in time <06256 +<eth > of trouble <06869 +tsarah > , why <04100 +mah > shouldst thou be as a stranger <01616 +ger > in the land <00776 +>erets > , and as a wayfaring <00732 +>arach > man [that] turneth <{05186} +natah > aside <05186 +natah > to tarry <03885 +luwn > for a night ?

05186 JER 015 006 Thou hast forsaken <05203 +natash > me , saith <05002 +n@>um > the LORD <03068 +Y@hovah > , thou art gone <03212 +yalak > backward <00268 +>achowr > : therefore will I stretch <{05186} +natah > out my hand <03027 +yad > against <05921 +<al > thee , and destroy <07843 +shachath > thee ; I am weary <03811 +la>ah > with repenting <05162 +nacham > .

05186 JER 017 023 But they obeyed <08085 +shama< > not , neither <03808 +lo> > inclined <{05186} +natah > their ear <00241 +>ozen > , but made their neck <06202 +<araph > stiff <07185 +qashah > , that they might not hear <08085 +shama< > , nor <01115 +biltiy > receive <03947 +laqach > instruction <04148 +muwcar > .

05186 JER 021 005 And I myself <00589 +>aniy > will fight <03898 +lacham > against you with an outstretched <{05186} +natah > hand <03027 +yad > and with a strong <02389 +chazaq > arm <02220 +z@rowa< > , even in anger <00639 +>aph > , and in fury <02534 +chemah > , and in great <01419 +gadowl > wrath <07110 +qetseph > .

05186 JER 025 004 And the LORD <03068 +Y@hovah > hath sent <07971 +shalach > unto you all <03605 +kol > his servants <05650 +<ebed > the prophets <05030 +nabi> > , rising <07925 +shakam > early <07925 +shakam > and sending <07971 +shalach > [them] ; but ye have not hearkened <08085 +shama< > , nor <03808 +lo> > inclined <{05186} +natah > your ear <00241 +>ozen > to hear <08085 +shama< > .

05186 JER 027 005 I have made <06213 +<asah > the earth <00776 +>erets > , the man <00120 +>adam > and the beast <00929 +b@hemah > that [are] upon the ground <00776 +>erets > , by my great <01419 +gadowl > power <03581 +koach > and by my outstretched <{05186} +natah > arm <02220 +z@rowa< > , and have given <05414 +nathan > it unto whom <00834 +>aher > it seemed <05869 +<ayin > meet <03474 +yashar > unto me .

05186 JER 032 017 Ah <00162 +>ahahh > Lord <00136 +>Adonay > GOD <03069 +Y@hovi h > ! behold <02009 +hinneh > , thou hast made <06213 +<asah > the heaven <08064 +shamayim > and the earth <00776 +>erets > by thy great <01419 +gadowl > power <03581

+koach > and stretched <{05186} +natah > out arm <02220 +z@rowa<
> , [and] there is nothing too hard <06381 +pala> > for thee :

05186 JER 032 021 And hast brought <03318 +yatsa> > forth <03318
+yatsa> > thy people <05971 +<am > Israel <03478 +Yisra>el > out
of the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > with
signs <00226 +>owth > , and with wonders <04159 +mowpheth > ,
and with a strong <02389 +chazaq > hand <03027 +yad > , and with
a stretched <{05186} +natah > out arm <00248 +>ezrowa< > , and
with great <01419 +gadawl > terror <04172 +mowra> > ;

05186 JER 034 014 At the end <07093 +qets > of seven <07651
+sheba< > years <08141 +shaneh > let ye go <07971 +shalach >
every man <00376 +>iysh > his brother <00251 +>ach > an Hebrew
<05680 +<l briy > , which <00834 +>aher > hath been <01961 +hayah
> sold <04376 +makar > unto thee ; and when he hath served
<05647 +<abad > thee six <08337 +shesh > years <08141 +shaneh > ,
thou shalt let him go <07971 +shalach > free <02670 +chophshiy
> from thee : but your fathers <1> hearkened <08085 +shama< >
not unto me , neither <03808 +lo> > inclined <{05186} +natah >
their ear <00241 +>ozen > .

05186 JER 035 015 I have sent <07971 +shalach > also unto you
all <03605 +kol > my servants <05650 +<ebed > the prophets
<05030 +nabiy> > , rising <07925 +shakam > up early <07925
+shakam > and sending <07971 +shalach > [them] , saying <00559
+>amar > , Return <07725 +shuwb > ye now <04994 +na> > every man
<00376 +>iysh > from his evil <07451 +ra< > way <01870 +derek > ,
and amend <03190 +yatab > your doings <04611 +ma<alal > , and
go <03212 +yalak > not after <00310 +>achar > other <00312
+>acher > gods <00430 +>elohiyim > to serve <05647 +<abad > them ,
and ye shall dwell <03427 +yashab > in the land <00127 +>adamah
> which <00834 +>aher > I have given <05414 +nathan > to you and
to your fathers <1> : but ye have not inclined <{05186} +natah >
your ear <00241 +>ozen > , nor <03808 +lo> > hearkened <08085
+shama< > unto me .

05186 JER 043 010 And say <00559 +>amar > unto them , Thus
<03541 +koh > saith <00559 +>amar > the LORD <03068 +Y@hovah >
of hosts <06635 +tsaba> > , the God <00430 +>elohiyim > of Israel
<03478 +Yisra>el > ; Behold <02005 +hen > , I will send <07971
+shalach > and take <03947 +laqach > Nebuchadrezzar <05019
+N@buwkadne>ttsar > the king <04428 +melek > of Babylon <00894
+Babel > , my servant <05650 +<ebed > , and will set <07760
+suwm > his throne <03678 +kicce> > upon these <00428 +>el - leh
> stones <68> that I have hid <02934 +taman > ; and he shall
spread <{05186} +natah > his royal <08237 +shaphruwr > pavilion
<08237 +shaphruwr > over <05921 +<al > them .

05186 JER 044 005 But they hearkened <08085 +shama< > not , nor
<03808 +lo> > inclined <{05186} +natah > their ear <00241 +>ozen
> to turn <07725 +shuwb > from their wickedness <07451 +ra< > ,
to burn <06999 +qatar > no <01115 +biltiy > incense <06999
+qatar > unto other <00312 +>acher > gods <00430 +>elohiyim > .

05186 JER 051 015 He hath made <06213 +<asah > the earth <00776
+>erets > by his power <03581 +koach > , he hath established
<03559 +kuwn > the world <08398 +tebel > by his wisdom <02451
+chokmah > , and hath stretched <{05186} +natah > out the heaven
<08064 +shamayim > by his understanding <08394 +tabuwn > .

05186 JER 051 025 Behold <02005 +hen > , I [am] against <00413
+>el > thee , O destroying <04889 +mashchiyth > mountain <02022
+har > , saith <05002 +n@>um > the LORD <03068 +Y@hovah > ,
which destroyest <07843 +shachath > all <03605 +kol > the earth
<00776 +>erets > : and I will stretch <{05186} +natah > out mine
12/8/2021

hand <03027 +yad > upon thee , and roll <01556 +galal > thee down from the rocks <05553 +cela< > , and will make <05414 +nathan > thee a burnt <08316 +s@rephah > mountain <02022 +har >

05186 LAM 002 008 The LORD <03068 +Y@hovah > hath purposed <02803 +chashab > to destroy <07843 +shachath > the wall <02346 +chowmah > of the daughter <01323 +bath > of Zion <06726 +Tsiyown > : he hath stretched <{05186} +natah > out a line <06957 +qav > , he hath not withdrawn <07725 +shuwb > his hand <03027 +yad > from destroying <01104 +bala< > : therefore he made the rampart <02426 +cheyl > and the wall <02346 +chowmah > to lament <56> ; they languished <00535 +>amal > together <03162 +yachad > .

05186 LAM 003 035 To turn <05186 +natah > aside <{05186} +natah > the right <04941 +mishpat > of a man <01397 +geber > before <05048 +neged > the face <06440 +paniym > of the most <05945 +>el yown > High <05945 +>el yown > ,

05186 LAM 003 035 To turn <{05186} +natah > aside <05186 +natah > the right <04941 +mishpat > of a man <01397 +geber > before <05048 +neged > the face <06440 +paniym > of the most <05945 +>el yown > High <05945 +>el yown > ,

05186 EZE 001 022 And the likeness <01823 +d@muwth > of the firmament <07549 +raqiya< > upon the heads <07218 +ro>sh > of the living <02416 +chay > creature <02416 +chay > [was] as the colour <05869 +<ayin > of the terrible <03372 +yare> > crystal <07140 +qerach > , stretched <{05186} +natah > forth over <05921 +<al > their heads <07218 +ro>sh > above <04605 +ma<al > .

05186 EZE 006 014 So will I stretch <{05186} +natah > out my hand <03027 +yad > upon them , and make <05414 +nathan > the land <00776 +>erets > desolate <08077 +sh@mamah > , yea , more desolate <08047 +shammah > than the wilderness <04057 +midbar > toward Di blath <01689 +Diblah > , in all <03605 +kol > their habitations <04186 +mowshab > : and they shall know <03045 +yada< > that I [am] the LORD <03068 +Y@hovah > .

05186 EZE 014 009 And if <03588 +kiy > the prophet <05030 +nabiy> > be deceived <06601 +pathah > when <03588 +kiy > he hath spoken <01696 +dabar > a thing <01697 +dabar > , I the LORD <03068 +Y@hovah > have deceived <06601 +pathah > that prophet <05030 +nabiy> > , and I will stretch <{05186} +natah > out my hand <03027 +yad > upon him , and will destroy <08045 +shamad > him from the midst <08432 +tavek > of my people <05971 +<am > Israel <03478 +Yisra>el > .

05186 EZE 014 013 Son <01121 +ben > of man <00120 +>adam > , when <03588 +kiy > the land <00776 +>erets > sinneth <02398 +chata> > against me by trespassing <04603 +ma<al > grievously <04604 +ma<al > , then will I stretch <{05186} +natah > out mine hand <03027 +yad > upon it , and will break <07665 +shabar > the staff <04294 +matteh > of the bread <03899 +lechem > thereof , and will send <07971 +shalach > famine <07458 +ra<ab > upon it , and will cut <03772 +karath > off man <00120 +>adam > and beast <00929 +b@hemah > from it :

05186 EZE 016 027 Behold <02009 +hinneh > , therefore I have stretched <{05186} +natah > out my hand <03027 +yad > over <05921 +<al > thee , and have diminished <01639 +gara< > thine ordinary <02706 +choq > [food] , and delivered <05414 +nathan > thee unto the will <05314 +naphash > of them that hate <08130 +sane> > thee , the daughters <01121 +ben > of the Philistines <06430 +P@lishtiy > , which are ashamed <03637 +kalam > of thy

Iewd <02154 +zimmah > way <01870 +derek > .

05186 EZE 020 033 . [As] I live , saith <05002 +n@um > the Lord <00136 +>Adonay > GOD <03069 +Y@hovih > , surely with a mighty <02389 +chazaq > hand <03027 +yad > , and with a stretched <{05186} +natah > out arm <02220 +z@rowa< > , and with fury <02534 +chemah > poured <08210 +shaphak > out , will I rule <04427 +malak > over you :

05186 EZE 020 034 And I will bring <03318 +yatsa> > you out from the people <05971 +<am > , and will gather <06908 +qabats > you out of the countries <00776 +>erets > wherein <00834 +>aher > ye are scattered <06327 +puwts > , with a mighty <02389 +chazaq > hand <03027 +yad > , and with a stretched <{05186} +natah > out arm <02220 +z@rowa< > , and with fury <02534 +chemah > poured <08210 +shaphak > out .

05186 EZE 025 007 Behold <02005 +hen > , therefore <03651 +ken > I will stretch <{05186} +natah > out mine hand <03027 +yad > upon thee , and will deliver <05414 +nathan > thee for a spoil <00957 +baz > to the heathen <01471 +gowy > ; and I will cut <03772 +karath > thee off from the people <05971 +<am > , and I will cause thee to perish <6> out of the countries <00776 +>erets > : I will destroy <08045 +shamad > thee ; and thou shalt know <03045 +yada< > that I [am] the LORD <03068 +Y@hovah > .

05186 EZE 025 013 Therefore <03651 +ken > thus <03541 +koh > saith <00559 +>amar > the Lord <00136 +>Adonay > GOD <03069 +Y@hovih > ; I will also stretch <{05186} +natah > out mine hand <03027 +yad > upon Edom <00123 +>Edom > , and will cut <03772 +karath > off man <00120 +>adam > and beast <00929 +b@hemah > from it ; and I will make <05414 +nathan > it desolate <02723 +chorbah > from Teman <08487 +Teyman > ; and they of Dedan <01719 +D@dan > shall fall <05307 +naphal > by the sword <02719 +chereb > .

05186 EZE 025 016 Therefore <03651 +ken > thus <03541 +koh > saith <00559 +>amar > the Lord <00136 +>Adonay > GOD <03069 +Y@hovih > ; Behold <02005 +hen > , I will stretch <{05186} +natah > out mine hand <03027 +yad > upon the Philistines <06430 +P@lishtiy > , and I will cut <03772 +karath > off the Cherethims <03774 +K@rethiy > , and destroy <9> the remnant <07611 +sh@>eriyth > of the sea <03220 +yam > coast <02348 +chowph > .

05186 EZE 030 025 But I will strengthen <02388 +chazaq > the arms <02220 +z@rowa< > of the king <04428 +melek > of Babylon <00894 +Babel > , and the arms <02220 +z@rowa< > of Pharaoh <06547 +Par<oh > shall fall <05307 +naphal > down ; and they shall know <03045 +yada< > that I [am] the LORD <03068 +Y@hovah > , when I shall put <05414 +nathan > my sword <02719 +chereb > into the hand <03027 +yad > of the king <04428 +melek > of Babylon <00894 +Babel > , and he shall stretch <{05186} +natah > it out upon the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > .

05186 EZE 035 003 And say <00559 +>amar > unto it , Thus <03541 +koh > saith <00559 +>amar > the Lord <00136 +>Adonay > GOD <03069 +Y@hovih > ; Behold <02005 +hen > , O mount <02022 +har > Seir <08165 +Se<iyr > , I [am] against <00413 +>el > thee , and I will stretch <{05186} +natah > out mine hand <03027 +yad > against <05921 +<al > thee , and I will make <05414 +nathan > thee most desolate <08077 +sh@mamah > .

05186 DAN 009 018 O my God <00430 +>elohiyim > , incline <{05186} >

+natah > thine ear <00241 +>ozen > , and hear <08085 +shama< > ;
 open <06491 +paqach > thine eyes <05869 +<ayin > , and behold
 <07200 +ra>ah > our desolations <08074 +shamem > , and the city
 <05892 +<iyr > which <00834 +>aher > is called <07121 +qara> >
 by thy name <08034 +shem > : for we do not present <05307
 +naphal > our supplications <08469 +tachanuwn > before <06440
 +paniym > thee for our righteousnesses <06666 +ts@daqah > , but
 for thy great <07227 +rab > mercies <07356 +racham > .

05186 HOS 011 004 I drew <04900 +mashak > them with cords <02256
 +chebel > of a man <00120 +>adam > , with bands <05688 +<aboth >
 of love <00160 +>ahabah > : and I was to them as they that take
 <07311 +ruwm > off <05921 +<al > the yoke <05923 + on
 <05921 +<al > their jaws <03895 +l@chiy > , and I laid <{05186}
 +natah > meat <00398 +>akal > unto them .

05186 AMO 002 007 That pant <07602 +sha>aph > after <05921 +<al
 > the dust <06083 +<aphar > of the earth <00776 +>erets > on the
 head <07218 +ro>sh > of the poor <01800 +dal > , and turn <05186
 +natah > aside <{05186} +natah > the way <01870 +derek > of the
 meek <06035 +<anav > : and a man <00376 +>iysh > and his father
 <2> will go <03212 +yalak > in unto the [same] maid <05291
 +na<arah > , to profane <02490 +chalal > my holy <06944 +qodesh
 > name <08034 +shem > :

05186 AMO 002 007 That pant <07602 +sha>aph > after <05921 +<al
 > the dust <06083 +<aphar > of the earth <00776 +>erets > on the
 head <07218 +ro>sh > of the poor <01800 +dal > , and turn
 <{05186} +natah > aside <05186 +natah > the way <01870 +derek >
 of the meek <06035 +<anav > : and a man <00376 +>iysh > and his
 father <2> will go <03212 +yalak > in unto the [same] maid
 <05291 +na<arah > , to profane <02490 +chalal > my holy <06944
 +qodesh > name <08034 +shem > :

05186 AMO 002 008 And they lay <{05186} +natah > [themselves]
 down upon clothes <00899 +beged > laid to pledge <02254 +chabal
 > by every <03605 +kol > altar <04196 +mizbeach > , and they
 drink <08354 +shathah > the wine <03196 +yayin > of the
 condemned <06064 +<anash > [in] the house <01004 +bayith > of
 their god <00430 +>elohiym > .

05186 AMO 005 012 For I know <03045 +yada< > your mani fold
 <07227 +rab > transgressions <06588 +pesha< > and your mighty
 <06099 +<atsuwm > sins <02403 +chatta>ah > : they afflict <06887
 +tsarar > the just <06662 +tsaddiyq > , they take <03947 +laqach
 > a bribe <03724 +kopher > , and they turn <05186 +natah > aside
 <{05186} +natah > the poor <34> in the gate <08179 +sha<ar > [
 from their right] .

05186 AMO 005 012 For I know <03045 +yada< > your mani fold
 <07227 +rab > transgressions <06588 +pesha< > and your mighty
 <06099 +<atsuwm > sins <02403 +chatta>ah > : they afflict <06887
 +tsarar > the just <06662 +tsaddiyq > , they take <03947 +laqach
 > a bribe <03724 +kopher > , and they turn <{05186} +natah >
 aside <05186 +natah > the poor <34> in the gate <08179 +sha<ar >
 [from their right] .

05186 ZEP 001 004 I will also stretch <{05186} +natah > out mine
 hand <03027 +yad > upon Judah <03063 +Y@huwdah > , and upon all
 <03605 +kol > the inhabitants <03427 +yashab > of Jerusalem
 <03389 +Y@ruwshalaim > ; and I will cut <03772 +karath > off the
 remnant <07605 +sh@>ar > of Baal <01168 +Ba<al > from this place
 <04725 +maqowm > , [and] the name <08034 +shem > of the
 Chemarims <03649 +kamar > with the priests <03548 +kohen > ;

05186 ZEP 002 013 And he will stretch <{05186} +natah > out his
 12/8/2021

hand <03027 +yad > against <05921 +<al > the north <06828 +tsaphown > , and destroy <6> Assyria <00804 +>Ashshuwr > ; and will make <07760 +suwm > Ni neveh <05210 +Ni yn@veh > a desolation <08077 +sh@mamah > , [and] dry <06723 +tsiyah > like a wilderness <04057 +mi dbar > .

05186 ZEC 001 016 Therefore <03651 +ken > thus <03541 +koh > saith <00559 +>amar > the LORD <03068 +Y@hovah > ; I am returned <07725 +shuwb > to Jerusalem <03389 +Y@ruwshalaim > with mercies <07356 +racham > : my house <01004 +bayith > shall be built <01129 +banah > in it , saith <05002 +n@>um > the LORD <03068 +Y@hovah > of hosts <06635 +tsaba> > , and a line <06957 +qav > shall be stretched <{05186} +natah > forth upon Jerusalem <03389 +Y@ruwshalaim > .

05186 ZEC 012 001 . The burden <04853 +massa> > of the word <01697 +dabar > of the LORD <03068 +Y@hovah > for Israel <03478 +Yisra>el > , saith <05002 +n@>um > the LORD <03068 +Y@hovah > , which stretcheth <{05186} +natah > forth the heavens <08064 +shamayim > , and layeth the foundation <03248 +y@cuwdah > of the earth <00776 +>erets > , and formeth <03335 +yatsar > the spirit <07307 +ruwach > of man <00120 +>adam > within <07130 +qereb > him .

05186 MAL 003 005 And I will come <07126 +qarab > near <07126 +qarab > to you to judgment <04941 +mishpat > ; and I will be a swift <04116 +mahar > witness <05707 +<ed > against the sorcerers <03784 +kashaph > , and against the adulterers <05003 +na>aph > , and against false <08267 +sheqer > swearers <07650 +shaba< > , and against those that oppress <06231 +<ashaq > the hireling <07916 +sakiyr > in [his] wages <07939 +sakar > , the widow <00490 +>almanah > , and the fatherless <03490 +yathowm > , and that turn <05186 +natah > aside <{05186} +natah > the stranger <01616 +ger > [from his right <03225 +yami yn >] , and fear <03372 +yare> > not me , saith <00559 +>amar > the LORD <03068 +Y@hovah > of hosts <06635 +tsaba> > .

05186 MAL 003 005 And I will come <07126 +qarab > near <07126 +qarab > to you to judgment <04941 +mishpat > ; and I will be a swift <04116 +mahar > witness <05707 +<ed > against the sorcerers <03784 +kashaph > , and against the adulterers <05003 +na>aph > , and against false <08267 +sheqer > swearers <07650 +shaba< > , and against those that oppress <06231 +<ashaq > the hireling <07916 +sakiyr > in [his] wages <07939 +sakar > , the widow <00490 +>almanah > , and the fatherless <03490 +yathowm > , and that turn <{05186} +natah > aside <05186 +natah > the stranger <01616 +ger > [from his right <03225 +yami yn >] , and fear <03372 +yare> > not me , saith <00559 +>amar > the LORD <03068 +Y@hovah > of hosts <06635 +tsaba> > .

05186 PRO 004 020 . My son <01121 +ben > , attend <07181 +qashab > to my words <01697 +dabar > ; incline <{05186} +natah > thine ear <00241 +>ozen > unto my sayings <00561 +>emer > .

05186 GEN 012 008 And he removed <06275 +<athaq > from thence <08033 +sham > unto a mountain <02022 +har > on the east <06924 +qedem > of Bethel <01008 +Beyth - >El > , and pitched <{05186} +natah > his tent <00168 +>ohel > , [having] Bethel <01008 +Beyth - >El > on the west <03220 +yam > , and Hai <05857 +<Ay > on the east <06924 +qedem > : and there <08033 +sham > he builded <01129 +banah > an altar <04196 +miz beach > unto the LORD <03068 +Y@hovah > , and called <07121 +qara> > upon the name <08034 +shem > of the LORD <03068 +Y@hovah > .

05186 GEN 024 014 And let it come <00935 +bow> > to pass , that the damsel <05291 +na<arah > to whom <00834 +>aher > I shall say

<00559 +>amar > , Let <05186 +natah > down <{05186} +natah > thy pitcher <03537 +kad > , I pray <04994 +na> > thee , that I may drink <08354 +shathah > ; and she shall say <00559 +>amar > , Drink <08354 +shathah > , and I will give thy camels <01581 +gamal > drink <08248 +shaqah > also : [let the same <01931 +huw> > be] she [that] thou hast appointed <03198 +yakach > for thy servant <05650 +<ebed > Isaac <03327 +Yitschaq > ; and thereby <02004 +hen > shall I know <03045 +yada< > that thou hast shewed <06213 +<asah > kindness <02617 +cheched > unto my master <00113 +>adown > .

05186 GEN 024 014 And let it come <00935 +bow> > to pass , that the damsel <05291 +na<arah > to whom <00834 +>aher > I shall say <00559 +>amar > , Let <{05186} +natah > down <05186 +natah > thy pitcher <03537 +kad > , I pray <04994 +na> > thee , that I may drink <08354 +shathah > ; and she shall say <00559 +>amar > , Drink <08354 +shathah > , and I will give thy camels <01581 +gamal > drink <08248 +shaqah > also : [let the same <01931 +huw> > be] she [that] thou hast appointed <03198 +yakach > for thy servant <05650 +<ebed > Isaac <03327 +Yitschaq > ; and thereby <02004 +hen > shall I know <03045 +yada< > that thou hast shewed <06213 +<asah > kindness <02617 +cheched > unto my master <00113 +>adown > .

05186 GEN 026 025 And he builded <01129 +banah > an altar <04196 +mizbeach > there <08033 +sham > , and called <07121 +qara> > upon the name <08034 +shem > of the LORD <03068 +Y@hovah > , and pitched <{05186} +natah > his tent <00168 +>ohel > there <08033 +sham > : and there <08033 +sham > Isaac s <03327 +Yi tschaq > servants <05650 +<ebed > digged <03738 +karah > a well <00875 +>er > .

05186 GEN 033 019 And he bought <07069 +qanah > a parcel <02513 +chelqah > of a field <07704 +sadeh > , where <00834 +>aher > he had spread <{05186} +natah > his tent <00168 +>ohel > , at the hand <03027 +yad > of the children <01121 +ben > of Hamor <02544 +Chamowr > , Shechem s <07927 +Sh@kem > father <1> , for an hundred <03967 +me>ah > pieces of money <07192 +q@siytah > .

05186 GEN 035 021 . And Israel <03478 +Yi sra>el > journeyed <05265 +naca< > , and spread <{05186} +natah > his tent <00168 +>ohel > beyond <01973 +hal@ah > the tower <04026 +migdal > of Edar <05740 +<Eder > .

05186 GEN 038 001 . And it came <01961 +hayah > to pass at that time <06256 +<eth > , that Judah <03063 +Y@huwdah > went <03381 +yarad > down <03381 +yarad > from his brethren <00251 +>ach > , and turned <{05186} +natah > in to a certain <00376 +>iysh > Adullamite <05726 +<Adullamiy > , whose name <08034 +shem > [was] Hirah <02437 +Chiyrah > .

05186 GEN 038 016 And he turned <{05186} +natah > unto her by the way <01870 +derek > , and said <00559 +>amar > , Go <03051 +yahab > to , I pray <04994 +na> > thee , let me come <00935 +bow> > in unto thee ; (for he knew <03045 +yada< > not that she [was] his daughter <03618 +kallah > in law <03618 +kallah > .) And she said <00559 +>amar > , What <04100 +mah > wilt thou give <05414 +nathan > me , that thou mayest come <00935 +bow> > in unto me ?

05186 GEN 039 021 But the LORD <03068 +Y@hovah > was with Joseph <03130 +Yowceph > , and shewed <{05186} +natah > him mercy <02617 +cheched > , and gave <05414 +nathan > him favour <02580 +chen > in the sight <05869 +<ayin > of the keeper <08269 +sar > of the prison .

05186 GEN 049 015 And he saw <07200 +ra>ah > that rest <04496 +m@nuwchah > [was] good <02896 +towb > , and the land <00776 +>erets > that [it was] pleasant <05276 +na ; and bowed <{05186} +natah > his shoulder <07926 +sh@kem > to bear <05445 +cabal > , and became <01961 +hayah > a servant <05647 +<abad > unto tribute <04522 +mac > .

05186 EXO 006 006 Wherefore <03651 +ken > say <00559 +>amar > unto the children <01121 +ben > of Israel <03478 +Yisra>el > , I [am] the LORD <03068 +Y@hovah > , and I will bring <03318 +yatsa> > you out from under <08478 +tachath > the burdens <05450 +c@balah > of the Egyptians <04714 +Mi tsrayim > , and I will rid <05337 +natsal > you out of their bondage <05656 +<abodah > , and I will redeem <01350 +ga>al > you with a stretched <{05186} +natah > out arm <02220 +z@rowa< > , and with great <01419 +gadowl > judgments <08201 +shephet > :

05186 EXO 007 005 And the Egyptians <04714 +Mi tsrayim > shall know <03045 +yada< > that I [am] the LORD <03068 +Y@hovah > , when I stretch <{05186} +natah > forth mine hand <03027 +yad > upon Egypt <04714 +Mi tsrayim > , and bring <03318 +yatsa> > out the children <01121 +ben > of Israel <03478 +Yisra>el > from among <08432 +tavek > them .

05186 EXO 007 019 And the LORD <03068 +Y@hovah > spake <00559 +>amar > unto Moses <04872 +Mosheh > , Say <00559 +>amar > unto Aaron <00175 +>Aharown > , Take <03947 +laqach > thy rod <04294 +matteh > , and stretch <{05186} +natah > out thine hand <03027 +yad > upon the waters <04325 +mayim > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > , upon their streams <05104 +nahar > , upon their rivers <02975 +y@<or > , and upon their ponds <98> , and upon all <03605 +kol > their pools <04723 +mi qveh > of water <04325 +mayim > , that they may become <01961 +hayah > blood <01818 +dam > ; and [that] there may be blood <01818 +dam > throughout all <03605 +kol > the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > , both <08147 +sh@nayim > in [vessels of] wood <06086 +<ets > , and in [vessels of] stone <68> .

05186 EXO 008 005 And the LORD <03068 +Y@hovah > spake <00559 +>amar > unto Moses <04872 +Mosheh > , Say <00559 +>amar > unto Aaron <00175 +>Aharown > , Stretch <{05186} +natah > forth thine hand <03027 +yad > with thy rod <04294 +matteh > over <05921 +<al > the streams <05104 +nahar > , over <05921 +<al > the rivers <02975 +y@<or > , and over <05921 +<al > the ponds <98> , and cause frogs <06854 +ts@phardea< > to come <05927 +<alah > up upon the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > .

05186 EXO 008 006 And Aaron <00175 +>Aharown > stretched <{05186} +natah > out his hand <03027 +yad > over <05921 +<al > the waters <04325 +mayim > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > ; and the frogs <06854 +ts@phardea< > came <05927 +<alah > up , and covered <03680 +kacah > the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > .

05186 EXO 008 016 . And the LORD <03068 +Y@hovah > said <00559 +>amar > unto Moses <04872 +Mosheh > , Say <00559 +>amar > unto Aaron <00175 +>Aharown > , Stretch <{05186} +natah > out thy rod <04294 +matteh > , and smite <05221 +nakah > the dust <06083 +<aphar > of the land <00776 +>erets > , that it may become <01961 +hayah > lice <03654 +ken > throughout all <03605 +kol > the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > .

05186 EXO 008 017 And they did <06213 +<asah > so ; for Aaron <00175 +>Aharown > stretched <{05186} +natah > out his hand <03027 +yad > with his rod <04294 +matteh > , and smote <05221 +nakah > the dust <06083 +<aphar > of the earth <00776 +>erets >

, and it became <01961 +hayah > lice <03654 +ken > in man <00120 +>adam > , and in beast <00929 +b@hemah > ; all <03605 +kol > the dust <06083 +<aphar > of the land <00776 +>erets > became <01961 +hayah > lice <03654 +ken > throughout all <03605 +kol > the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > .

05186 EX0 009 022 . And the LORD <03068 +Y@hovah > said <00559 +>amar > unto Moses <04872 +Mosheh > , Stretch <{05186} +natah > forth thine hand <03027 +yad > toward heaven <08064 +shamayim > , that there may be hail <01259 +barad > in all <03605 +kol > the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > , upon man <00120 +>adam > , and upon beast <00929 +b@hemah > , and upon every <03605 +kol > herb <06212 +<eseb > of the field <07704 +sadeh > , throughout the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > .

05186 EX0 009 023 And Moses <04872 +Mosheh > stretched <{05186} +natah > forth his rod <04294 +matteh > toward heaven <08064 +shamayim > : and the LORD <03068 +Y@hovah > sent <05414 +nathan > thunder <06963 +qowl > and hail <01259 +barad > , and the fire <00784 +>esh > ran <01980 +halak > along upon the ground <00776 +>erets > ; and the LORD <03068 +Y@hovah > rained <04305 +matar > hail <01259 +barad > upon the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > .

05186 EX0 010 012 . And the LORD <03068 +Y@hovah > said <00559 +>amar > unto Moses <04872 +Mosheh > , Stretch <{05186} +natah > out thine hand <03027 +yad > over <05921 +<al > the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > for the locusts <00697 +>arbeh > , that they may come <05927 +<alah > up upon the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > , and eat <00398 +>akal > every <03605 +kol > herb <06212 +<eseb > of the land <00776 +>erets > , [even <00853 +>eth >] all <03605 +kol > that the hail <01259 +barad > hath left <07604 +sha>ar > .

05186 EX0 010 013 And Moses <04872 +Mosheh > stretched <{05186} +natah > forth his rod <04294 +matteh > over <05921 +<al > the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > , and the LORD <03068 +Y@hovah > brought <05090 +nahag > an east <06921 +qadiym > wind <07307 +ruwach > upon the land <00776 +>erets > all <03605 +kol > that day <03117 +yowm > , and all <03605 +kol > [that] night <03915 +layil > ; [and] when it was morning <01242 +boqer > , the east <06921 +qadiym > wind <07307 +ruwach > brought <05375 +nasa> > the locusts <00697 +>arbeh > .

05186 EX0 010 021 . And the LORD <03068 +Y@hovah > said <00559 +>amar > unto Moses <04872 +Mosheh > , Stretch <{05186} +natah > out thine hand <03027 +yad > toward heaven <08064 +shamayim > , that there may be darkness <02822 +choshek > over <05921 +<al > the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > , even darkness <02822 +choshek > [which] may be felt <04959 +mashash > .

05186 EX0 010 022 And Moses <04872 +Mosheh > stretched <{05186} +natah > forth his hand <03027 +yad > toward heaven <08064 +shamayim > ; and there was a thick <00653 +>aphelah > darkness <02822 +choshek > in all <03605 +kol > the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > three <07969 +shalowsh > days <03117 +yowm > :

05186 EX0 014 016 But lift <07311 +ruwm > thou up thy rod <04294 +matteh > , and stretch <{05186} +natah > out thine hand <03027 +yad > over <05921 +<al > the sea <03220 +yam > , and divide <01234 +baqa< > it : and the children <01121 +ben > of Israel <03478 +Yisra>el > shall go <00935 +bow> > on dry <03004 +yabbashah > [ground] through <08432 +tavek > the midst <08432

+tavek > of the sea <03220 +yam > .

05186 EX0 014 021 . And Moses <04872 +Mosheh > stretched <{05186} +natah > out his hand <03027 +yad > over <05921 +<al > the sea <03220 +yam > ; and the LORD <03068 +Y@hovah > caused the sea <03220 +yam > to go <03212 +yalak > [back] by a strong <05794 +<az > east <06921 +qadiym > wind <07307 +ruwach > all <03605 +kol > that night <03915 +layil > , and made <07760 +suwm > the sea <03220 +yam > dry <02724 +charabah > [land] , and the waters <04325 +mayim > were divided <01234 +baqa< > .

05186 EX0 014 026 And the LORD <03068 +Y@hovah > said <00559 +>amar > unto Moses <04872 +Mosheh > , Stretch <{05186} +natah > out thine hand <03027 +yad > over <05921 +<al > the sea <03220 +yam > , that the waters <04325 +mayim > may come <07725 +shuwb > again <07725 +shuwb > upon the Egyptians <04714 +Mitsrayim > , upon their chariots <07393 +rekeb > , and upon their horsemen <06571 +parash > .

05186 EX0 014 027 And Moses <04872 +Mosheh > stretched <{05186} +natah > forth his hand <03027 +yad > over <05921 +<al > the sea <03220 +yam > , and the sea <03220 +yam > returned <07725 +shuwb > to his strength <00386 +>eythan > when the morning <01242 +boqer > appeared <06437 +panah > ; and the Egyptians <04714 +Mitsrayim > fled <05127 +nuwc > against <07125 +qir>ah > it ; and the LORD <03068 +Y@hovah > overthrew <05287 +na<ar > the Egyptians <04714 +Mitsrayim > in the midst <08432 +tavek > of the sea <03220 +yam > .

05186 EX0 015 012 Thou stretchedst <{05186} +natah > out thy right <03225 +yamiyn > hand <03225 +yamiyn > , the earth <00776 +>erets > swallowed <01104 +bala< > them .

05186 EX0 023 002 Thou shalt not follow a multitude <07227 +rab > to [do] evil <07451 +ra< > ; neither <03808 +lo> > shalt thou speak <06030 +<anah > in a cause <07379 +riyb > to decline <05186 +natah > after <00310 +>achar > many <07227 +rab > to wrest <{05186} +natah > [judgment] :

05186 EX0 023 002 Thou shalt not follow a multitude <07227 +rab > to [do] evil <07451 +ra< > ; neither <03808 +lo> > shalt thou speak <06030 +<anah > in a cause <07379 +riyb > to decline <{05186} +natah > after <00310 +>achar > many <07227 +rab > to wrest <05186 +natah > [judgment] :

05186 EX0 023 006 Thou shalt not wrest <{05186} +natah > the judgment <04941 +mishpat > of thy poor <34> in his cause <07379 +riyb > .

05186 EX0 033 007 . And Moses <04872 +Mosheh > took <03947 +laqach > the tabernacle <00168 +>ohel > , and pitched <{05186} +natah > it without <02351 +chuwts > the camp <04264 +machaneh > , afar <07350 +rachowq > off from the camp <04264 +machaneh > , and called <07121 +qara> > it the Tabernacle <00168 +>ohel > of the congregation <04150 +mow<ed > . And it came <01961 +hayah > to pass , [that] every <03605 +kol > one which sought <01245 +baqash > the LORD <03068 +Y@hovah > went <03318 +yatsa> > out unto the tabernacle <00168 +>ohel > of the congregation <04150 +mow<ed > , which <00834 +>aher > [was] without <02351 +chuwts > the camp <04264 +machaneh > .

05186 NUM 020 017 Let us pass <05674 +<abar > , I pray <04994 +na> > thee , through thy country <00776 +>erets > : we will not pass <05674 +<abar > through the fields <07704 +sadeh > , or through the vineyards <03754 +kerem > , neither <03808 +lo> > will we drink <08354 +shathah > [of] the water <04325 +mayim >

of the wells <00875 +@>er > : we will go <03212 +yalak > by the
king s <04428 +melek > [high] way <01870 +derek > , we will
not turn <{05186} +natah > to the right <03225 +yamiyn > hand
<03225 +yamiyn > nor to the left <08040 +s@mo>wl > , until
<05704 +<ad > we have passed <05674 +<abar > thy borders <01366
+g@buwl > .

05186 NUM 020 021 Thus Edom <00123 +>Edom > refused <03985
+ma>en > to give <05414 +nathan > Israel <03478 +Yisra>el >
passage <05674 +<abar > through his border <01366 +g@buwl > :
wherefore Israel <03478 +Yisra>el > turned <{05186} +natah >
away from him .

05186 NUM 021 015 And at the stream <00793 +>eshed > of the
brooks <05158 +nachal > that goeth <05186 +natah > down <{05186}
+natah > to the dwelling <03427 +yashab > of Ar <06144 +<Ar > ,
and lieth <08172 +sha<an > upon the border <01366 +g@buwl > of
Moab <04124 +Mow>ab > .

05186 NUM 021 015 And at the stream <00793 +>eshed > of the
brooks <05158 +nachal > that goeth <{05186} +natah > down <05186
+natah > to the dwelling <03427 +yashab > of Ar <06144 +<Ar > ,
and lieth <08172 +sha<an > upon the border <01366 +g@buwl > of
Moab <04124 +Mow>ab > .

05186 ISA 044 013 The carpenter <02796 +charash > stretcheth
<{05186} +natah > out [his] rule <04910 +mashal > ; he marketh
<08388 +ta>ar > it out with a line <08279 +sered > ; he fitteth
<06213 +<asah > it with planes <04741 +maqtsu<ah > , and he
marketh <08388 +ta>ar > it out with the compass <04230
+m@chuwgah > , and maketh <06213 +<asah > it after the figure
<08403 +tabniyth > of a man <00376 +>iysh > , according to the
beauty <08597 +tiph>arah > of a man <00120 +>adam > ; that it
may remain <03427 +yashab > in the house <01004 +bayi th > .

~~~~~

~~~~~

| | | | |
|-------|-------|-------------|-----------|
| 05186 | natah | GEN-12: 8 | pi tched |
| 05186 | natah | GEN-26: 25 | pi tched |
| 05186 | natah | EX0-33: 7 | pi tched |
| 05186 | natah | JUD-4: 11 | pi tched |
| 05186 | natah | 2SA-6: 17 | pi tched |
| 05186 | natah | 1CH-15: 1 | pi tched |
| 05186 | natah | 1CH-16: 1 | pi tched |
| 05186 | natah | 2CH-1: 4 | pi tched |
| 05186 | natah | JOB-15: 29 | prol ong |
| 05186 | natah | PSA-27: 9 | put |
| 05186 | natah | GEN-39: 21 | shewed |
| 05186 | natah | GEN-33: 19 | spread |
| 05186 | natah | GEN-35: 21 | spread |
| 05186 | natah | NUM-24: 6 | spread |
| 05186 | natah | 2SA-16: 22 | spread |
| 05186 | natah | 2SA-21: 10 | spread |
| 05186 | natah | JER-43: 10 | spread |
| 05186 | natah | JOB-9: 8 | spreadeth |
| 05186 | natah | EX0-7: 5 | stretch |
| 05186 | natah | EX0-7: 19 | stretch |
| 05186 | natah | EX0-8: 5 | stretch |
| 05186 | natah | EX0-8: 16 | stretch |
| 05186 | natah | EX0-9: 22 | stretch |
| 05186 | natah | EX0-10: 12 | stretch |
| 05186 | natah | EX0-10: 21 | stretch |
| 05186 | natah | EX0-14: 16 | stretch |
| 05186 | natah | EX0-14: 26 | stretch |
| 05186 | natah | JOS-8: 18 | stretch |
| 05186 | natah | 2KI -21: 13 | stretch |
| 05186 | natah | ISA-31: 3 | stretch |
| 05186 | natah | ISA-34: 11 | stretch |
| 05186 | natah | ISA-54: 2 | stretch |
| 05186 | natah | JER-6: 12 | stretch |

| | | | |
|-------|-------|-------------|-----------|
| 05186 | natah | JER-10: 20 | stretch |
| 05186 | natah | JER-15: 6 | stretch |
| 05186 | natah | JER-51: 25 | stretch |
| 05186 | natah | EZE-6: 14 | stretch |
| 05186 | natah | EZE-14: 9 | stretch |
| 05186 | natah | EZE-14: 13 | stretch |
| 05186 | natah | EZE-25: 7 | stretch |
| 05186 | natah | EZE-25: 13 | stretch |
| 05186 | natah | EZE-25: 16 | stretch |
| 05186 | natah | EZE-30: 25 | stretch |
| 05186 | natah | EZE-35: 3 | stretch |
| 05186 | natah | ZEP-1: 4 | stretch |
| 05186 | natah | ZEP-2: 13 | stretch |
| 05186 | natah | EX0-6: 6 | stretched |
| 05186 | natah | EX0-8: 6 | stretched |
| 05186 | natah | EX0-8: 17 | stretched |
| 05186 | natah | EX0-9: 23 | stretched |
| 05186 | natah | EX0-10: 13 | stretched |
| 05186 | natah | EX0-10: 22 | stretched |
| 05186 | natah | EX0-14: 21 | stretched |
| 05186 | natah | EX0-14: 27 | stretched |
| 05186 | natah | DEU-4: 34 | stretched |
| 05186 | natah | DEU-5: 15 | stretched |
| 05186 | natah | DEU-7: 19 | stretched |
| 05186 | natah | DEU-9: 29 | stretched |
| 05186 | natah | DEU-11: 2 | stretched |
| 05186 | natah | JOS-8: 18 | stretched |
| 05186 | natah | JOS-8: 19 | stretched |
| 05186 | natah | JOS-8: 26 | stretched |
| 05186 | natah | 1KI -8: 42 | stretched |
| 05186 | natah | 2KI -17: 36 | stretched |
| 05186 | natah | 1CH-21: 16 | stretched |
| 05186 | natah | 2CH-6: 32 | stretched |

05186 natah JOB-38: 5 stretched
05186 natah PSA-136: 12 stretched
05186 natah PRO-1: 24 stretched
05186 natah ISA-3: 16 stretched
05186 natah ISA-5: 25 stretched
05186 natah ISA-5: 25 stretched
05186 natah ISA-9: 12 stretched
05186 natah ISA-9: 17 stretched
05186 natah ISA-9: 21 stretched
05186 natah ISA-10: 4 stretched
05186 natah ISA-14: 26 stretched
05186 natah ISA-14: 27 stretched
05186 natah ISA-23: 11 stretched
05186 natah ISA-42: 5 stretched
05186 natah ISA-45: 12 stretched
05186 natah ISA-51: 13 stretched
05186 natah JER-6: 4 stretched
05186 natah JER-10: 12 stretched
05186 natah JER-32: 17 stretched
05186 natah JER-32: 21 stretched
05186 natah JER-51: 15 stretched
05186 natah LAM-2: 8 stretched
05186 natah EZE-1: 22 stretched
05186 natah EZE-16: 27 stretched
05186 natah EZE-20: 33 stretched
05186 natah EZE-20: 34 stretched
05186 natah ZEC-1: 16 stretched
05186 natah EXO-15: 12 stretchedst
05186 natah PSA-104: 2 stretchest
05186 natah JOB-15: 25 stretcheth
05186 natah JOB-26: 7 stretcheth
05186 natah ISA-40: 22 stretcheth
05186 natah ISA-44: 13 stretcheth

05186 natah ISA-44: 24 stretcheth
05186 natah ZEC-12: 1 stretcheth
05186 natah NUM-20: 17 turn
05186 natah NUM-21: 22 turn
05186 natah NUM-22: 23 turn
05186 natah NUM-22: 26 turn
05186 natah 1SA-14: 7 turn
05186 natah 2SA-2: 21 turn
05186 natah 1KI -11: 2 turn
05186 natah JOB-24: 4 turn
05186 natah PRO-4: 27 turn
05186 natah GEN-38: 1 turned
05186 natah GEN-38: 16 turned
05186 natah NUM-20: 21 turned
05186 natah NUM-22: 33 turned
05186 natah NUM-22: 33 turned
05186 natah 2SA-2: 19 turned
05186 natah 1KI -2: 28 turned
05186 natah 1KI -2: 28 turned
05186 natah 1KI -11: 3 turned
05186 natah 1KI -11: 4 turned
05186 natah 1KI -11: 9 turned
05186 natah JOB-31: 7 turned
05186 natah ISA-44: 20 turned
05186 natah JER-5: 25 turned
05186 natah PRO-21: 1 turneth
05186 natah EXO-23: 2 wrest
05186 natah EXO-23: 6 wrest
05186 natah DEU-16: 19 wrest
05186 natah PRO-7: 21 yi el d
05186 natah PSA-73: 2 gone
05186 natah JOS-24: 23 i ncl i ne
05186 natah 1KI -8: 58 i ncl i ne

| | | | |
|-------|-------|-------------|-------------------------|
| 05186 | natah | PSA-17: 6 | i n c l i n e |
| 05186 | natah | PSA-45: 10 | i n c l i n e |
| 05186 | natah | PSA-49: 4 | i n c l i n e |
| 05186 | natah | PSA-71: 2 | i n c l i n e |
| 05186 | natah | PSA-78: 1 | i n c l i n e |
| 05186 | natah | PSA-88: 2 | i n c l i n e |
| 05186 | natah | PSA-102: 2 | i n c l i n e |
| 05186 | natah | PSA-119: 36 | i n c l i n e |
| 05186 | natah | PSA-141: 4 | i n c l i n e |
| 05186 | natah | PRO-4: 20 | i n c l i n e |
| 05186 | natah | ISA-37: 17 | i n c l i n e |
| 05186 | natah | ISA-55: 3 | i n c l i n e |
| 05186 | natah | DAN-9: 18 | i n c l i n e |
| 05186 | natah | JUD-9: 3 | i n c l i n e d |
| 05186 | natah | PSA-40: 1 | i n c l i n e d |
| 05186 | natah | PSA-116: 2 | i n c l i n e d |
| 05186 | natah | PSA-119: 11 | i n c l i n e d |
| 05186 | natah | PRO-5: 13 | i n c l i n e d |
| 05186 | natah | JER-7: 24 | i n c l i n e d |
| 05186 | natah | JER-7: 26 | i n c l i n e d |
| 05186 | natah | JER-11: 8 | i n c l i n e d |
| 05186 | natah | JER-17: 23 | i n c l i n e d |
| 05186 | natah | JER-25: 4 | i n c l i n e d |
| 05186 | natah | JER-34: 14 | i n c l i n e d |
| 05186 | natah | JER-35: 15 | i n c l i n e d |
| 05186 | natah | JER-44: 5 | i n c l i n e d |
| 05186 | natah | PSA-21: 11 | i n t e n d e d |
| 05186 | natah | HOS-11: 4 | l a i d |
| 05186 | natah | AMO-2: 8 | l a y |
| 05186 | natah | 1CH-21: 10 | o f f e r |
| 05186 | natah | DEU-26: 8 | o u t s t r e t c h e d |
| 05186 | natah | JER-21: 5 | o u t s t r e t c h e d |
| 05186 | natah | JER-27: 5 | o u t s t r e t c h e d |

| | | | |
|-------|-------|-------------|------------|
| 05186 | natah | PRO-18: 5 | overthrow |
| 05186 | natah | DEU-24: 17 | pervert |
| 05186 | natah | PRO-17: 23 | pervert |
| 05186 | natah | 1SA-8: 3 | perverted |
| 05186 | natah | DEU-27: 19 | perverteth |
| 05186 | natah | PRO-2: 2 | appl y |
| 05186 | natah | NUM-22: 23 | asi de |
| 05186 | natah | 1SA-8: 3 | asi de |
| 05186 | natah | 2SA-2: 21 | asi de |
| 05186 | natah | 2SA-3: 27 | asi de |
| 05186 | natah | 2SA-6: 10 | asi de |
| 05186 | natah | 1CH-13: 13 | asi de |
| 05186 | natah | PSA-125: 5 | asi de |
| 05186 | natah | I SA-10: 2 | asi de |
| 05186 | natah | I SA-29: 21 | asi de |
| 05186 | natah | I SA-30: 11 | asi de |
| 05186 | natah | I SA-44: 20 | asi de |
| 05186 | natah | JER-14: 8 | asi de |
| 05186 | natah | LAM-3: 35 | asi de |
| 05186 | natah | AMO-2: 7 | asi de |
| 05186 | natah | AMO-5: 12 | asi de |
| 05186 | natah | MAL-3: 5 | asi de |
| 05186 | natah | PSA-27: 9 | away |
| 05186 | natah | PSA-144: 5 | bow |
| 05186 | natah | PRO-5: 1 | bow |
| 05186 | natah | GEN-49: 15 | bowed |
| 05186 | natah | JUD-16: 30 | bowed |
| 05186 | natah | 2SA-19: 14 | bowed |
| 05186 | natah | 2SA-22: 10 | bowed |
| 05186 | natah | PSA-18: 9 | bowed |
| 05186 | natah | PSA-62: 3 | bowi ng |
| 05186 | natah | 2SA-6: 10 | carri ed |
| 05186 | natah | 1CH-13: 13 | carri ed |

05186 natah EX0-23: 2 decl ine
 05186 natah PSA-119: 15 decl ine
 05186 natah PR0-4: 5 decl ine
 05186 natah JOB-23: 11 decl ined
 05186 natah PSA-44: 18 decl ined
 05186 natah PSA-119: 51 decl ined
 05186 natah PSA-102: 11 decl ineth
 05186 natah PSA-109: 23 decl ineth
 05186 natah JOB-36: 18 del iver
 05186 natah GEN-24: 14 down
 05186 natah NUM-21: 15 down
 05186 natah 2KI -19: 16 down
 05186 natah 2KI -20: 10 down
 05186 natah PSA-17: 11 down
 05186 natah PSA-31: 2 down
 05186 natah PSA-86: 1 down
 05186 natah PR0-22: 17 down
 05186 natah ISA-66: 12 extend
 05186 natah EZR-7: 28 extended
 05186 natah EZR-9: 9 extended

~~~~~

~~~~~

05186 ISA 009 012 The Syrians <00758 +>Aram > before <06924
 +qedem > , and the Philistines <06430 +P@lishtiy > behind <00268
 +>achowr > ; and they shall devour <00398 +>akal > Israel <03478
 +Yisra>el > with open <06605 +pathach > mouth <06310 +peh > .
 For all <03605 +kol > this <02063 +zo>th > his anger <00639
 +>aph > is not turned <07725 +shuwb > away , but his hand <03027
 +yad > [is] stretched <{05186} +natah > out still <05750 +<owd
 > .

05186 NUM 022 023 And the ass <00860 +>athown > saw <07200
 +ra>ah > the angel <04397 +mal>ak > of the LORD <03068 +Y@hovah
 > standing <05324 +natsab > in the way <01870 +derek > , and his
 sword <02719 +chereb > drawn <08025 +shalaph > in his hand
 <03027 +yad > : and the ass <00860 +>athown > turned <05186
 +natah > aside <05186 +natah > out of the way <01870 +derek > ,
 and went <03212 +yalak > into the field <07704 +sadeh > : and
 Balaam <01109 +Bil<am > smote <05221 +nakah > the ass <00860
 +>athown > , to turn <{05186} +natah > her into the way <01870

+derek > .

05186 NUM 022 023 And the ass <00860 +>athown > saw <07200 +ra>ah > the angel <04397 +mal>ak > of the LORD <03068 +Y@hovah > standing <05324 +natsab > in the way <01870 +derek > , and his sword <02719 +chereb > drawn <08025 +shalaph > in his hand <03027 +yad > : and the ass <00860 +>athown > turned <05186 +natah > aside <{05186} +natah > out of the way <01870 +derek > , and went <03212 +yalak > into the field <07704 +sadeh > : and Balaam <01109 +Bi|am > smote <05221 +nakah > the ass <00860 +>athown > , to turn <05186 +natah > her into the way <01870 +derek > .

05186 NUM 022 023 And the ass <00860 +>athown > saw <07200 +ra>ah > the angel <04397 +mal>ak > of the LORD <03068 +Y@hovah > standing <05324 +natsab > in the way <01870 +derek > , and his sword <02719 +chereb > drawn <08025 +shalaph > in his hand <03027 +yad > : and the ass <00860 +>athown > turned <{05186} +natah > aside <05186 +natah > out of the way <01870 +derek > , and went <03212 +yalak > into the field <07704 +sadeh > : and Balaam <01109 +Bi|am > smote <05221 +nakah > the ass <00860 +>athown > , to turn <05186 +natah > her into the way <01870 +derek > .

05186 NUM 022 026 And the angel <04397 +mal>ak > of the LORD <03068 +Y@hovah > went <05674 +<abar > further <03254 +yacaph > , and stood <05975 +<amad > in a narrow <06862 +tsar > place <04725 +maqom > , where <00834 +>aher > [was] no <00369 +>ayin > way <01870 +derek > to turn <{05186} +natah > either to the right <03225 +yamiyn > hand <03325 +Yitshariy > or to the left <08040 +s@mo>wl > .

05186 NUM 022 033 And the ass <00860 +>athown > saw <07200 +ra>ah > me , and turned <05186 +natah > from me these <02088 +zeh > three <07969 +shalowsh > times : unless <00194 +>uwl ay > she had turned <{05186} +natah > from me , surely <03588 +kiy > now <06258 +<attah > also <01571 +gam > I had slain <02026 +harag > thee , and saved <02421 +chayah > her alive <02421 +chayah > .

05186 NUM 022 033 And the ass <00860 +>athown > saw <07200 +ra>ah > me , and turned <{05186} +natah > from me these <02088 +zeh > three <07969 +shalowsh > times : unless <00194 +>uwl ay > she had turned <05186 +natah > from me , surely <03588 +kiy > now <06258 +<attah > also <01571 +gam > I had slain <02026 +harag > thee , and saved <02421 +chayah > her alive <02421 +chayah > .

05186 NUM 024 006 As the valleys <05158 +nachal > are they spread <{05186} +natah > forth , as gardens <01593 +gannah > by the river s <05104 +nahar > side , as the trees of lign aloes <00174 +>ahaliym > which the LORD <03068 +Y@hovah > hath planted <05193 +natac > , [and] as cedar <00730 +>erez > trees beside <05921 +<al > the waters <04325 +mayim > .

05186 DEU 004 034 Or <00176 +>ow > hath God <00430 +>elohiym > assayed <05254 +nacah > to go <00935 +bow> > [and] take <03947 +laqach > him a nation <01471 +gowy > from the midst <07130 +qereb > of [another] nation <01471 +gowy > , by temptations <04531 +maccah > , by signs <00226 +>owth > , and by wonders <04159 +mowpheth > , and by war <04421 +milchamah > , and by a mighty <02389 +chazaq > hand <03027 +yad > , and by a stretched <{05186} +natah > out arm <02220 +z@rowa< > , and by great <01419 +gadawl > terrors <04172 +mowra> > , according to all <03605 +kol > that the LORD <03068 +Y@hovah > your God <00430 +>elohiym > did <06213 +<asah > for you in Egypt <04714

+Mi tsrayim > before your eyes <05869 +<ayin > ?

05186 DEU 005 015 And remember <02142 +zakar > that thou wast <01961 +hayah > a servant <05650 +<ebed > in the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > , and [that] the LORD <03068 +Y@hovah > thy God <00430 +>elohiym > brought <03318 +yatsa> > thee out thence <08033 +sham > through a mighty <02389 +chazaq > hand <03027 +yad > and by a stretched <{05186} +natah > out arm <02220 +z@rowa< > : therefore the LORD <03068 +Y@hovah > thy God <00430 +>elohiym > commanded <06680 +tsavah > thee to keep <06213 +<asah > the sabbath <07676 +shabbath > day <03117 +yowm > .

05186 DEU 007 019 The great <01419 +gadowl > temptations <04531 +maccah > which <00834 +>aher > thine eyes <05869 +<ayin > saw <07200 +ra>ah > , and the signs <00226 +>owth > , and the wonders <04159 +mowpheth > , and the mighty <02389 +chazaq > hand <03027 +yad > , and the stretched <{05186} +natah > out arm <02220 +z@rowa< > , whereby <00834 +>aher > the LORD <03068 +Y@hovah > thy God <00430 +>elohiym > brought <03318 +yatsa> > thee out : so <03651 +ken > shall the LORD <03068 +Y@hovah > thy God <00430 +>elohiym > do <06213 +<asah > unto all <03605 +kol > the people <05971 +<am > of whom thou art afraid <03372 +yare> > .

05186 DEU 009 029 Yet they [are] thy people <05971 +<am > and thine inheritance <05159 +nachalah > , which <00834 +>aher > thou broughtest <03318 +yatsa> > out by thy mighty <01419 +gadowl > power <03581 +koach > and by thy stretched <{05186} +natah > out arm <02220 +z@rowa< > .

05186 DEU 011 002 And know <03045 +yada< > ye this day <03117 +yowm > : for [I speak] not with your children <01121 +ben > which <00834 +>aher > have not known <03045 +yada< > , and which <00834 +>aher > have not seen <07200 +ra>ah > the chastisement <04148 +muwcar > of the LORD <03068 +Y@hovah > your God <00430 +>elohiym > , his greatness <01433 +godel > , his mighty <02389 +chazaq > hand <03027 +yad > , and his stretched <{05186} +natah > out arm <02220 +z@rowa< > ,

05186 DEU 016 019 Thou shalt not wrest <{05186} +natah > judgment <04941 +mishpat > ; thou shalt not respect <06437 +panah > persons <06440 +paniym > , neither <03808 +lo> > take <03947 +laqach > a gift <07810 +shachad > : for a gift <07810 +shachad > doth blind <05786 +<avar > the eyes <05869 +<ayin > of the wise <02450 +chakam > , and pervert <05557 +calaph > the words <01697 +dabar > of the righteous <06662 +tsaddiyq > .

05186 DEU 024 017 Thou shalt not pervert <{05186} +natah > the judgment <04941 +mishpat > of the stranger <01616 +ger > , [nor] of the fatherless <03490 +yathowm > ; nor <03808 +lo> > take <02254 +chabal > a widow s <00490 +>almanah > raiment <00899 +beged > to pledge <02254 +chabal > :

05186 DEU 026 008 And the LORD <03068 +Y@hovah > brought <03318 +yatsa> > us forth <03318 +yatsa> > out of Egypt <04714 +Mi tsrayim > with a mighty <02389 +chazaq > hand <03027 +yad > , and with an outstretched <{05186} +natah > arm <02220 +z@rowa< > , and with great <01419 +gadowl > terribleness <04172 +mowra> > , and with signs <00226 +>owth > , and with wonders <04159 +mowpheth > :

05186 DEU 027 019 Cursed <00779 +>arar > [be] he that perverteth <{05186} +natah > the judgment <04941 +mishpat > of the stranger <01616 +ger > , fatherless <03490 +yathowm > , and widow <00490 +>almanah > . And all <03605 +kol > the people

<05971 +<am > shall say <00559 +>amar > , Amen <00543 +>amen > .

05186 J0S 008 018 And the LORD <03068 +Y@hovah > said <00559 +>amar > unto Joshua <03091 +Y@howshuwa< > , Stretch <05186 +natah > out the spear <03591 +kiydown > that [is] in thy hand <03027 +yad > toward <00413 +>el > Ai <05857 +<Ay > ; for I will give <05414 +nathan > it into thine hand <03027 +yad > . And Joshua <03091 +Y@howshuwa< > stretched <05186 +natah > out the spear <03591 +kiydown > that [he had] in his hand <03027 +yad > toward <00413 +>el > the city <05892 +<iyr > .

05186 J0S 008 018 And the LORD <03068 +Y@hovah > said <00559 +>amar > unto Joshua <03091 +Y@howshuwa< > , Stretch <05186 +natah > out the spear <03591 +kiydown > that [is] in thy hand <03027 +yad > toward <00413 +>el > Ai <05857 +<Ay > ; for I will give <05414 +nathan > it into thine hand <03027 +yad > . And Joshua <03091 +Y@howshuwa< > stretched <05186 +natah > out the spear <03591 +kiydown > that [he had] in his hand <03027 +yad > toward <00413 +>el > the city <05892 +<iyr > .

05186 J0S 008 019 And the ambush <00693 +>arab > arose <06965 +quwm > quickly <04120 +m@herah > out of their place <04725 +maqowm > , and they ran <07323 +ruwts > as soon as he had stretched <05186 +natah > out his hand <03027 +yad > : and they entered <00935 +bow> > into the city <05892 +<iyr > , and took <03920 +lakad > it , and hasted <04116 +mahar > and set the city <05892 +<iyr > on fire <00784 +>esh > .

05186 J0S 008 026 For Joshua <03091 +Y@howshuwa< > drew <07725 +shuwb > not his hand <03027 +yad > back <07725 +shuwb > , wherewith <00834 +>aher > he stretched <05186 +natah > out the spear <03591 +kiydown > , until <05704 +<ad > he had utterly destroyed <02763 +charam > all <03605 +kol > the inhabitants <03427 +yashab > of Ai <05857 +<Ay > .

05186 J0S 024 023 Now <06258 +<attah > therefore put <05493 +cuwr > away <05493 +cuwr > , [said he] , the strange <05236 +nekar > gods <00430 +>elohiym > which <00834 +>aher > [are] among <07130 +qereb > you , and incline <05186 +natah > your heart <03824 +lebab > unto the LORD <03068 +Y@hovah > God <00430 +>elohiym > of Israel <03478 +Yi sra>el > .

05186 JUDG 004 011 Now Heber <02268 +Cheber > the Kenite <07014 +Qayin > , [which was] of the children <01121 +ben > of Hobab <02246 +Chobab > the father <02859 +chathan > in law <02859 +chathan > of Moses <04872 +Mosheh > , had severed <06504 +parad > himself from the Kenites <07017 +Qeyniy > , and pitched <05186 +natah > his tent <00168 +>ohel > unto the plain <00436 +>elown > of Zaanaim , which <00834 +>aher > [is] by Kedesh <06943 +Qedesh > .

05186 JUDG 009 003 And his mother s <00517 +>em > brethren <00251 +>ach > spake <01696 +dabar > of him in the ears <00241 +>ozen > of all <03605 +kol > the men <01167 +ba<al > of Shechem <07927 +Sh@kem > all <03605 +kol > these <00428 +>el - leh > words <01697 +dabar > : and their hearts <03820 +leb > inclined <05186 +natah > to follow Abimelech <40> ; for they said <00559 +>amar > , He [is] our brother <00251 +>ach > .

05186 JUDG 016 030 And Samson <08123 +Shimshown > said <00559 +>amar > , Let me die <04191 +muwth >with the Philistines <06430 +P@lishtiy > . And he bowed <05186 +natah > himself with [all his] might <03581 +koach > ; and the house <01004 +bayith > fell <05307 +naphal > upon the lords <05633 +ceren > , and upon all <03605 +kol > the people <05971 +<am > that [were] therein . So the dead <04191 +muwth > which <00834 +>aher > he slew

<04191 +muwth > at his death <04194 +maveth > were more <07227 +rab > than [they] which <00834 +>aher > he slew <04191 +muwth > in his life <02416 +chay > .

05186 1SA 008 003 And his sons <01121 +ben > walked <01980 +halak > not in his ways <01870 +derek > , but turned <05186 +natah > aside <05186 +natah > after <00310 +>achar > lucre <01215 +betsa< > , and took <03947 +laqach > bribes <07810 +shachad > , and perverted <{05186} +natah > judgment <04941 +mi shpat > .

05186 1SA 008 003 And his sons <01121 +ben > walked <01980 +halak > not in his ways <01870 +derek > , but turned <05186 +natah > aside <{05186} +natah > after <00310 +>achar > lucre <01215 +betsa< > , and took <03947 +laqach > bribes <07810 +shachad > , and perverted <05186 +natah > judgment <04941 +mi shpat > .

05186 1SA 008 003 And his sons <01121 +ben > walked <01980 +halak > not in his ways <01870 +derek > , but turned <{05186} +natah > aside <05186 +natah > after <00310 +>achar > lucre <01215 +betsa< > , and took <03947 +laqach > bribes <07810 +shachad > , and perverted <05186 +natah > judgment <04941 +mi shpat > .

05186 1SA 014 007 And his armourbearer <03627 +k@liy > said <00559 +>amar > unto him , Do <06213 +<asah>el > all <03605 +kol > that [is] in thine heart <03824 +lebab > : turn <{05186} +natah > thee ; behold <02005 +hen > , I [am] with thee according to thy heart <03824 +lebab > .

05186 2SA 002 019 And Asahel <06214 +<Asah>el > pursued <07291 +radaph > after <00310 +>achar > Abner <74> ; and in going <03212 +yalak > he turned <{05186} +natah > not to the right <03225 +yamiyn > hand nor to the left <08040 +s@mo>wl > from following <00310 +>achar > Abner <74> .

05186 2SA 002 021 And Abner <74> said <00559 +>amar > to him , Turn <05186 +natah > thee aside <{05186} +natah > to thy right <03225 +yamiyn > hand or <00176 +>ow > to thy left <08040 +s@mo>wl > , and lay thee hold <00270 +>achaz > on one <00259 +>echad > of the young <05288 +na<ar > men , and take <03947 +laqach > thee his armour <02488 +chaliytsah > . But Asahel <06214 +<Asah>el > would <14> not turn <05493 +cuwr > aside from following <00310 +>achar > of him .

05186 2SA 002 021 And Abner <74> said <00559 +>amar > to him , Turn <{05186} +natah > thee aside <05186 +natah > to thy right <03225 +yamiyn > hand or <00176 +>ow > to thy left <08040 +s@mo>wl > , and lay thee hold <00270 +>achaz > on one <00259 +>echad > of the young <05288 +na<ar > men , and take <03947 +laqach > thee his armour <02488 +chaliytsah > . But Asahel <06214 +<Asah>el > would <14> not turn <05493 +cuwr > aside from following <00310 +>achar > of him .

05186 2SA 003 027 And when Abner <74> was returned <07725 +shuwb > to Hebron <02275 +Chebrown > , Joab <03097 +Yow>ab > took him aside <{05186} +natah > in the gate <08179 +sha<ar > to speak <01696 +dabar > with him quietly <07987 +sh@liy > , and smote <05221 +nakah > him there <08033 +sham > under the fifth <02570 +chomesh > [rib] , that he died <04191 +muwth > , for the blood <01818 +dam > of Asahel <06214 +<Asah>el > his brother <00251 +>ach > .

05186 2SA 006 010 So David <01732 +David > would <14> not remove <05493 +cuwr > the ark <00727 +>arown > of the LORD <03068

+Y@hovah > unto him into <05921 +<al > the city <05892 +<iyr >
of David <01732 +David > : but David <01732 +David > carried
<05186 +natah > it aside <{05186} +natah > into the house <01004
+bayi th > of Obededom <05654 +<Obed >Edowm > the Gittite <01663
+Gi ttiy > .

05186 2SA 006 010 So David <01732 +David > would <14> not remove
<05493 +cuwr > the ark <00727 +>arown > of the LORD <03068
+Y@hovah > unto him into <05921 +<al > the city <05892 +<iyr >
of David <01732 +David > : but David <01732 +David > carried
<{05186} +natah > it aside <05186 +natah > into the house <01004
+bayi th > of Obededom <05654 +<Obed >Edowm > the Gittite <01663
+Gi ttiy > .

05186 2SA 006 017 And they brought <00935 +bow> > in the ark
<00727 +>arown > of the LORD <03068 +Y@hovah > , and set <03322
+yatsag > it in his place <04725 +maqowm > , in the midst <08432
+tavek > of the tabernacle <00168 +>ohel > that David had
pitched <{05186} +natah > for it : and David <01732 +David >
offered <05927 +<alah > burnt <05930 +<olah > offerings and
peace <08002 +shelem > offerings before <06440 +paniym > the
LORD <03068 +Y@hovah > .

05186 2SA 016 022 So they spread <{05186} +natah > Absalom <53>
a tent <00168 +>ohel > upon the top <01406 +gag > of the house
<01004 +bayi th > ; and Absalom <53> went <00935 +bow> > in unto
his father s <1> concubines <06370 +piylegesh > in the sight
<05869 +<ayin > of all <03605 +kol > Israel <03478 +Yisra>el > .

05186 2SA 019 014 And he bowed <{05186} +natah > the heart
<03824 +lebab > of all <03605 +kol > the men <00376 +>iysh > of
Judah <03063 +Y@huwdah > , even as [the heart of] one <00259
+>echad > man <00376 +>iysh > ; so that they sent <07971
+shalach > [this word] unto the king <04428 +melek > , Return
<07725 +shuwb > thou , and all <03605 +kol > thy servants <05650
+<ebed > .

05186 2SA 021 010 . And Rizpah <07532 +Ritspah > the daughter
<01323 +bath > of Aiah <00345 +>Ayah > took <03947 +laqach >
sackcloth <08242 +saq > , and spread <{05186} +natah > it for
her upon the rock <06697 +tsuwr > , from the beginning <08462
+t@chillah > of harvest <07105 +qatsiyr > until <05704 +<ad >
water <04325 +mayim > dropped <05413 +nathak > upon them out of
heaven <08064 +shamayim > , and suffered <05414 +nathan >
neither <03808 +lo> > the birds <05775 +<owph > of the air
<08064 +shamayim > to rest <05117 +nuwach > on <05921 +<al >
them by day <03119 +yowmam > , nor the beasts <02416 +chay > of
the field <07704 +sadeh > by night <03915 +layil > .

05186 2SA 022 010 He bowed <{05186} +natah > the heavens <08064
+shamayim > also , and came <03381 +yarad > down <03381 +yarad >
; and darkness <06205 +<araphel > [was] under <08478 +tachath
> his feet <07272 +regel > .

05186 1KI 002 028 Then tidings <08052 +sh@muw<ah > came <00935
+bow> > to Joab <03097 +Yow>ab > : for Joab <03097 +Yow>ab > had
turned <05186 +natah > after <00310 +>achar > Adonijah <00138
+>Adoniyah > , though he turned <{05186} +natah > not after
<00310 +>achar > Absalom <53> . And Joab <03097 +Yow>ab > fled
<05127 +nuwc > unto the tabernacle <00168 +>ohel > of the LORD
<03068 +Y@hovah > , and caught <02388 +chazaq > hold <02388
+chazaq > on the horns <07161 +qeren > of the altar <04196
+mi zbeach > .

05186 1KI 002 028 Then tidings <08052 +sh@muw<ah > came <00935
+bow> > to Joab <03097 +Yow>ab > : for Joab <03097 +Yow>ab > had
12/8/2021

turned <{05186} +natah > after <00310 +>achar > Adonijah <00138 +>Adoniyah > , though he turned <05186 +natah > not after <00310 +>achar > Absalom <53> . And Joab <03097 +Yow>ab > fled <05127 +nuwc > unto the tabernacle <00168 +>ohel > of the LORD <03068 +Y@hovah > , and caught <02388 +chazaq > hold <02388 +chazaq > on the horns <07161 +qeren > of the altar <04196 +mizbeach > .

05186 1KI 008 042 (For they shall hear <08085 +shama< > of thy great <01419 +gadowl > name <08034 +shem > , and of thy strong <02389 +chazaq > hand <03027 +yad > , and of thy stretched <{05186} +natah > out arm <02220 +z@rowa< > ;) when he shall come <00935 +bow> > and pray <06419 +palal > toward <00413 +>el > this <02088 +zeh > house <01004 +bayith > ;

05186 1KI 008 058 That he may incline <{05186} +natah > our hearts <03824 +lebab > unto him , to walk <03212 +yalak > in all <03605 +kol > his ways <01870 +derek > , and to keep <08104 +shamar > his commandments <04687 +mitsvah > , and his statutes <02706 +choq > , and his judgments <04941 +mishpat > , which <00834 +>aher > he commanded <06680 +tsavah > our fathers <1> .

05186 1KI 011 002 Of the nations <01471 +gowy > [concerning] which <00834 +>aher > the LORD <03068 +Y@hovah > said <00559 +>amar > unto the children <01121 +ben > of Israel <03478 +Yisra>el > , Ye shall not go <00935 +bow> > in to them , neither <03808 +lo> > shall they come <00935 +bow> > in unto you : [for] surely <00403 +>aken > they will turn <{05186} +natah > away your heart <03824 +lebab > after <00310 +>achar > their gods <00430 +>elohiyim > : Solomon <08010 +Sh@lomoh > clave <01692 +dabaq > unto these <01992 +hem > in love <00160 +>ahabah > .

05186 1KI 011 003 And he had <01961 +hayah > seven <07651 +sheba< > hundred <03967 +me>ah > wives <00802 +>ishshah > , princesses <08282 +sarah > , and three <07969 +shalowsh > hundred <03967 +me>ah > concubines <06370 +piylegesh > : and his wives <00802 +>ishshah > turned <{05186} +natah > away his heart <03820 +leb > .

05186 1KI 011 004 For it came <01961 +hayah > to pass , when <06256 +<eth > Solomon <08010 +Sh@lomoh > was old <02209 +ziqnah > , [that] his wives <00802 +>ishshah > turned <{05186} +natah > away his heart <03824 +lebab > after <00310 +>achar > other <00312 +>acher > gods <00430 +>elohiyim > : and his heart <03824 +lebab > was not perfect <08003 +shalem > with the LORD <03068 +Y@hovah > his God <00430 +>elohiyim > , as [was] the heart <03824 +lebab > of David <01732 +David > his father <1> .

05186 1KI 011 009 . And the LORD <03068 +Y@hovah > was angry <00599 +>anaph > with Solomon <08010 +Sh@lomoh > , because <03588 +kiy > his heart <03824 +lebab > was turned <{05186} +natah > from the LORD <03068 +Y@hovah > God <00430 +>elohiyim > of Israel <03478 +Yisra>el > , which had appeared <07200 +ra>ah > unto him twice <06471 +pa<am > ,

05186 2KI 017 036 But the LORD <03068 +Y@hovah > , who <00834 +>aher > brought <05927 +<alah > you up out of the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mitsrayim > with great <01419 +gadowl > power <03581 +koach > and a stretched <{05186} +natah > out arm <02220 +z@rowa< > , him shall ye fear <03372 +yare> > , and him shall ye worship <07812 +shachah > , and to him shall ye do sacrifice <02076 +zabach > .

05186 2KI 019 016 LORD <03068 +Y@hovah > , bow <05186 +natah > down <{05186} +natah > thine ear <00241 +>ozen > , and hear <08085 +shama< > : open <06491 +paqach > , LORD <03068 +Y@hovah >

> , thine eyes <05869 +<ayin > , and see <07200 +ra>ah > : and hear <08085 +shama< > the words <01697 +dabar > of Sennacherib <05576 +Cancheriyb > , which <00834 +>aher > hath sent <07971 +shalach > him to reproach <02778 +charaph . > the living <02416 +chay > God <00430 +>elohiyim > .

05186 2KI 019 016 LORD <03068 +Y@hovah > , bow <{05186} +natah > down <05186 +natah > thine ear <00241 +>ozen > , and hear <08085 +shama< > : open <06491 +paqach > , LORD <03068 +Y@hovah > , thine eyes <05869 +<ayin > , and see <07200 +ra>ah > : and hear <08085 +shama< > the words <01697 +dabar > of Sennacherib <05576 +Cancheriyb > , which <00834 +>aher > hath sent <07971 +shalach > him to reproach <02778 +charaph . > the living <02416 +chay > God <00430 +>elohiyim > .

05186 2KI 020 010 And Hezekiah <02396 +Chizqiyah > answered <00559 +>amar > , It is a light <07043 +qalal > thing for the shadow <06738 +tsel > to go <05186 +natah > down <{05186} +natah > ten <06235 +<eser > degrees <04609 +ma<alah > : nay <03808 +lo> > , but let the shadow <06738 +tsel > return <07725 +shuwb > backward <00322 +>achoranniyth > ten <06235 +<eser > degrees <04609 +ma<alah > .

05186 2KI 020 010 And Hezekiah <02396 +Chizqiyah > answered <00559 +>amar > , It is a light <07043 +qalal > thing for the shadow <06738 +tsel > to go <{05186} +natah > down <05186 +natah > ten <06235 +<eser > degrees <04609 +ma<alah > : nay <03808 +lo> > , but let the shadow <06738 +tsel > return <07725 +shuwb > backward <00322 +>achoranniyth > ten <06235 +<eser > degrees <04609 +ma<alah > .

05186 1CH 013 013 So David <01732 +David > brought <05493 +cuwr > not the ark <00727 +>arown > [home] to himself to the city <05892 +<iyr > of David <01732 +David > , but carried <05186 +natah > it aside <{05186} +natah > into <00413 +>el > the house <01004 +bayith > of Obededom <05654 +<Obed >Edowm > the Gittite <01663 +Gittiy > .

05186 1CH 013 013 So David <01732 +David > brought <05493 +cuwr > not the ark <00727 +>arown > [home] to himself to the city <05892 +<iyr > of David <01732 +David > , but carried <{05186} +natah > it aside <05186 +natah > into <00413 +>el > the house <01004 +bayith > of Obededom <05654 +<Obed >Edowm > the Gittite <01663 +Gittiy > .

05186 1CH 015 001 . And [David] made <06213 +<asah > him houses in the city <05892 +<iyr > of David <01732 +David > , and prepared <03559 +kuwn > a place <04725 +maqowm > for the ark <00727 +>arown > of God <00430 +>elohiyim > , and pitched <{05186} +natah > for it a tent <00168 +>ohel > .

05186 1CH 016 001 . So they brought <00935 +bow> > the ark <00727 +>arown > of God <00430 +>elohiyim > , and set <03322 +yatsag > it in the midst <08432 +tavek > of the tent <00168 +>ohel > that David <01732 +David > had pitched <{05186} +natah > for it : and they offered <07126 +qarab > burnt <05930 +<olah > sacrifices and peace <08002 +shel em > offerings before <06440 +paniyim > God <00430 +>elohiyim > .

05186 1CH 021 010 Go <03212 +yalak > and tell <01696 +dabar > David <01732 +David > , saying <00559 +>amar > , Thus <03541 +koh > saith <00559 +>amar > the LORD <03068 +Y@hovah > , I offer <{05186} +natah > thee three <07969 +shalowsh > [things] : choose <00977 +bachar > thee one <00259 +>echad > of them , that I may do <06213 +<asah > [it] unto thee .

05186 1CH 021 016 And David <01732 +David > lifted <05375 +nasa>
> up his eyes <05869 +<ayin > , and saw <07200 +ra>ah > the
angel <04397 +mal>ak > of the LORD <03068 +Y@hovah > stand
<05975 +<amad > between <00996 +beyn > the earth <00776 +>erets
> and the heaven <08064 +shamayim > , having a drawn <08025
+shalaph > sword <02719 +chereb > in his hand <03027 +yad >
stretched <{05186} +natah > out over <05921 +<al > Jerusalem
<03389 +Y@ruwshalaim > . Then David <01732 +David > and the
elders <02205 +zaqen > [of Israel , who were] clothed <03680
+kacah > in sackcloth <08242 +saq > , fell <05307 +naphal > upon
their faces <06440 +paniym > .

05186 2CH 001 004 But the ark <00727 +>arown > of God <00430
+>elohiym > had David <01732 +David > brought <05927 +<alah > up
from Kirjathjearim <07157 +Qiryath Y@<ariym > to [the place
which] David <01732 +David > had prepared <03559 +kuwn > for it
: for he had pitched <{05186} +natah > a tent <00168 +>ohel >
for it at Jerusalem <03389 +Y@ruwshalaim > .

05186 2CH 006 032 Moreover <01571 +gam > concerning <00413 +>el
> the stranger <05237 +nokriy > , which <00834 +>aher > is not
of thy people <05971 +<am > Israel <03478 +Yisra>el > , but is
come <00935 +bow> > from a far <07350 +rachowq > country <00776
+>erets > for thy great <01419 +gadawl > name s <08034 +shem >
sake <04616 +ma<an > , and thy mighty <02389 +chazaq > hand
<03027 +yad > , and thy stretched <{05186} +natah > out arm
<02220 +z@rowa< > ; if they come <00935 +bow> > and pray <06419
+palal > in this <02088 +zeh > house <01004 +bayith > ;

05186 EZR 007 028 And hath extended <{05186} +natah > mercy
<02617 +cheched > unto me before <06440 +paniym > the king <04428
+melek > , and his counsellors <03289 +ya<ats > , and before
<06440 +paniym > all <03605 +kol > the king s <04428 +melek >
mighty <01368 +gibbowr > princes <08269 +sar > . And I was
strengthened <02388 +chazaq > as the hand <03027 +yad > of the
LORD <03068 +Y@hovah > my God <00430 +>elohiym > [was] upon me
, and I gathered <06908 +qabats > together out of Israel <03478
+Yisra>el > chief <07218 +ro>sh > men <00582 +>enowsh > to go
<05927 +<alah > up with me .

05186 EZR 009 009 For we [were] bondmen <05650 +<ebed > ; yet
our God <00430 +>elohiym > hath not forsaken <05800 +<azab > us
in our bondage <05659 +<abduwth > , but hath extended <{05186}
+natah > mercy <02617 +cheched > unto us in the sight <06440
+paniym > of the kings <04428 +melek > of Persia <06539 +Parac >
, to give <05414 +nathan > us a reviving <04241 +michyah > , to
set <07311 +ruwm > up the house <01004 +bayith > of our God
<00430 +>elohiym > , and to repair <05975 +<amad > the
desolations <02723 +chorbah > thereof , and to give <05414
+nathan > us a wall <01447 +gader > in Judah <03063 +Y@huwdah >
and in Jerusalem <03389 +Y@ruwshalaim > .

05186 JOB 009 008 Which alone <00905 +bad > spreadeth <{05186}
+natah > out the heavens <08064 +shamayim > , and treadeth
<01869 +darak > upon the waves <01116 +bamah > of the sea <03220
+yam > .

05186 JOB 015 025 For he stretcheth <{05186} +natah > out his
hand <03027 +yad > against <00413 +>el > God <00410 +>el > , and
strengtheneth <01396 +gabar > himself against <00413 +>el > the
Almighty <07706 +Shadday > .

05186 JOB 015 029 He shall not be rich <06238 +<ashar > ,
neither <03808 +lo> > shall his substance <02428 +chayil >
continue <06965 +quwm > , neither <03808 +lo> > shall he prolong
<{05186} +natah > the perfection <04512 +minleh > thereof upon
12/8/2021

the earth <00776 +>erets > .

05186 JOB 023 011 My foot <07272 +regel > hath held <00270
+>achaz > his steps <00838 +>ashur > , his way <01870 +derek >
have I kept <08104 +shamar > , and not declined <{05186} +natah
> .

05186 JOB 024 004 They turn <{05186} +natah > the needy <34> out
of the way <01870 +derek > : the poor <06035 +<anav > of the
earth <00776 +>erets > hide <2244> themselves together <03162
+yachad > .

05186 JOB 026 007 He stretcheth <{05186} +natah > out the north
<06828 +tsaphown > over <05921 +<al > the empty <08414 +tohuw >
place <08414 +tohuw > , [and] hangeth <08518 +talach > the
earth <00776 +>erets > upon nothing <01099 +b@liyrah > .

05186 JOB 031 007 If <00518 +>im > my step <00838 +>ashur > hath
turned <{05186} +natah > out of the way <01870 +derek > , and
mine heart <03820 +leb > walked <01980 +halak > after <00310
+>achar > mine eyes <05869 +<ayin > , and if any blot <03971
+m>uwm > hath cleaved <01692 +dabaq > to mine hands <03709 +kaph
> ;

05186 JOB 036 018 Because <03588 +kiy > [there is] wrath
<02534 +chemah > , [beware] lest <06435 +pen > he take <05496
+cuwth > thee away <05496 +cuwth > with [his] stroke <05607
+cepheq > : then a great <07227 +rab > ransom <03724 +kopher >
cannot <03808 +lo> > deliver <{05186} +natah > thee .

05186 JOB 038 005 Who <04310 +miy > hath laid <07760 +suwm > the
measures <04461 +memad > thereof , if <03588 +kiy > thou knowest
<03045 +yada< > ? or <00176 +>ow > who <04310 +miy > hath
stretched <{05186} +natah > the line <06957 +qav > upon it ?

05186 PSA 017 006 I have called <07121 +qara> > upon thee , for
thou wilt hear <06030 +<anah > me , O God <00410 +>el > :
incline <{05186} +natah > thine ear <00241 +>ozen > unto me , [
and hear <08085 +shama< >] my speech <00565 +>imrah > .

05186 PSA 017 011 They have now <06258 +<attah > compassed
<05437 +cabab > us in our steps <00838 +>ashur > : they have set
<07896 +shiyth > their eyes <05869 +<ayin > bowing <05186 +natah
> down <{05186} +natah > to the earth <00776 +>erets > ;

05186 PSA 017 011 They have now <06258 +<attah > compassed
<05437 +cabab > us in our steps <00838 +>ashur > : they have set
<07896 +shiyth > their eyes <05869 +<ayin > bowing <{05186}
+natah > down <05186 +natah > to the earth <00776 +>erets > ;

05186 PSA 018 009 He bowed <{05186} +natah > the heavens <08064
+shamayim > also , and came <03381 +yarad > down <03381 +yarad >
: and darkness <06205 +<araphel > [was] under <08478 +tachath
> his feet <07272 +regel > .

05186 PSA 021 011 For they intended <{05186} +natah > evil
<07451 +ra< > against <05921 +<al > thee : they imagined <02803
+chashab > a mischievous <04209 +m@zimmah > device , [which]
they are not able <03201 +yakol > [to perform] .

05186 PSA 027 009 Hide <05641 +cathar > not thy face <06440
+paniyim > [far] from me ; put <05186 +natah > not thy servant
<05650 +<ebed > away <{05186} +natah > in anger <00639 +>aph > :
thou hast been <01961 +hayah > my help <05833 +<ezrah > ; leave
<05203 +natash > me not , neither <00408 +>al > forsake <05800
+<azab > me , O God <00430 +>elohiyim > of my salvation <03468
12/8/2021

+yesha< > .

05186 PSA 027 009 Hide <05641 +cathar > not thy face <06440 +paniyim > [far] from me ; put <{05186} +natah > not thy servant <05650 +<ebed > away <05186 +natah > in anger <00639 +>aph > : thou hast been <01961 +hayah > my help <05833 +<ezrah > ; leave <05203 +natash > me not , neither <00408 +>al > forsake <05800 +<azab > me , O God <00430 +>elohiyim > of my salvation <03468 +yesha< > .

05186 PSA 031 002 Bow <05186 +natah > down <{05186} +natah > thine ear <00241 +>ozen > to me ; deliver <05337 +natsal > me speedily <04120 +m@herah > : be thou my strong <04581 +ma<owz > rock <06697 +tsuwr > , for an house <01004 +bayith > of defence <04686 +matsuwd > to save <03467 +yasha< > me .

05186 PSA 031 002 Bow <{05186} +natah > down <05186 +natah > thine ear <00241 +>ozen > to me ; deliver <05337 +natsal > me speedily <04120 +m@herah > : be thou my strong <04581 +ma<owz > rock <06697 +tsuwr > , for an house <01004 +bayith > of defence <04686 +matsuwd > to save <03467 +yasha< > me .

05186 PSA 040 001 . To the chief Musician <05329 +natsach > , A Psalm <04210 +mizmowr > of David <01732 +David > . I waited <06960 +qavah > patiently <06960 +qavah > for the LORD <03068 +Y@hovah > ; and he inclined <{05186} +natah > unto me , and heard <08085 +shama< > my cry <07775 +shav<ah > .

05186 PSA 044 018 Our heart <03820 +leb > is not turned <05472 +cuwg > back <00268 +>achowr > , neither have our steps <00838 +>ashur > declined <{05186} +natah > from thy way <00734 +>orach > ;

05186 PSA 045 010 . Hearken <08085 +shama< > , O daughter <01323 +bath > , and consider <07200 +ra>ah > , and incline <{05186} +natah > thine ear <00241 +>ozen > ; forget <07911 +shakach > also thine own people <05971 +<am > , and thy father s <1> house <01004 +bayith > ;

05186 PSA 049 004 I will incline <{05186} +natah > mine ear <00241 +>ozen > to a parable <04912 +mashal > : I will open <06605 +pathach > my dark <02420 +chiydah > saying <02420 +chiydah > upon the harp <03658 +kinnowr > .

05186 PSA 062 003 How <05704 +<ad > long <05704 +<ad > will ye imagine <02050 +hathath > mischief <00205 +>aven > against <05921 +<al > a man <00376 +>iysh > ? ye shall be slain <07523 +ratsach > all <03605 +kol > of you : as a bowing <{05186} +natah > wall <07023 +qiyr > [shall ye be , and as] a tottering <01760 +dachah > fence <01447 +gader > .

05186 PSA 071 002 Deliver <05337 +natsal > me in thy righteousness <06666 +ts@daqah > , and cause me to escape <06403 +palat > : incline <{05186} +natah > thine ear <00241 +>ozen > unto me , and save <03467 +yasha< > me .

05186 PSA 073 002 But as for me , my feet <07373 +ratob > were almost <04592 +m@<at > gone <{05186} +natah > ; my steps <00838 +>ashur > had well <00369 +>ayin > nigh <04952 +mishrah > slipped <08210 +shaphak > .

05186 PSA 078 001 . Maschil <04905 +maskiyi > of Asaph <00623 +>Acaph > . Give ear <00238 +>azan > , O my people <05971 +<am > , [to] my law <08451 +towrah > : incline <{05186} +natah > your ears <00241 +>ozen > to the words <00561 +>emer > of my mouth <06310 +peh > .

05186 PSA 086 001 . A Prayer <08605 +t@phillah > of David <01732 +David > . Bow <05186 +natah > down <{05186} +natah > thine ear <00241 +>ozen > , O LORD <03068 +Y@hovah > , hear <06030 +<anah > me : for I [am] poor <06041 +<aniy > and needy <34> .

05186 PSA 086 001 . A Prayer <08605 +t@phillah > of David <01732 +David > . Bow <{05186} +natah > down <05186 +natah > thine ear <00241 +>ozen > , O LORD <03068 +Y@hovah > , hear <06030 +<anah > me : for I [am] poor <06041 +<aniy > and needy <34> .

05186 PSA 088 002 Let my prayer <08605 +t@phillah > come <00935 +bow> > before <06440 +paniyim > thee : incline <{05186} +natah > thine ear <00241 +>ozen > unto my cry <07440 +rinnah > ;

05186 PSA 102 002 Hide <05641 +cathar > not thy face <06440 +paniyim > from me in the day <03117 +yowm > [when] I am in trouble <06862 +tsar > ; incline <{05186} +natah > thine ear <00241 +>ozen > unto me : in the day <03117 +yowm > [when] I call <07121 +qara> > answer <06030 +<anah > me speedily <04118 +maher > .

05186 PSA 102 011 My days <03117 +yowm > [are] like a shadow <06738 +tsel > that declineth <{05186} +natah > ; and I am withered <03001 +yabesh > like grass <06212 +<eseb > .

05186 PSA 104 002 Who coverest <05844 +<atah > [thysel f] with light <00216 +>owr > as [with] a garment <08008 +salmah > : who stretchest <{05186} +natah > out the heavens <08064 +shamayim > like a curtain <03407 +y@riy<ah > :

05186 PSA 109 023 I am gone <01980 +halak > like the shadow <06738 +tsel > when it declineth <{05186} +natah > : I am tossed <05287 +na<ar > up and down as the locust <00697 +>arbeh > .

05186 PSA 116 002 Because <03588 +kiy > he hath inclined <{05186} +natah > his ear <00241 +>ozen > unto me , therefore will I call <07121 +qara> > upon [him] as long <03117 +yowm > as I live <03117 +yowm > .

05186 PSA 119 036 Incline <{05186} +natah > my heart <03820 +leb > unto thy testimonies <5715> , and not to covetousness <01215 +betsa< > .

05186 PSA 119 051 . The proud <02086 +zed > have had me greatly <03966 +m@<od > in derision <03887 +luwts > : [yet] have I not declined <{05186} +natah > from thy law <08451 +towrah > .

05186 PSA 119 112 +I have inclined <{05186} +natah > mine heart <03820 +leb > to perform <06213 +<asah > thy statutes <02706 +choq > alway <05769 +<owlam > , [even unto] the end <06118 +<eqeb > .

05186 PSA 119 157 +. Many <07227 +rab > [are] my persecutors <07291 +radaph > and mine enemies <06862 +tsar > ; [yet] do I not decline <{05186} +natah > from thy testimonies <5715> .

05186 PSA 125 005 As for such as turn <05186 +natah > aside <{05186} +natah > unto their crooked <06128 +<aqal qal > ways , the LORD <03068 +Y@hovah > shall lead <03212 +yalak > them forth with the workers <06466 +pa<al > of iniquity <00205 +>aven > : [but] peace <07965 +shalowm > [shall be] upon Israel <03478 +Yisra>el > .

05186 PSA 125 005 As for such as turn <{05186} +natah > aside <05186 +natah > unto their crooked <06128 +<aqal qal > ways , the

LORD <03068 +Y@hovah > shall lead <03212 +yalak > them forth with the workers <06466 +pa<al > of iniquity <00205 +>aven > : [but] peace <07965 +shalowm > [shall be] upon Israel <03478 +Yisra>el > .

05186 PSA 136 012 With a strong <02389 +chazaq > hand <03027 +yad > , and with a stretched <{05186} +natah > out arm <02220 +z@rowa< > : for his mercy <02617 +cheded > [endureth] for ever <05769 +<owl am > .

05186 PSA 141 004 Incline <{05186} +natah > not my heart <03820 +leb > to [any] evil <07451 +ra< > thing <01697 +dabar > , to practise <05953 +<alal > wicked <07562 +resha< > works <05949 +<aliylah > with men <00376 +>iysh > that work <05950 +<aliyliyah > iniquity <00205 +>aven > : and let me not eat <03898 +lacham > of their dainties <04516 +man<am > .

05186 PSA 144 005 Bow <{05186} +natah > thy heavens <08064 +shamayim > , O LORD <03068 +Y@hovah > , and come <03381 +yarad > down <03381 +yarad > : touch <05060 +naga< > the mountains <02022 +har > , and they shall smoke <06225 +<ashan > .

05186 PRO 001 024 Because <03282 +ya<an > I have called <07121 +qara> > , and ye refused <03985 +ma>en > ; I have stretched <{05186} +natah > out my hand <03027 +yad > , and no <00369 +>ayin > man regarded <07181 +qashab > ;

05186 PRO 002 002 So that thou incline <07181 +qashab > thine ear <00241 +>ozen > unto wisdom <02451 +chokmah > , [and] apply <{05186} +natah > thine heart <03820 +leb > to understanding <08394 +tabuwn > ;

05186 PRO 004 005 Get <07069 +qanah > wisdom <02451 +chokmah > , get <07069 +qanah > understanding <00998 +biynah > : forget <07911 +shakach > [it] not ; neither <00408 +>al > decline <{05186} +natah > from the words <00561 +>emer > of my mouth <06310 +peh > .

05186 ISA 037 017 Incline <{05186} +natah > thine ear <00241 +>ozen > , O LORD <03068 +Y@hovah > , and hear <08085 +shama< > ; open <06491 +paqach > thine eyes <05869 +<ayin > , O LORD <03068 +Y@hovah > , and see <07200 +ra>ah > : and hear <08085 +shama< > all <03605 +kol > the words <01697 +dabar > of Sennacherib <05576 +Cancheriyb > , which <00834 +>aher > hath sent <07971 +shalach > to reproach <02778 +charaph . > the living <02416 +chay > God <00430 +>elohiyim > .

05186 PRO 004 027 Turn <{05186} +natah > not to the right <03225 +yamiyn > hand <03227 +y@miyniy > nor to the left <08040 +s@mo>wl > : remove <05493 +cuwr > thy foot <07272 +regel > from evil <07451 +ra< > .

05186 PRO 005 001 . My son <01121 +ben > , attend <07181 +qashab > unto my wisdom <02451 +chokmah > , [and] bow <{05186} +natah > thine ear <00241 +>ozen > to my understanding <08394 +tabuwn > :

05186 PRO 005 013 And have not obeyed <08085 +shama< > the voice <06963 +qowl > of my teachers <03384 +yarah > , nor <03808 +lo> > inclined <{05186} +natah > mine ear <00241 +>ozen > to them that instructed <03925 +lamad > me !

05186 PRO 007 021 With her much <07230 +rob > fair <03948 +leqach > speech <03948 +leqach > she caused him to yield <{05186} +natah > , with the flattering <02506 +cheleq > of her lips <08193 +saphah > she forced <05080 +nadach > him .

05186 PRO 017 023 . A wicked <07563 +rasha< > [man] taketh <03947 +laqach > a gift <07810 +shachad > out of the bosom <02436 +cheyq > to pervert <{05186} +natah > the ways <00734 +>orach > of judgment <04941 +mi shpat > .

05186 PRO 018 005 . [It is] not good <02896 +towb > to accept <05375 +nasa> > the person <06440 +paniym > of the wicked <07563 +rasha< > , to overthrow <{05186} +natah > the righteous <06662 +tsaddiyq > in judgment <04941 +mi shpat > .

05186 PRO 021 001 . The king s <04428 +melek > heart <03820 +leb > [is] in the hand <03027 +yad > of the LORD <03068 +Y@hovah > , [as] the rivers <06388 +peleg > of water <04325 +mayim > : he turneth <{05186} +natah > it whithersoever he will <02654 +chaphets > .

05186 PRO 022 017 . Bow <05186 +natah > down <{05186} +natah > thine ear <00241 +>ozen > , and hear <08085 +shama< > the words <01697 +dabar > of the wise <02450 +chakam > , and apply <07896 +shiyth > thine heart <03820 +leb > unto my knowledge <01847 +da<ath > .

05186 PRO 022 017 . Bow <{05186} +natah > down <05186 +natah > thine ear <00241 +>ozen > , and hear <08085 +shama< > the words <01697 +dabar > of the wise <02450 +chakam > , and apply <07896 +shiyth > thine heart <03820 +leb > unto my knowledge <01847 +da<ath > .

05186 ISA 003 016 . Moreover the LORD <03068 +Y@hovah > saith <00559 +>amar > , Because the daughters <01121 +ben > of Zion <06726 +Tsiyown > are haughty <01361 +gabahh > , and walk <03212 +yalak > with stretched <{05186} +natah > forth necks <01627 +garown > and wanton <08265 +saqar > eyes <05869 +<ayin > , walking <01980 +halak > and mincing <02952 +taphaph > [as] they go <03212 +yalak > , and making a tinkling <05913 +<akac > with their feet <07272 +regel > :

05186 ISA 005 025 Therefore is the anger <00639 +>aph > of the LORD <03068 +Y@hovah > kindled <02734 +charah > against his people <05971 +<am > , and he hath stretched <05186 +natah > forth his hand <03027 +yad > against <05921 +<al > them , and hath smitten <05221 +nakah > them : and the hills <02022 +har > did tremble <07264 +ragaz > , and their carcasses <05038 +n@belah > [were] torn <05478 +cuwchah > in the midst <07130 +qereb > of the streets <02351 +chuwts > . For all <03605 +kol > this <02063 +zo>th > his anger <00639 +>aph > is not turned <07725 +shuwb > away , but his hand <03027 +yad > [is] stretched <{05186} +natah > out still <05750 +<owd > .

05186 ISA 005 025 Therefore is the anger <00639 +>aph > of the LORD <03068 +Y@hovah > kindled <02734 +charah > against his people <05971 +<am > , and he hath stretched <{05186} +natah > forth his hand <03027 +yad > against <05921 +<al > them , and hath smitten <05221 +nakah > them : and the hills <02022 +har > did tremble <07264 +ragaz > , and their carcasses <05038 +n@belah > [were] torn <05478 +cuwchah > in the midst <07130 +qereb > of the streets <02351 +chuwts > . For all <03605 +kol > this <02063 +zo>th > his anger <00639 +>aph > is not turned <07725 +shuwb > away , but his hand <03027 +yad > [is] stretched <05186 +natah > out still <05750 +<owd > .

05186 NUM 021 022 Let me pass <05674 +<abar > through thy land <00776 +>erets > : we will not turn <{05186} +natah > into the fields <07704 +sadeh > , or into the vineyards <03754 +kerem > ; we will not drink <08354 +shathah > [of] the waters <04325

+mayim > of the well <00875 +@>er > : [but] we will go <03212
 +yalak > along by the king s <04428 +melek > [high] way <01870
 +derek > , until <05704 +<ad > we be past <05674 +<abar > thy
 borders <01366 +g@buwl > .

05186 ISA 009 017 Therefore the Lord <00136 +>Adonay > shall
 have no <03808 +lo> > joy <08055 +samach > in their young <00970
 +bachuwr > men , neither <03808 +lo> > shall have mercy <07355
 +racham > on their fatherless <03490 +yathowm > and widows
 <00490 +>almanah > : for every <03605 +kol > one [is] an
 hypocrite <02611 +chaneph > and an evildoer <07489 +ra<a< > ,
 and every <03605 +kol > mouth <06310 +peh > speaketh <01696
 +dabar > folly <05039 +n@balah > . For all <03605 +kol > this
 <02063 +zo>th > his anger <00639 +>aph > is not turned <07725
 +shuwb > away , but his hand <03027 +yad > [is] stretched
 <{05186} +natah > out still <05750 +<owd > .

05186 ISA 009 021 Manasseh <04519 +M@nashsheh > , Ephraim <00669
 +>Ephrayim > ; and Ephraim <00669 +>Ephrayim > , Manasseh <04519
 +M@nashsheh > : [and] they together <03162 +yachad > [shall
 be] against <05921 +<al > Judah <03063 +Y@huwdah > . For all
 <03605 +kol > this <02063 +zo>th > his anger <00639 +>aph > is
 not turned <07725 +shuwb > away , but his hand <03027 +yad > [
 is] stretched <{05186} +natah > out still <05750 +<owd > .

05186 ISA 010 002 To turn <05186 +natah > aside <{05186} +natah
 > the needy <01800 +dal > from judgment <01779 +diyn > , and to
 take <01497 +gazal > away <01497 +gazal > the right <04941
 +mishpat > from the poor <06041 +<aniy > of my people <05971
 +<am > , that widows <00490 +>almanah > may be their prey <07998
 +shalal > , and [that] they may rob <00962 +bazaz > the
 fatherless <03490 +yathowm > !

05186 ISA 010 002 To turn <{05186} +natah > aside <05186 +natah
 > the needy <01800 +dal > from judgment <01779 +diyn > , and to
 take <01497 +gazal > away <01497 +gazal > the right <04941
 +mishpat > from the poor <06041 +<aniy > of my people <05971
 +<am > , that widows <00490 +>almanah > may be their prey <07998
 +shalal > , and [that] they may rob <00962 +bazaz > the
 fatherless <03490 +yathowm > !

05186 ISA 010 004 Without <01115 +bilty > me they shall bow
 <03766 +kara< > down <03766 +kara< > under <08478 +tachath > the
 prisoners <00616 +>acciy > , and they shall fall <05307 +naphal
 > under <08478 +tachath > the slain <02026 +harag > . For all
 <03605 +kol > this <02063 +zo>th > his anger <00639 +>aph > is
 not turned <07725 +shuwb > away , but his hand <03027 +yad > [
 is] stretched <{05186} +natah > out still <05750 +<owd > .

05186 ISA 014 026 This <02063 +zo>th > [is] the purpose <06098
 +<etsah > that is purposed <03289 +ya<ats > upon the whole
 <03605 +kol > earth <00776 +>erets > : and this <02063 +zo>th >
 [is] the hand <03027 +yad > that is stretched <{05186} +natah
 > out upon all <03605 +kol > the nations <01471 +gowy > .

05186 ISA 014 027 For the LORD <03068 +Y@hovah > of hosts <06635
 +tsaba> > hath purposed <03289 +ya<ats > , and who <04310 +miy >
 shall disannul <06565 +parar > [it] ? and his hand <03027 +yad
 > [is] stretched <{05186} +natah > out , and who <04310 +miy >
 shall turn <07725 +shuwb > it back <07725 +shuwb > ?

05186 ISA 023 011 He stretched <{05186} +natah > out his hand
 <03027 +yad > over <05921 +<al > the sea <03220 +yam > , he
 shook <07264 +ragaz > the kingdoms <04467 +mamlakah > : the LORD
 <03068 +Y@hovah > hath given a commandment <06680 +tsavah >
 against <00413 +>el > the merchant <03667 +K@na<an > [city] ,
 12/8/2021

to destroy <08045 +shamad > the strong <04581 +ma<owz > holds
<04581 +ma<owz > thereof .

05186 ISA 029 021 That make a man <00120 +>adam > an offender
<02398 +chata> > for a word <01697 +dabar > , and lay a snare
<06983 +qowsh > for him that reproveth <03198 +yakach > in the
gate <08179 +sha<ar > , and turn <05186 +natah > aside <{05186}
+natah > the just <06662 +tsaddiyq > for a thing of nought
<08414 +tohuw > .

05186 ISA 029 021 That make a man <00120 +>adam > an offender
<02398 +chata> > for a word <01697 +dabar > , and lay a snare
<06983 +qowsh > for him that reproveth <03198 +yakach > in the
gate <08179 +sha<ar > , and turn <{05186} +natah > aside <05186
+natah > the just <06662 +tsaddiyq > for a thing of nought
<08414 +tohuw > .

05186 ISA 030 011 Get you out of the way <01870 +derek > , turn
<05186 +natah > aside <{05186} +natah > out of the path <00734
+>orach > , cause the Holy <06918 +qadowsh > One of Israel
<03478 +Yisra>el > to cease <07673 +shabath > from before <06440
+paniym > us .

05186 ISA 030 011 Get you out of the way <01870 +derek > , turn
<{05186} +natah > aside <05186 +natah > out of the path <00734
+>orach > , cause the Holy <06918 +qadowsh > One of Israel
<03478 +Yisra>el > to cease <07673 +shabath > from before <06440
+paniym > us .

05186 ISA 031 003 Now the Egyptians <04714 +Mitsrayim > [are]
men <00120 +>adam > , and not God <00410 +>el > ; and their
horses <05483 +cuwc > flesh <01320 +basar > , and not spirit
<07307 +ruwach > . When the LORD <03068 +Y@hovah > shall stretch
<{05186} +natah > out his hand <03027 +yad > , both <08147
+sh@nayim > he that helpeth <05826 +<azar > shall fall <03782
+kashal > , and he that is holpen <05826 +<azar > shall fall
<05307 +naphal > down , and they all <03605 +kol > shall fail
<03615 +kalah > together <03162 +yachad > .

05186 ISA 034 011 But the cormorant <06893 +qa>ath > and the
bittern <07090 +qippowd > shall possess <03423 +yarash > it ;
the owl <03244 +yanshuwph > also and the raven <06158 +<oreb >
shall dwell <07931 +shakan > in it : and he shall stretch
<{05186} +natah > out upon it the line <06957 +qav > of
confusion <05414 +nathan > , and the stones <68> of emptiness
<00922 +bohuv > .

05186 ISA 040 022 [It is] he that sitteth <03427 +yashab >
upon the circle <02329 +chuwg > of the earth <00776 +>erets > ,
and the inhabitants <03427 +yashab > thereof [are] as
grasshoppers <02284 +chagab > ; that stretcheth <{05186} +natah
> out the heavens <08064 +shamayim > as a curtain <01852 +doq > ,
and spreadeth <04969 +mathach > them out as a tent <00168
+>ohel > to dwell <03427 +yashab > in :

05186 ISA 042 005 . Thus <03541 +koh > saith <00559 +>amar > God
<00410 +>el > the LORD <03068 +Y@hovah > , he that created
<01254 +bara> > the heavens <08064 +shamayim > , and stretched
<{05186} +natah > them out ; he that spread <07554 +raqa< >
forth the earth <00776 +>erets > , and that which cometh <06631
+tse>etsa> > out of it ; he that giveth <05414 +nathan > breath
<05397 +n@shamah > unto the people <05971 +<am > upon it , and
spirit <07307 +ruwach > to them that walk <01980 +halak >
therein :

05186 ISA 044 020 He feedeth <07462 +ra<ah > on ashes <00665
12/8/2021

+>epher > : a deceived <02048 +hathal > heart <03820 +leb > hath turned <05186 +natah > him aside <{05186} +natah > , that he cannot <03808 +lo> > deliver <05337 +natsal > his soul <05315 +nephesh > , nor <03808 +lo> > say <00559 +>amar > , [Is there] not a lie <03576 +kazab > in my right <03225 +yami yn > hand <03225 +yami yn > ?

05186 ISA 044 020 He feedeth <07462 +ra<ah > on ashes <00665 +>epher > : a deceived <02048 +hathal > heart <03820 +leb > hath turned <{05186} +natah > him aside <05186 +natah > , that he cannot <03808 +lo> > deliver <05337 +natsal > his soul <05315 +nephesh > , nor <03808 +lo> > say <00559 +>amar > , [Is there] not a lie <03576 +kazab > in my right <03225 +yami yn > hand <03225 +yami yn > ?

05186 ISA 044 024 Thus <03541 +koh > saith <00559 +>amar > the LORD <03068 +Y@hovah > , thy redeemer <01350 +ga>al > , and he that formed <03335 +yatsar > thee from the womb <00990 +beten > , I [am] the LORD <03068 +Y@hovah > that maketh <06213 +<asah > all <03605 +kol > [things] ; that stretcheth <{05186} +natah > forth the heavens <08064 +shamayim > alone <00905 +bad > ; that spreadeth <07554 +raqa< > abroad <07554 +raqa< > the earth <00776 +>erets > by myself ;

05186 ISA 045 012 I have made <06213 +<asah > the earth <00776 +>erets > , and created <01254 +bara> > man <00120 +>adam > upon it : I , [even] my hands <03027 +yad > , have stretched <{05186} +natah > out the heavens <08064 +shamayim > , and all <03605 +kol > their host <06635 +tsaba> > have I commanded <06680 +tsavah > .

05186 ISA 051 013 And forgettest <07911 +shakach > the LORD <03068 +Y@hovah > thy maker <06213 +<asah > , that hath stretched <{05186} +natah > forth the heavens <08064 +shamayim > , and laid the foundations <03245 +yacad > of the earth <00776 +>erets > ; and hast feared <06342 +pachad > continually <08548 +tamiyd > every <03605 +kol > day <03117 +yowm > because <06440 +paniym > of the fury <02534 +chemah > of the oppressor <06693 +tsuwq > , as if he were ready <03559 +kuwn > to destroy <07843 +shachath > ? and where <00346 +>ayeh > [is] the fury <02534 +chemah > of the oppressor <06693 +tsuwq > ?

05186 ISA 054 002 Enlarge <07337 +rachab > the place <04725 +maqowm > of thy tent <00168 +>ohel > , and let them stretch <{05186} +natah > forth the curtains <03407 +y@riy<ah > of thine habitations <04908 +mishkan > : spare <02820 +chasak > not , lengthen <00748 +>arak > thy cords <04340 +meythar > , and strengthen <02388 +chazaq > thy stakes <03489 +yathed > ;

05186 ISA 055 003 Incline <{05186} +natah > your ear <00241 +>ozen > , and come <03212 +yalak > unto me : hear <08085 +shama< > , and your soul <05315 +nephesh > shall live <02421 +chayah > ; and I will make <03772 +karath > an everlasting <05769 +<owlam > covenant <01285 +b@riyth > with you , [even] the sure <00539 +>aman > mercies <02617 +cheched > of David <01732 +David > .

05186 ISA 066 012 For thus <03541 +koh > saith <00559 +>amar > the LORD <03068 +Y@hovah > , Behold <02005 +hen > , I will extend <{05186} +natah > peace <07965 +shalowm > to her like a river <05104 +nahar > , and the glory <03519 +kabowd > of the Gentiles <01471 +gowy > like a flowing <07857 +shataph > stream <05158 +nachal > : then shall ye suck <03243 +yanaq > , ye shall be borne <05375 +nasa> > upon [her] sides <06654 +tsad > , and be dandled <08173 +sha<a< > upon [her] knees <01290 +berek > .

05186 JER 005 025 . Your iniquities <05771 +<avon > have turned <{05186} +natah > away these <00428 +>el - leh > [things] , and your sins <02403 +chatta>ah > have withholden <04513 +mana< > good <02896 +towb > [things] from you .

05186 JER 006 004 Prepare <06942 +qadash > ye war <04421 +milchamah > against <05921 +<al > her ; arise <06965 +quwm > , and let us go <05927 +<alah > up at noon <06672 +tsohar > . Woe <00188 +>owy > unto us ! for the day <03117 +yowm > goeth <06437 +panah > away , for the shadows <06752 +tselel > of the evening <06153 +<ereb > are stretched <{05186} +natah > out .

05186 JER 006 012 And their houses <01004 +bayith > shall be turned <05437 +cabab > unto others <00312 +>acher > , [with their] fields <07704 +sadeh > and wives <00802 +>ishshah > together <03162 +yachad > : for I will stretch <{05186} +natah > out my hand <03027 +yad > upon the inhabitants <03427 +yashab > of the land <00776 +>erets > , saith <05002 +n@>um > the LORD <03068 +Y@hovah > .

05186 JER 007 024 But they hearkened <08085 +shama< > not , nor <03808 +lo> > inclined <{05186} +natah > their ear <00241 +>ozen > , but walked <03212 +yalak > in the counsels <04156 +mow<etsah > [and] in the imagination <08307 +sh@riyruwth > of their evil <07451 +ra< > heart <03820 +leb > , and went <01961 +hayah > backward <00268 +>achowr > , and not forward <06440 +paniym > .

05186 JER 007 026 Yet they hearkened <08085 +shama< > not unto me , nor <03808 +lo> > inclined <{05186} +natah > their ear <00241 +>ozen > , but hardened <07185 +qashah > their neck <06202 +<araph > : they did worse <07489 +ra<a< > than their fathers <1> .

05186 JER 010 012 He hath made <06213 +<asah > the earth <00776 +>erets > by his power <03581 +koach > , he hath established <03559 +kuwn > the world <08398 +tebel > by his wisdom <02451 +chokmah > , and hath stretched <{05186} +natah > out the heavens <08064 +shamayim > by his discretion <08394 +tabuwn > .

05186 JER 010 020 My tabernacle <00168 +>ohel > is spoiled <07703 +shadad > , and all <03605 +kol > my cords <04340 +meythar > are broken <05423 +nathaq > : my children <01121 +ben > are gone <03318 +yatsa> > forth <03318 +yatsa> > of me , and they [are] not : [there is] none <00369 +>ayin > to stretch <{05186} +natah > forth my tent <00168 +>ohel > any more <05750 +<owd > , and to set <06965 +quwm > up my curtains <03407 +y@riy<ah > .

05186 JER 011 008 Yet they obeyed <08085 +shama< > not , nor <03808 +lo> > inclined <{05186} +natah > their ear <00241 +>ozen > , but walked <03212 +yalak > every <00376 +>iysh > one <00376 +>iysh > in the imagination <08307 +sh@riyruwth > of their evil <07451 +ra< > heart <03820 +leb > : therefore I will bring <00935 +bow> > upon them all <03605 +kol > the words <01697 +dabar > of this <02088 +zeh > covenant <01285 +b@riy<ah > , which <00834 +>aher > I commanded <06680 +tsavah > [them] to do <06213 +<asah > ; but they did <06213 +<asah > [them] not .

05186 JER 014 008 O the hope <04723 +miqveh > of Israel <03478 +Yisra>el > , the saviour <03467 +yasha< > thereof in time <06256 +<eth > of trouble <06869 +tsarah > , why <04100 +mah > shouldst thou be as a stranger <01616 +ger > in the land <00776 +>erets > , and as a wayfaring <00732 +>arach > man [that] turneth <05186 +natah > aside <{05186} +natah > to tarry <03885 +luwn > for a night ?

05186 JER 014 008 0 the hope <04723 +miqveh > of Israel <03478 +Yisra>el > , the saviour <03467 +yasha< > thereof in time <06256 +<eth > of trouble <06869 +tsarah > , why <04100 +mah > shouldst thou be as a stranger <01616 +ger > in the land <00776 +>erets > , and as a wayfaring <00732 +>arach > man [that] turneth <{05186} +natah > aside <05186 +natah > to tarry <03885 +luwn > for a night ?

05186 JER 015 006 Thou hast forsaken <05203 +natash > me , saith <05002 +n@>um > the LORD <03068 +Y@hovah > , thou art gone <03212 +yalak > backward <00268 +>achowr > : therefore will I stretch <{05186} +natah > out my hand <03027 +yad > against <05921 +<al > thee , and destroy <07843 +shachath > thee ; I am weary <03811 +la>ah > with repenting <05162 +nacham > .

05186 JER 017 023 But they obeyed <08085 +shama< > not , neither <03808 +lo> > inclined <{05186} +natah > their ear <00241 +>ozen > , but made their neck <06202 +<araph > stiff <07185 +qashah > , that they might not hear <08085 +shama< > , nor <01115 +biltiy > receive <03947 +laqach > instruction <04148 +muwcar > .

05186 JER 021 005 And I myself <00589 +>aniy > will fight <03898 +lacham > against you with an outstretched <{05186} +natah > hand <03027 +yad > and with a strong <02389 +chazaq > arm <02220 +z@rowa< > , even in anger <00639 +>aph > , and in fury <02534 +chemah > , and in great <01419 +gadawl > wrath <07110 +qetseph > .

05186 JER 025 004 And the LORD <03068 +Y@hovah > hath sent <07971 +shalach > unto you all <03605 +kol > his servants <05650 +<ebed > the prophets <05030 +nabi> > , rising <07925 +shakam > early <07925 +shakam > and sending <07971 +shalach > [them] ; but ye have not hearkened <08085 +shama< > , nor <03808 +lo> > inclined <{05186} +natah > your ear <00241 +>ozen > to hear <08085 +shama< > .

05186 JER 027 005 I have made <06213 +<asah > the earth <00776 +>erets > , the man <00120 +>adam > and the beast <00929 +b@hemah > that [are] upon the ground <00776 +>erets > , by my great <01419 +gadawl > power <03581 +koach > and by my outstretched <{05186} +natah > arm <02220 +z@rowa< > , and have given <05414 +nathan > it unto whom <00834 +>aher > it seemed <05869 +<ayin > meet <03474 +yashar > unto me .

05186 JER 032 017 Ah <00162 +>ahahh > Lord <00136 +>Adonay > GOD <03069 +Y@hovi h > ! behold <02009 +hinneh > , thou hast made <06213 +<asah > the heaven <08064 +shamayim > and the earth <00776 +>erets > by thy great <01419 +gadawl > power <03581 +koach > and stretched <{05186} +natah > out arm <02220 +z@rowa< > , [and] there is nothing too hard <06381 +pala> > for thee :

05186 JER 032 021 And hast brought <03318 +yatsa> > forth <03318 +yatsa> > thy people <05971 +<am > Israel <03478 +Yisra>el > out of the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > with signs <00226 +>owth > , and with wonders <04159 +mowpheth > , and with a strong <02389 +chazaq > hand <03027 +yad > , and with a stretched <{05186} +natah > out arm <00248 +>ezrowa< > , and with great <01419 +gadawl > terror <04172 +mowra> > ;

05186 JER 034 014 At the end <07093 +qets > of seven <07651 +sheba< > years <08141 +shaneh > let ye go <07971 +shalach > every man <00376 +>iysh > his brother <00251 +>ach > an Hebrew <05680 +<lbriy > , which <00834 +>aher > hath been <01961 +hayah > sold <04376 +makar > unto thee ; and when he hath served <05647 +<abad > thee six <08337 +shesh > years <08141 +shaneh > , thou shalt let him go <07971 +shalach > free <02670 +chophshiy

> from thee : but your fathers <1> hearkened <08085 +shama< >
not unto me , neither <03808 +lo> > inclined <{05186} +natah >
their ear <00241 +>ozen > .

05186 JER 035 015 I have sent <07971 +shalach > also unto you
all <03605 +kol > my servants <05650 +<ebed > the prophets
<05030 +nabiy> > , rising <07925 +shakam > up early <07925
+shakam > and sending <07971 +shalach > [them] , saying <00559
+>amar > , Return <07725 +shuwb > ye now <04994 +na> > every man
<00376 +>iysh > from his evil <07451 +ra< > way <01870 +derek > ,
and amend <03190 +yatab > your doings <04611 +ma<alal > , and
go <03212 +yalak > not after <00310 +>achar > other <00312
+>acher > gods <00430 +>elohiym > to serve <05647 +<abad > them ,
and ye shall dwell <03427 +yashab > in the land <00127 +>adamah
> which <00834 +>aher > I have given <05414 +nathan > to you and
to your fathers <1> : but ye have not inclined <{05186} +natah >
your ear <00241 +>ozen > , nor <03808 +lo> > hearkened <08085
+shama< > unto me .

05186 JER 043 010 And say <00559 +>amar > unto them , Thus
<03541 +koh > saith <00559 +>amar > the LORD <03068 +Y@hovah >
of hosts <06635 +tsaba> > , the God <00430 +>elohiym > of Israel
<03478 +Yisra>el > ; Behold <02005 +hen > , I will send <07971
+shalach > and take <03947 +laqach > Nebuchadrezzar <05019
+N@buwkadne>ttsar > the king <04428 +melek > of Babylon <00894
+Babel > , my servant <05650 +<ebed > , and will set <07760
+summ > his throne <03678 +kicce> > upon these <00428 +>el - leh
> stones <68> that I have hid <02934 +taman > ; and he shall
spread <{05186} +natah > his royal <08237 +shaphruwr > pavilion
<08237 +shaphruwr > over <05921 +<al > them .

05186 JER 044 005 But they hearkened <08085 +shama< > not , nor
<03808 +lo> > inclined <{05186} +natah > their ear <00241 +>ozen
> to turn <07725 +shuwb > from their wickedness <07451 +ra< > ,
to burn <06999 +qatar > no <01115 +biltiy > incense <06999
+qatar > unto other <00312 +>acher > gods <00430 +>elohiym > .

05186 JER 051 015 He hath made <06213 +<asah > the earth <00776
+>erets > by his power <03581 +koach > , he hath established
<03559 +kuwn > the world <08398 +tebel > by his wisdom <02451
+chokmah > , and hath stretched <{05186} +natah > out the heaven
<08064 +shamayim > by his understanding <08394 +tabuwn > .

05186 JER 051 025 Behold <02005 +hen > , I [am] against <00413
+>el > thee , O destroying <04889 +mashchiyth > mountain <02022
+har > , saith <05002 +n@>um > the LORD <03068 +Y@hovah > ,
which destroyest <07843 +shachath > all <03605 +kol > the earth
<00776 +>erets > : and I will stretch <{05186} +natah > out mine
hand <03027 +yad > upon thee , and roll <01556 +galal > thee
down from the rocks <05553 +cela< > , and will make <05414
+nathan > thee a burnt <08316 +s@rephah > mountain <02022 +har >
.

05186 LAM 002 008 The LORD <03068 +Y@hovah > hath purposed
<02803 +chashab > to destroy <07843 +shachath > the wall <02346
+chowmah > of the daughter <01323 +bath > of Zion <06726
+Tsiyown > : he hath stretched <{05186} +natah > out a line
<06957 +qav > , he hath not withdrawn <07725 +shuwb > his hand
<03027 +yad > from destroying <01104 +bala< > : therefore he
made the rampart <02426 +cheyl > and the wall <02346 +chowmah >
to lament <56> ; they languished <00535 +>amal > together <03162
+yachad > .

05186 LAM 003 035 To turn <05186 +natah > aside <{05186} +natah
> the right <04941 +mishpat > of a man <01397 +geber > before
<05048 +neged > the face <06440 +paniym > of the most <05945
12/8/2021

+>el yown > High <05945 +>el yown > ,

05186 LAM 003 035 To turn <{05186} +natah > aside <05186 +natah > the right <04941 +mishpat > of a man <01397 +geber > before <05048 +neged > the face <06440 +paniym > of the most <05945 +>el yown > High <05945 +>el yown > ,

05186 EZE 001 022 And the likeness <01823 +d@muwth > of the firmament <07549 +raqiya< > upon the heads <07218 +ro>sh > of the living <02416 +chay > creature <02416 +chay > [was] as the colour <05869 +<ayin > of the terrible <03372 +yare> > crystal <07140 +qerach > , stretched <{05186} +natah > forth over <05921 +<al > their heads <07218 +ro>sh > above <04605 +ma<al > .

05186 EZE 006 014 So will I stretch <{05186} +natah > out my hand <03027 +yad > upon them , and make <05414 +nathan > the land <00776 +>erets > desolate <08077 +sh@mamah > , yea , more desolate <08047 +shammah > than the wilderness <04057 +mi dbar > toward Diblath <01689 +Diblah > , in all <03605 +kol > their habitations <04186 +mowshab > : and they shall know <03045 +yada< > that I [am] the LORD <03068 +Y@hovah > .

05186 EZE 014 009 And if <03588 +kiy > the prophet <05030 +nabiy> > be deceived <06601 +pathah > when <03588 +kiy > he hath spoken <01696 +dabar > a thing <01697 +dabar > , I the LORD <03068 +Y@hovah > have deceived <06601 +pathah > that prophet <05030 +nabiy> > , and I will stretch <{05186} +natah > out my hand <03027 +yad > upon him , and will destroy <08045 +shamad > him from the midst <08432 +tavek > of my people <05971 +<am > Israel <03478 +Yisra>el > .

05186 EZE 014 013 Son <01121 +ben > of man <00120 +>adam > , when <03588 +kiy > the land <00776 +>erets > sinneth <02398 +chata> > against me by trespassing <04603 +ma<al > grievously <04604 +ma<al > , then will I stretch <{05186} +natah > out mine hand <03027 +yad > upon it , and will break <07665 +shabar > the staff <04294 +matteh > of the bread <03899 +lechem > thereof , and will send <07971 +shalach > famine <07458 +ra<ab > upon it , and will cut <03772 +karath > off man <00120 +>adam > and beast <00929 +b@hemah > from it :

05186 EZE 016 027 Behold <02009 +hinneh > , therefore I have stretched <{05186} +natah > out my hand <03027 +yad > over <05921 +<al > thee , and have diminished <01639 +gara< > thine ordinary <02706 +choq > [food] , and delivered <05414 +nathan > thee unto the will <05314 +naphash > of them that hate <08130 +sane> > thee , the daughters <01121 +ben > of the Philistines <06430 +P@lishtiy > , which are ashamed <03637 +kalam > of thy lewd <02154 +zimmah > way <01870 +derek > .

05186 EZE 020 033 . [As] I live , saith <05002 +n@>um > the Lord <00136 +>Adonay > GOD <03069 +Y@hovih > , surely with a mighty <02389 +chazaq > hand <03027 +yad > , and with a stretched <{05186} +natah > out arm <02220 +z@rowa< > , and with fury <02534 +chemah > poured <08210 +shaphak > out , will I rule <04427 +malak > over you :

05186 EZE 020 034 And I will bring <03318 +yatsa> > you out from the people <05971 +<am > , and will gather <06908 +qabats > you out of the countries <00776 +>erets > wherein <00834 +>aher > ye are scattered <06327 +puwts > , with a mighty <02389 +chazaq > hand <03027 +yad > , and with a stretched <{05186} +natah > out arm <02220 +z@rowa< > , and with fury <02534 +chemah > poured <08210 +shaphak > out .

05186 EZE 025 007 Behold <02005 +hen > , therefore <03651 +ken >

I will stretch <{05186} +natah > out mine hand <03027 +yad > upon thee , and will deliver <05414 +nathan > thee for a spoil <00957 +baz > to the heathen <01471 +gowy > ; and I will cut <03772 +karath > thee off from the people <05971 +<am > , and I will cause thee to perish <6> out of the countries <00776 +>erets > : I will destroy <08045 +shamad > thee ; and thou shalt know <03045 +yada< > that I [am] the LORD <03068 +Y@hovah > .

05186 EZE 025 013 Therefore <03651 +ken > thus <03541 +koh > saith <00559 +>amar > the Lord <00136 +>Adonay > GOD <03069 +Y@hovih > ; I will also stretch <{05186} +natah > out mine hand <03027 +yad > upon Edom <00123 +>Edom > , and will cut <03772 +karath > off man <00120 +>adam > and beast <00929 +b@hemah > from it ; and I will make <05414 +nathan > it desolate <02723 +chorbah > from Teman <08487 +Teyman > ; and they of Dedan <01719 +D@dan > shall fall <05307 +naphal > by the sword <02719 +chereb > .

05186 EZE 025 016 Therefore <03651 +ken > thus <03541 +koh > saith <00559 +>amar > the Lord <00136 +>Adonay > GOD <03069 +Y@hovih > ; Behold <02005 +hen > , I will stretch <{05186} +natah > out mine hand <03027 +yad > upon the Philistines <06430 +P@lishtiy > , and I will cut <03772 +karath > off the Cherethims <03774 +K@rethiy > , and destroy <9> the remnant <07611 +sh@>eriyth > of the sea <03220 +yam > coast <02348 +chowph > .

05186 EZE 030 025 But I will strengthen <02388 +chazaq > the arms <02220 +z@rowa< > of the king <04428 +melek > of Babylon <00894 +Babel > , and the arms <02220 +z@rowa< > of Pharaoh <06547 +Par<oh > shall fall <05307 +naphal > down ; and they shall know <03045 +yada< > that I [am] the LORD <03068 +Y@hovah > , when I shall put <05414 +nathan > my sword <02719 +chereb > into the hand <03027 +yad > of the king <04428 +melek > of Babylon <00894 +Babel > , and he shall stretch <{05186} +natah > it out upon the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > .

05186 EZE 035 003 And say <00559 +>amar > unto it , Thus <03541 +koh > saith <00559 +>amar > the Lord <00136 +>Adonay > GOD <03069 +Y@hovih > ; Behold <02005 +hen > , O mount <02022 +har > Seir <08165 +Se<iyr > , I [am] against <00413 +>el > thee , and I will stretch <{05186} +natah > out mine hand <03027 +yad > against <05921 +<al > thee , and I will make <05414 +nathan > thee most desolate <08077 +sh@mamah > .

05186 DAN 009 018 O my God <00430 +>elohiy m > , incline <{05186} +natah > thine ear <00241 +>ozen > , and hear <08085 +shama< > ; open <06491 +paqach > thine eyes <05869 +<ayin > , and behold <07200 +ra>ah > our desolations <08074 +shamem > , and the city <05892 +<iyr > which <00834 +>aher > is called <07121 +qara> > by thy name <08034 +shem > : for we do not present <05307 +naphal > our supplications <08469 +tachanuwn > before <06440 +paniy m > thee for our righteousnesses <06666 +ts@daqah > , but for thy great <07227 +rab > mercies <07356 +racham > .

05186 HOS 011 004 I drew <04900 +mashak > them with cords <02256 +chebel > of a man <00120 +>adam > , with bands <05688 +<aboth > of love <00160 +>ahabah > : and I was to them as they that take <07311 +ruwm > off <05921 +<al > the yoke <05923 + on <05921 +<al > their jaws <03895 +l@chiy > , and I laid <{05186} +natah > meat <00398 +>akal > unto them .

05186 AMO 002 007 That pant <07602 +sha>aph > after <05921 +<al > the dust <06083 +<aphar > of the earth <00776 +>erets > on the

head <07218 +ro>sh > of the poor <01800 +dal > , and turn <05186 +natah > aside <{05186} +natah > the way <01870 +derek > of the meek <06035 +<anav > : and a man <00376 +>iysh > and his father <2> will go <03212 +yalak > in unto the [same] maid <05291 +na<arah > , to profane <02490 +chalal > my holy <06944 +qodesh > name <08034 +shem > :

05186 AMO 002 007 That pant <07602 +sha>aph > after <05921 +<al > the dust <06083 +<aphar > of the earth <00776 +>erets > on the head <07218 +ro>sh > of the poor <01800 +dal > , and turn <{05186} +natah > aside <05186 +natah > the way <01870 +derek > of the meek <06035 +<anav > : and a man <00376 +>iysh > and his father <2> will go <03212 +yalak > in unto the [same] maid <05291 +na<arah > , to profane <02490 +chalal > my holy <06944 +qodesh > name <08034 +shem > :

05186 AMO 002 008 And they lay <{05186} +natah > [themselves] down upon clothes <00899 +begeg > laid to pledge <02254 +chabal > by every <03605 +kol > altar <04196 +mizbeach > , and they drink <08354 +shathah > the wine <03196 +yayin > of the condemned <06064 +<anash > [in] the house <01004 +bayith > of their god <00430 +>elohiyim > .

05186 AMO 005 012 For I know <03045 +yada< > your manifold <07227 +rab > transgressions <06588 +pesha< > and your mighty <06099 +<atsuwm > sins <02403 +chatta>ah > : they afflict <06887 +tsarar > the just <06662 +tsaddiyq > , they take <03947 +laqach > a bribe <03724 +kopher > , and they turn <05186 +natah > aside <{05186} +natah > the poor <34> in the gate <08179 +sha<ar > [from their right] .

05186 AMO 005 012 For I know <03045 +yada< > your manifold <07227 +rab > transgressions <06588 +pesha< > and your mighty <06099 +<atsuwm > sins <02403 +chatta>ah > : they afflict <06887 +tsarar > the just <06662 +tsaddiyq > , they take <03947 +laqach > a bribe <03724 +kopher > , and they turn <{05186} +natah > aside <05186 +natah > the poor <34> in the gate <08179 +sha<ar > [from their right] .

05186 ZEP 001 004 I will also stretch <{05186} +natah > out mine hand <03027 +yad > upon Judah <03063 +Y@huwdah > , and upon all <03605 +kol > the inhabitants <03427 +yashab > of Jerusalem <03389 +Y@ruwshalaim > ; and I will cut <03772 +karath > off the remnant <07605 +sh@>ar > of Baal <01168 +Ba<al > from this place <04725 +maqom > , [and] the name <08034 +shem > of the Chemarims <03649 +kamar > with the priests <03548 +kohen > ;

05186 ZEP 002 013 And he will stretch <{05186} +natah > out his hand <03027 +yad > against <05921 +<al > the north <06828 +tsaphown > , and destroy <6> Assyria <00804 +>Ashshuwr > ; and will make <07760 +suwm > Nineveh <05210 +Niyn@veh > a desolation <08077 +sh@mamah > , [and] dry <06723 +tsiyah > like a wilderness <04057 +mi dbar > .

05186 ZEC 001 016 Therefore <03651 +ken > thus <03541 +koh > saith <00559 +>amar > the LORD <03068 +Y@hovah > ; I am returned <07725 +shuwb > to Jerusalem <03389 +Y@ruwshalaim > with mercies <07356 +racham > : my house <01004 +bayith > shall be built <01129 +banah > in it , saith <05002 +n@>um > the LORD <03068 +Y@hovah > of hosts <06635 +tsaba> > , and a line <06957 +qav > shall be stretched <{05186} +natah > forth upon Jerusalem <03389 +Y@ruwshalaim > .

05186 ZEC 012 001 . The burden <04853 +massa> > of the word <01697 +dabar > of the LORD <03068 +Y@hovah > for Israel <03478 +Yisra>el > , saith <05002 +n@>um > the LORD <03068 +Y@hovah > ,

which stretcheth <{05186} +natah > forth the heavens <08064 +shamayim > , and layeth the foundation <03248 +y@cuwdah > of the earth <00776 +>erets > , and formeth <03335 +yatsar > the spirit <07307 +ruwach > of man <00120 +>adam > within <07130 +qereb > him .

05186 MAL 003 005 And I will come <07126 +qarab > near <07126 +qarab > to you to judgment <04941 +mishpat > ; and I will be a swift <04116 +mahar > witness <05707 +<ed > against the sorcerers <03784 +kashaph > , and against the adulterers <05003 +na>aph > , and against false <08267 +sheqer > swearers <07650 +shaba< > , and against those that oppress <06231 +<ashaq > the hireling <07916 +sakiyr > in [his] wages <07939 +sakar > , the widow <00490 +>almanah > , and the fatherless <03490 +yathowm > , and that turn <05186 +natah > aside <{05186} +natah > the stranger <01616 +ger > [from his right <03225 +yamiyn >] , and fear <03372 +yare> > not me , saith <00559 +>amar > the LORD <03068 +Y@hovah > of hosts <06635 +tsaba> > .

05186 MAL 003 005 And I will come <07126 +qarab > near <07126 +qarab > to you to judgment <04941 +mishpat > ; and I will be a swift <04116 +mahar > witness <05707 +<ed > against the sorcerers <03784 +kashaph > , and against the adulterers <05003 +na>aph > , and against false <08267 +sheqer > swearers <07650 +shaba< > , and against those that oppress <06231 +<ashaq > the hireling <07916 +sakiyr > in [his] wages <07939 +sakar > , the widow <00490 +>almanah > , and the fatherless <03490 +yathowm > , and that turn <{05186} +natah > aside <05186 +natah > the stranger <01616 +ger > [from his right <03225 +yamiyn >] , and fear <03372 +yare> > not me , saith <00559 +>amar > the LORD <03068 +Y@hovah > of hosts <06635 +tsaba> > .

05186 PRO 004 020 . My son <01121 +ben > , attend <07181 +qashab > to my words <01697 +dabar > ; incline <{05186} +natah > thine ear <00241 +>ozen > unto my sayings <00561 +>emer > .

05186 GEN 012 008 And he removed <06275 +<athaq > from thence <08033 +sham > unto a mountain <02022 +har > on the east <06924 +qedem > of Bethel <01008 +Beyth - >El > , and pitched <{05186} +natah > his tent <00168 +>ohel > , [having] Bethel <01008 +Beyth - >El > on the west <03220 +yam > , and Hai <05857 +<Ay > on the east <06924 +qedem > : and there <08033 +sham > he builded <01129 +banah > an altar <04196 +mizbeach > unto the LORD <03068 +Y@hovah > , and called <07121 +qara> > upon the name <08034 +shem > of the LORD <03068 +Y@hovah > .

05186 GEN 024 014 And let it come <00935 +bow> > to pass , that the damsel <05291 +na<arah > to whom <00834 +>aher > I shall say <00559 +>amar > , Let <05186 +natah > down <{05186} +natah > thy pitcher <03537 +kad > , I pray <04994 +na> > thee , that I may drink <08354 +shathah > ; and she shall say <00559 +>amar > , Drink <08354 +shathah > , and I will give thy camels <01581 +gamal > drink <08248 +shaqah > also : [let the same <01931 +huw> > be] she [that] thou hast appointed <03198 +yakach > for thy servant <05650 +<ebed > Isaac <03327 +Yitschaq > ; and thereby <02004 +hen > shall I know <03045 +yada< > that thou hast shewed <06213 +<asah > kindness <02617 +cheched > unto my master <00113 +>adown > .

05186 GEN 024 014 And let it come <00935 +bow> > to pass , that the damsel <05291 +na<arah > to whom <00834 +>aher > I shall say <00559 +>amar > , Let <{05186} +natah > down <05186 +natah > thy pitcher <03537 +kad > , I pray <04994 +na> > thee , that I may drink <08354 +shathah > ; and she shall say <00559 +>amar > , Drink <08354 +shathah > , and I will give thy camels <01581 +gamal > drink <08248 +shaqah > also : [let the same <01931

+huw> > be] she [that] thou hast appointed <03198 +yakach > for thy servant <05650 +<ebed > Isaac <03327 +Yitschaq > ; and thereby <02004 +hen > shall I know <03045 +yada< > that thou hast shewed <06213 +<asah > kindness <02617 +cheched > unto my master <00113 +>adown > .

05186 GEN 026 025 And he builded <01129 +banah > an altar <04196 +mizbeach > there <08033 +sham > , and called <07121 +qara> > upon the name <08034 +shem > of the LORD <03068 +Y@hovah > , and pitched <{05186} +natah > his tent <00168 +>ohel > there <08033 +sham > : and there <08033 +sham > Isaac s <03327 +Yitschaq > servants <05650 +<ebed > digged <03738 +karah > a well <00875 +>er > .

05186 GEN 033 019 And he bought <07069 +qanah > a parcel <02513 +chelqah > of a field <07704 +sadeh > , where <00834 +>aher > he had spread <{05186} +natah > his tent <00168 +>ohel > , at the hand <03027 +yad > of the children <01121 +ben > of Hamor <02544 +Chamowr > , Shechem s <07927 +Sh@kem > father <1> , for an hundred <03967 +me>ah > pieces of money <07192 +q@siytah > .

05186 GEN 035 021 . And Israel <03478 +Yisra>el > journeyed <05265 +naca< > , and spread <{05186} +natah > his tent <00168 +>ohel > beyond <01973 +hal@ah > the tower <04026 +migdal > of Edar <05740 +<Eder > .

05186 GEN 038 001 . And it came <01961 +hayah > to pass at that time <06256 +<eth > , that Judah <03063 +Y@huwdah > went <03381 +yarad > down <03381 +yarad > from his brethren <00251 +>ach > , and turned <{05186} +natah > in to a certain <00376 +>iysh > Adullamite <05726 +<Adullamiy > , whose name <08034 +shem > [was] Hirah <02437 +Chiyrah > .

05186 GEN 038 016 And he turned <{05186} +natah > unto her by the way <01870 +derek > , and said <00559 +>amar > , Go <03051 +yahab > to , I pray <04994 +na> > thee , let me come <00935 +bow> > in unto thee ; (for he knew <03045 +yada< > not that she [was] his daughter <03618 +kallah > in law <03618 +kallah > .) And she said <00559 +>amar > , What <04100 +mah > wilt thou give <05414 +nathan > me , that thou mayest come <00935 +bow> > in unto me ?

05186 GEN 039 021 But the LORD <03068 +Y@hovah > was with Joseph <03130 +Yowceph > , and shewed <{05186} +natah > him mercy <02617 +cheched > , and gave <05414 +nathan > him favour <02580 +chen > in the sight <05869 +<ayin > of the keeper <08269 +sar > of the prison .

05186 GEN 049 015 And he saw <07200 +ra>ah > that rest <04496 +m@nuwchah > [was] good <02896 +towb > , and the land <00776 +>erets > that [it was] pleasant <05276 +na ; and bowed <{05186} +natah > his shoulder <07926 +sh@kem > to bear <05445 +cabal > , and became <01961 +hayah > a servant <05647 +<abad > unto tribute <04522 +mac > .

05186 EX0 006 006 Wherefore <03651 +ken > say <00559 +>amar > unto the children <01121 +ben > of Israel <03478 +Yisra>el > , I [am] the LORD <03068 +Y@hovah > , and I will bring <03318 +yatsa> > you out from under <08478 +tachath > the burdens <05450 +c@balah > of the Egyptians <04714 +Mitsrayim > , and I will rid <05337 +natsal > you out of their bondage <05656 +<abodah > , and I will redeem <01350 +ga>al > you with a stretched <{05186} +natah > out arm <02220 +z@rowa< > , and with great <01419 +gadowl > judgments <08201 +shepheth > :

05186 EX0 007 005 And the Egyptians <04714 +Mitsrayim > shall

know <03045 +yada< > that I [am] the LORD <03068 +Y@hovah > ,
when I stretch <{05186} +natah > forth mine hand <03027 +yad >
upon Egypt <04714 +Mi tsrayim > , and bring <03318 +yatsa> > out
the children <01121 +ben > of Israel <03478 +Yisra>el > from
among <08432 +tavek > them .

05186 EX0 007 019 And the LORD <03068 +Y@hovah > spake <00559
+>amar > unto Moses <04872 +Mosheh > , Say <00559 +>amar > unto
Aaron <00175 +>Aharown > , Take <03947 +laqach > thy rod <04294
+matteh > , and stretch <{05186} +natah > out thine hand <03027
+yad > upon the waters <04325 +mayim > of Egypt <04714
+Mi tsrayim > , upon their streams <05104 +nahar > , upon their
rivers <02975 +y@<or > , and upon their ponds <98> , and upon
all <03605 +kol > their pools <04723 +mi qveh > of water <04325
+mayim > , that they may become <01961 +hayah > blood <01818
+dam > ; and [that] there may be blood <01818 +dam >
throughout all <03605 +kol > the land <00776 +>erets > of Egypt
<04714 +Mi tsrayim > , both <08147 +sh@nayim > in [vessels of]
wood <06086 +<ets > , and in [vessels of] stone <68> .

05186 EX0 008 005 And the LORD <03068 +Y@hovah > spake <00559
+>amar > unto Moses <04872 +Mosheh > , Say <00559 +>amar > unto
Aaron <00175 +>Aharown > , Stretch <{05186} +natah > forth thine
hand <03027 +yad > with thy rod <04294 +matteh > over <05921
+<al > the streams <05104 +nahar > , over <05921 +<al > the
rivers <02975 +y@<or > , and over <05921 +<al > the ponds <98> ,
and cause frogs <06854 +ts@phardea< > to come <05927 +<alah > up
upon the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > .

05186 EX0 008 006 And Aaron <00175 +>Aharown > stretched
<{05186} +natah > out his hand <03027 +yad > over <05921 +<al >
the waters <04325 +mayim > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > ; and
the frogs <06854 +ts@phardea< > came <05927 +<alah > up , and
covered <03680 +kacah > the land <00776 +>erets > of Egypt
<04714 +Mi tsrayim > .

05186 EX0 008 016 . And the LORD <03068 +Y@hovah > said <00559
+>amar > unto Moses <04872 +Mosheh > , Say <00559 +>amar > unto
Aaron <00175 +>Aharown > , Stretch <{05186} +natah > out thy rod
<04294 +matteh > , and smite <05221 +nakah > the dust <06083
+<aphar > of the land <00776 +>erets > , that it may become
<01961 +hayah > lice <03654 +ken > throughout all <03605 +kol >
the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > .

05186 EX0 008 017 And they did <06213 +<asah > so ; for Aaron
<00175 +>Aharown > stretched <{05186} +natah > out his hand
<03027 +yad > with his rod <04294 +matteh > , and smote <05221
+nakah > the dust <06083 +<aphar > of the earth <00776 +>erets >
, and it became <01961 +hayah > lice <03654 +ken > in man <00120
+>adam > , and in beast <00929 +b@hemah > ; all <03605 +kol >
the dust <06083 +<aphar > of the land <00776 +>erets > became
<01961 +hayah > lice <03654 +ken > throughout all <03605 +kol >
the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > .

05186 EX0 009 022 . And the LORD <03068 +Y@hovah > said <00559
+>amar > unto Moses <04872 +Mosheh > , Stretch <{05186} +natah >
forth thine hand <03027 +yad > toward heaven <08064 +shamayim > ,
that there may be hail <01259 +barad > in all <03605 +kol > the
land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > , upon man
<00120 +>adam > , and upon beast <00929 +b@hemah > , and upon
every <03605 +kol > herb <06212 +<eseb > of the field <07704
+sadeh > , throughout the land <00776 +>erets > of Egypt <04714
+Mi tsrayim > .

05186 EX0 009 023 And Moses <04872 +Mosheh > stretched <{05186}
+natah > forth his rod <04294 +matteh > toward heaven <08064

+shamayim > : and the LORD <03068 +Y@hovah > sent <05414 +nathan > thunder <06963 +qowl > and hail <01259 +barad > , and the fire <00784 +>esh > ran <01980 +halak > along upon the ground <00776 +>erets > ; and the LORD <03068 +Y@hovah > rained <04305 +matar > hail <01259 +barad > upon the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > .

05186 EX0 010 012 . And the LORD <03068 +Y@hovah > said <00559 +>amar > unto Moses <04872 +Mosheh > , Stretch <{05186} +natah > out thine hand <03027 +yad > over <05921 +<al > the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > for the locusts <00697 +>arbeh > , that they may come <05927 +<alah > up upon the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > , and eat <00398 +>akal > every <03605 +kol > herb <06212 +<eseb > of the land <00776 +>erets > , [even <00853 +>eth >] all <03605 +kol > that the hail <01259 +barad > hath left <07604 +sha>ar > .

05186 EX0 010 013 And Moses <04872 +Mosheh > stretched <{05186} +natah > forth his rod <04294 +matteh > over <05921 +<al > the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > , and the LORD <03068 +Y@hovah > brought <05090 +nahag > an east <06921 +qadiym > wind <07307 +ruwach > upon the land <00776 +>erets > all <03605 +kol > that day <03117 +yowm > , and all <03605 +kol > [that] night <03915 +layil > ; [and] when it was morning <01242 +boqer > , the east <06921 +qadiym > wind <07307 +ruwach > brought <05375 +nasa> > the locusts <00697 +>arbeh > .

05186 EX0 010 021 . And the LORD <03068 +Y@hovah > said <00559 +>amar > unto Moses <04872 +Mosheh > , Stretch <{05186} +natah > out thine hand <03027 +yad > toward heaven <08064 +shamayim > , that there may be darkness <02822 +choshek > over <05921 +<al > the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > , even darkness <02822 +choshek > [which] may be felt <04959 +mashash > .

05186 EX0 010 022 And Moses <04872 +Mosheh > stretched <{05186} +natah > forth his hand <03027 +yad > toward heaven <08064 +shamayim > ; and there was a thick <00653 +>aphelah > darkness <02822 +choshek > in all <03605 +kol > the land <00776 +>erets > of Egypt <04714 +Mi tsrayim > three <07969 +shalowsh > days <03117 +yowm > :

05186 EX0 014 016 But lift <07311 +ruwm > thou up thy rod <04294 +matteh > , and stretch <{05186} +natah > out thine hand <03027 +yad > over <05921 +<al > the sea <03220 +yam > , and divide <01234 +baqa< > it : and the children <01121 +ben > of Israel <03478 +Yisra>el > shall go <00935 +bow> > on dry <03004 +yabbashah > [ground] through <08432 +tavek > the midst <08432 +tavek > of the sea <03220 +yam > .

05186 EX0 014 021 . And Moses <04872 +Mosheh > stretched <{05186} +natah > out his hand <03027 +yad > over <05921 +<al > the sea <03220 +yam > ; and the LORD <03068 +Y@hovah > caused the sea <03220 +yam > to go <03212 +yalak > [back] by a strong <05794 +<az > east <06921 +qadiym > wind <07307 +ruwach > all <03605 +kol > that night <03915 +layil > , and made <07760 +suwm > the sea <03220 +yam > dry <02724 +charabah > [land] , and the waters <04325 +mayim > were divided <01234 +baqa< > .

05186 EX0 014 026 And the LORD <03068 +Y@hovah > said <00559 +>amar > unto Moses <04872 +Mosheh > , Stretch <{05186} +natah > out thine hand <03027 +yad > over <05921 +<al > the sea <03220 +yam > , that the waters <04325 +mayim > may come <07725 +shuwb > again <07725 +shuwb > upon the Egyptians <04714 +Mi tsrayim > , upon their chariots <07393 +rekeb > , and upon their horsemen <06571 +parash > .

05186 EX0 014 027 And Moses <04872 +Mosheh > stretched <{05186} +natah > forth his hand <03027 +yad > over <05921 +<al > the sea <03220 +yam > , and the sea <03220 +yam > returned <07725 +shuwb > to his strength <00386 +>eythan > when the morning <01242 +boqer > appeared <06437 +panah > ; and the Egyptians <04714 +Mi tseyim > fled <05127 +nuwc > against <07125 +qir>ah > it ; and the LORD <03068 +Y@hovah > overthrew <05287 +na<ar > the Egyptians <04714 +Mi tseyim > in the midst <08432 +tavek > of the sea <03220 +yam > .

05186 EX0 015 012 Thou stretchedst <{05186} +natah > out thy right <03225 +yami yn > hand <03225 +yami yn > , the earth <00776 +>erets > swallowed <01104 +bala< > them .

05186 EX0 023 002 Thou shalt not follow a multitude <07227 +rab > to [do] evil <07451 +ra< > ; neither <03808 +lo> > shalt thou speak <06030 +<anah > in a cause <07379 +riyb > to decline <05186 +natah > after <00310 +>achar > many <07227 +rab > to wrest <{05186} +natah > [judgment] :

05186 EX0 023 002 Thou shalt not follow a multitude <07227 +rab > to [do] evil <07451 +ra< > ; neither <03808 +lo> > shalt thou speak <06030 +<anah > in a cause <07379 +riyb > to decline <{05186} +natah > after <00310 +>achar > many <07227 +rab > to wrest <05186 +natah > [judgment] :

05186 EX0 023 006 Thou shalt not wrest <{05186} +natah > the judgment <04941 +mishpat > of thy poor <34> in his cause <07379 +riyb > .

05186 EX0 033 007 . And Moses <04872 +Mosheh > took <03947 +laqach > the tabernacle <00168 +>ohel > , and pitched <{05186} +natah > it without <02351 +chuwts > the camp <04264 +machaneh > , afar <07350 +rachowq > off from the camp <04264 +machaneh > , and called <07121 +qara> > it the Tabernacle <00168 +>ohel > of the congregation <04150 +mow<ed > . And it came <01961 +hayah > to pass , [that] every <03605 +kol > one which sought <01245 +baqash > the LORD <03068 +Y@hovah > went <03318 +yatsa> > out unto the tabernacle <00168 +>ohel > of the congregation <04150 +mow<ed > , which <00834 +>aher > [was] without <02351 +chuwts > the camp <04264 +machaneh > .

05186 NUM 020 017 Let us pass <05674 +<abar > , I pray <04994 +na> > thee , through thy country <00776 +>erets > : we will not pass <05674 +<abar > through the fields <07704 +sadeh > , or through the vineyards <03754 +kerem > , neither <03808 +lo> > will we drink <08354 +shathah > [of] the water <04325 +mayim > of the wells <00875 +>er > : we will go <03212 +yalak > by the king s <04428 +melek > [high] way <01870 +derek > , we will not turn <{05186} +natah > to the right <03225 +yami yn > hand <03225 +yami yn > nor to the left <08040 +s@mo>wl > , until <05704 +<ad > we have passed <05674 +<abar > thy borders <01366 +g@buwl > .

05186 NUM 020 021 Thus Edom <00123 +>Edom > refused <03985 +ma>en > to give <05414 +nathan > Israel <03478 +Yisra>el > passage <05674 +<abar > through his border <01366 +g@buwl > : wherefore Israel <03478 +Yisra>el > turned <{05186} +natah > away from him .

05186 NUM 021 015 And at the stream <00793 +>eshed > of the brooks <05158 +nachal > that goeth <05186 +natah > down <{05186} +natah > to the dwelling <03427 +yashab > of Ar <06144 +<Ar > , and lieth <08172 +sha<an > upon the border <01366 +g@buwl > of Moab <04124 +Mow>ab > .

05186 NUM 021 015 And at the stream <00793 +>eshed > of the
 brooks <05158 +nachal > that goeth <{05186} +natah > down <05186
 +natah > to the dwelling <03427 +yashab > of Ar <06144 +<Ar > ,
 and lieth <08172 +sha<an > upon the border <01366 +g@buwl > of
 Moab <04124 +Mow>ab > .

05186 ISA 044 013 The carpenter <02796 +charash > stretcheth
 <{05186} +natah > out [his] rule <04910 +mashal > ; he marketh
 <08388 +ta>ar > it out with a line <08279 +sered > ; he fitteth
 <06213 +<asah > it with planes <04741 +maqtsu<ah > , and he
 marketh <08388 +ta>ar > it out with the compass <04230
 +m@chuwgah > , and maketh <06213 +<asah > it after the figure
 <08403 +tabniyth > of a man <00376 +>iysh > , according to the
 beauty <08597 +tiph>arah > of a man <00120 +>adam > ; that it
 may remain <03427 +yashab > in the house <01004 +bayi th > .

~~~~~

~~~~~